आज़ादी का अमृत महोत्सव

मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 08 | फरवरी, 2022 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

"बच्चों के सीखने का सिलसिला जारी रखने के लिए शिक्षक समाज का दायित्व तुलनात्मक रूप से अधिक बढ़ गया है। विभाग ने स्टार पहल के अंतर्गत इन चुनौतियों के बीच सीखने-सिखाने का क्रम अनवरत बनाए रखने के लिए आगामी तीन माह की कार्य योजना तैयार की है। शिक्षकों के निष्ठापूर्वक समर्पण व अधिकारियों के कुशल सम्बलन से यह योजना अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।"

ज्ञान दीप का आलोक

शिक्षा के सरोकार महज किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होते। शिक्षा स्वयं में एक बहुत व्यापक संप्रत्यय है जिसका मूल ध्येय जीवन जीने की कला सिखाना है। सच्चा शिक्षक अपने विद्यार्थी को पाठ्यवस्तु पढ़ाकर अच्छे अंक लाने के लिए ही तैयार नहीं करता वरन् उसकी मेधा को जागृत कर उसे इस तरह संस्कारित करता है कि वह मानवीय गुणों को अर्जित करके एक सुनागरिक के रूप में अपनी भूमिका के निर्वहन के लिए प्रवृत्त होता है। यह पवित्र उद्देश्य ही शिक्षक के कर्म को गरिमा पूर्ण बनाता है।

वैश्विक महामारी के इस दौर में जब देश दुनिया सेहत के मोर्चे पर चिंतित है, बच्चों के सीखने का सिलसिला जारी रखने के लिए शिक्षक समाज का दायित्व तुलनात्मक रूप से अधिक बढ़ गया है। विभाग ने **स्टार पहल** के अंतर्गत इन चुनौतियों के बीच सीखने-सिखाने का क्रम अनवरत बनाए रखने के लिए आगामी तीन माह की कार्य योजना तैयार की है। शिक्षकों के निष्ठापूर्वक समर्पण व अधिकारियों के कुशल सम्बलन से यह योजना अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।

Rajasthan Education Department

फरवरी माह में विज्ञान दिवस मनाया जाना है। विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति स्वाभाविक रूचि जगाने तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिहाज से इंस्पायर अवार्ड योजना में दस हजार से अधिक बाल वैज्ञानिकों के चयन के साथ देशभर में **प्रदेश ने पहला स्थान** हासिल किया है, जो एक उत्साहवर्धक उपलब्धि है। बधाई उन सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, संस्थाप्रधानों एवं टीम एज्यूकेशन को जिनके शानदार प्रयासों से इंस्पायर अवार्ड में राजस्थान देश में सर्वोच्च स्थान पर रहा। यह क्रम अनवरत जारी रहे, इसके लिए सामूहिक प्रयासों की अपेक्षा है।

मार्च माह में बोर्ड कक्षाओं की परीक्षा प्रस्तावित है। सभी विद्यार्थियों को मेरा यही संदेश है कि भयमुक्त होकर आनन्दमय परिवेश में बोर्ड परीक्षा की तैयारी करें अवश्य ही सकारात्मक परीणाम मिलेंगे।

बसंत पंचमी के पर्व को मनाते हुए हमें मां शारदा के ज्ञान रूपी प्रसाद को जन-जन तक फैलाना है। यह ज्ञान दीप ही हमारे जीवन को आलोकित करेगा।

''लौकिव्यवहारज्ञै वसन्ते वसन्तोत्सव।
नीचोच्यभावना दोष विघाताय प्रकल्पिता:।।''

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 8 | माघ-फाल्गुन २०७८ | फरवरी, 2022

प्रधान सम्पादक
काना राम

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
मनीष कुमार गहलोत

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- सतत ज्ञानार्जन से ही सफलता 5
  विशेष रपट
- मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2021 6
  सत्यनारायण व्यास
- माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा RSCERT का संबलन 7
  कमलेन्द्र सिंह राणावत

आलेख

- स्वामी दयानंद सरस्वती - समाज सुधारक एवं शिक्षाविद् 8
  अर्चना वर्मा
- बसन्तोत्सव एवं सरस्वती प्राकट्य दिवस 9
  गोविन्द नारायण शर्मा
- एक वर्ष में विद्यालय का कायाकल्प 11
  कमलेश तैतरवाल
- Telecast Schedules of PM eVIDYA 12
- Supportive School Environment to Enhance Oral Communication 13
  Dr. Ram Gopal Sharma
- ऑनलाइन शिक्षण हेतु विद्यार्थियों के लिए पीएमई विद्या (PMeVIDYA) कार्यक्रम 14
  डॉ. जयश्री माथुर
- राजस्थान में 65 वर्ष बाद होगी 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी 16
  राकेश टाक
- कोविड 19 बीमारी और कोरोना वायरस का इतिहास और वर्तमान 18
  डॉ. कुलदीप पंवार
- शिक्षा निदेशक स्टेट कमिश्नर स्काउट नियुक्त 19
  मानमहेन्द्र सिंह भाटी
- बोर्ड परीक्षा की तैयारी कैसे करें 20
  जयश्री वर्मा
- शाला दर्पण : शंका एवं समाधान 31
  अखाराम चौधरी
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन 33
  प्रदीप जोशी
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल 35
  मुकेश चन्द
- भाषा शिक्षण - सिन्धी भाषा 38
  हिना सामनानी
- 'मीरा' एवं 'एकलव्य' पुरस्कार विजेताओं को शैक्षिक हवाई भ्रमण की सौगात 39
  मोहन गुप्ता 'मितवा'

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2022 21-30
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 30
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण से 45-46
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 47-48
  मंजू वर्मा
- हमारे भामाशाह 49-50

पुस्तक समीक्षा 32-37

- मैं चाहूँ तो मुस्करा सकता हूँ, 40-42
  कवि : **कुमार अजय,**
  समीक्षक : **मोहन कुमार सोनी**
- हरे रंग का मफलर 42
  कवि : **मदन गोपाल लढ़ा**
  समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department

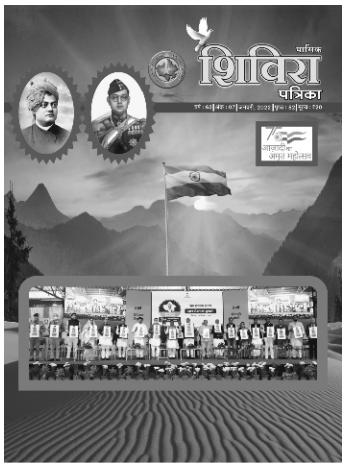

▼ चिन्तन

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्त्रम्,
पाण्डित्यसम्भृतमातिस्तु मितप्रभाषी।
कास्यं यथा हि कुरुतेतितरां निनादं,
तद्वित सुवर्णमिह नैप करोति नादम्।।

अर्थात् -जिस प्रकार कांसा जो कम मूल्य वाला है वह अत्यधिक निनाद अर्थात् आवाज करता है लेकिन सोना अधिक मूल्यवान होने के बावजूद भी ज्यादा आवाज नहीं करता। ठीक उसी प्रकार कम जानने वाला व्यक्ति ही निरंतर बोलता रहता है। लेकिन जिसकी बुद्धि पांडित्य से युक्त होती है अर्थात् जो विद्वान होता है वह कम बोलने वाला होता है अर्थात् वह बहुत ज्यादा नहीं बोलता।

पाठकों की बात

- सर्वप्रथम शिविरा संपादन मंडल की पूरी टीम को नववर्ष की हार्दिक मंगलकामनाएँ। नव वर्ष की पावन बेला में ही जनवरी माह का अंक पढ़ने को मिला। पढ़कर स्वयं को काफी ऊर्जावान महसूस किया। संपूर्ण अंक शिविरा की 'विशिष्टता' को सिद्ध कर रहा है। विशेष रपट में माननीय शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला जी के उद्बोधन 'समूचा विश्व बन गया है..एक ग्लोबल विलेज' को करणी दान कच्छावा ने बड़े ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है। इसी क्रम में लोकार्पण समारोह में 'पुस्तकों से दोस्ती करना सीखें' पर भी माननीय शिक्षा मंत्री जी के विचारों को राज कंवर आचार्य ने बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। स्वामी विवेकानंद जयंती एवं 'युवा दिवस' पर विभिन्न चिंतकों के विचार प्रेरणा स्रोत हैं, इस पंक्ति में कमलेश कटारिया, विजय सिंह माली, हीराराम चौधरी एवं 'नए युग के कर्णधार हैं युवा' स्तंभ के लिए बिग्रेडियर करण सिंह चौहान को युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए साधुवाद। डॉ. बनवारी लाल पारीक 'नवल' का लेख 'स्वाधीनता समर के नरसिंह..नेताजी सुभाष चंद्र बोस' पढ़कर अन्य पाठकों सहित मेरा मन भी तरंगित हो उठा। रविंद्र कुमार गोयल ने अपने लेख में समाज सेवा शिविर का महत्त्व बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है। 'दृष्टि दिव्यांगों की शिक्षा का आधार बनी ब्रेल लिपि' के लिए हेमंत कुमार सोनी का आभार, जिन्होंने ब्रेल लिपि के जनक 'लुई ब्रेल' को उनके जन्मदिवस पर स्मरण किया। पत्रिका के सभी स्तंभ ज्ञानवर्धक हैं। 'स्काउटिंग के महत्त्व' को अनुकम्पा अरडावतिया ने बड़े ही निराले अंदाज में चित्रित किया है। 'ज्ञान संकल्प पोर्टल' से उद्धृत किशन लाल बिश्नोई के लेख 'भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर' सभी के लिए प्रेरणादायी है। हमारे समाज में भामाशाहों की भूमिका एक मार्गदर्शक के रूप में है, यह एक गौरव का विषय है। इस अंक में 'बाल शिविरा' एवं 'चित्र वीथिका' को बड़े ही मोहक अंदाज में चित्रित किया गया है। संपूर्ण पत्रिका 'गागर में सागर' भरने के समान है। अंत में संपूर्ण संपादन मंडल का पुनः कोटि-कोटि आभार।

पवन कुमार, झुंझुनूं

- जनवरी माह के हर आलेख को मन से पढ़ा। माननीय शिक्षामंत्री जी व निदेशक महोदय के विचार बहुत सटीक और अनुकरणीय है। विवेकानन्द जी और सुभाषचन्द्र बोस पर लिखे विचार बहुत ही सुंदर थे, संबंधित लेखकों को साधुवाद। आवरण पृष्ठ भी मोहक था।

कमल कुमार जाँगिड़, नागौर

- शिविरा जनवरी, 2022 का संस्करण मिला। आवरण पृष्ठ पर स्वामी विवेकानन्द व सुभाष चन्द्र बोस 'नेताजी' के सचित्र देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। आदरणीय शिक्षामंत्री श्री बी.डी. कल्ला का अपनों से अपनी बात, दिशाकल्पः नववर्ष अभिनंदन। निदेशक महोदय श्री काना राम का स्थायी स्तंभ पढ़ा जिन्होंने समस्त शिक्षा परिवार को नववर्ष की हार्दिक बधाई दी है। परम खुशी की बात है कि हमारे शिक्षा मंत्री भी शिक्षक रहे हैं। उन्हें शिक्षा की चिंता रहती है। पाठकों की बात स्थायी स्तंभ भी इसी अंक में शुरू हो गया। यह हर्ष का विषय है। 75वाँ स्वतंत्रता दिवस आजादी महोत्सव पर स्वामी विवेकानन्द और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का आलेख बहुत अच्छा लगा। कविता गणतंत्र श्री जगदीश चन्द्र शर्मा का उत्कृष्ट श्रेणी की है साथ ही सामयिक है। पुस्तकों से दोस्ती करना सीखें हर पाठक व विद्यार्थियों के लिए श्रीमान बी.डी. कल्ला का यह कथन महान उपयोगी है। मकर संक्रांति महापर्व व युवा एवं राष्ट्र निर्माण युवा दिवस पर सामयिक व पढ़ने योग्य है। सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल स्काउटिंग प्रधानाचार्य खानपुर मेहराना को हार्दिक बधाई जिन्होंने प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर गाइड होते हुए स्काउटिंग की सहायक गतिविधियों में महत्ता बताई। नए वर्ष का नया साल सारस्वत साहब का आलेख बहुत ही प्रेरक है। शिविरा में उन्हें भी हार्दिक बधाई। गीता का ज्ञान का 47वाँ श्लोक चिन्तन में स्थान मिला। यह विशेष खुशी की बात है। इस संसार में ज्ञान के सामने पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। इस अंक की विशेषता लिए हुए है। पूरी शिविरा पढ़ने योग्य है। संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

काना राम
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"स्टार कार्यक्रम के तहत् जनवरी 2022 से मार्च 2022 तक अध्ययन-अध्यापन की निरंतरता बनाए रखने के लिए आओ घर में सीखें-2.0 तथा बैक टू स्कूल के माध्यम से विद्यार्थियों के लर्निंग गेप्स को पूरा कर शैक्षिक स्तर के उन्नयन का प्रयास किया जा रहा है।

विद्यार्थियों को विशेष रूप से मैं यह कहना चाहूँगा कि अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। अगले माह से परीक्षाओं का मौसम आरम्भ हो रहा है। परीक्षा को तनाव के रूप में ना लेते हुए समय प्रबंधन कर आत्मविश्वास के साथ पाठ्यक्रम पूर्ण करें। सभी विषयों को समान महत्त्व देवें। जो प्रकरण आपको कठिन महसूस हो रहें हैं उनका शिक्षकों से मार्गदर्शन लेकर मौखिक एवं लिखित अभ्यास करें।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सतत ज्ञानार्जन से ही सफलता

विद्या एवं ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती का अवतरण दिवस प्रतिवर्ष बसंत पंचमी को मनाया जाता है, हम सब 05 फरवरी को हर्षोल्लास के साथ त्योहार को मनाएंगे। ऋतुओं में श्रेष्ठ बसंत ऋतु का आगाज़ भी इसी दिन से होता है। गीता के 10 वें अध्याय के 35वें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है:-

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।।

अर्थात:- गायन करने योग्य श्रुतियों में मैं बृहत्साम और छंदों में गायत्री छंद हूँ तथा महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में बसंत मैं हूँ।

इस ऋतु में पेड़-पौधे, जंतुओं में नवीन उल्लास-उमंग दिखाई देती है। सभी शिक्षकवृंद प्रफुल्ल मन से विद्यार्थियों को सतत नवसृजन एवं ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित करें। शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को यह संकल्प लेना होगा कि वे एकाग्र एवं समर्पित होकर अध्ययन-अध्यापन करते-करवाते रहेंगे।

हमारे जीवन में कोरोना एक नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के रूप में पुन: आ गया है। सभी को विशेष सावधान रहकर इस चुनौती का सामना करना होगा। कोरोना के कारण विद्यालयों में शैक्षिक गतिविधियां भी प्रभावित हुई हैं।

स्टार कार्यक्रम के तहत् जनवरी 2022 से मार्च 2022 तक अध्ययन-अध्यापन की निरंतरता बनाए रखने के लिए आओ घर में सीखें-2.0 तथा बैक टू स्कूल के माध्यम से विद्यार्थियों के लर्निंग गेप्स को पूरा कर शैक्षिक स्तर के उन्नयन का प्रयास किया जा रहा है। सभी शिक्षक कोविड परिस्थितियों के मद्देनजर विद्यार्थियों को ऑफलाइन/ऑनलाइन माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्ण करवाते हुए पुनरावृति करवाएं।

विद्यार्थियों को विशेष रूप से मैं यह कहना चाहूँगा कि अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। अगले माह से परीक्षाओं का मौसम आरम्भ हो रहा है। परीक्षा को तनाव के रूप में ना लेते हुए समय प्रबंधन कर आत्मविश्वास के साथ पाठ्यक्रम पूर्ण करें। सभी विषयों को समान महत्त्व देवें। जो प्रकरण आपको कठिन महसूस हो रहें हैं उनका शिक्षकों से मार्गदर्शन लेकर मौखिक एवं लिखित अभ्यास करें। सभी शिक्षक कोविड परिस्थितियों के मद्देनजर विद्यार्थियों को ऑफलाइन/ऑनलाइन माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्ण करवाते हुए पुनरावृति करवाएं।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती से महात्मा गाँधी भी प्रभावित थे। इनके स्वराज संदेश को बाल गंगाधर तिलक ने आत्मसात् किया। स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस 12 फरवरी पर हम सभी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर वर्तमान समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन शिक्षा के माध्यम से करने का संकल्प लेना होगा।

शुभकामनाओं के साथ...!

आपका अपना
(काना राम)

Rajasthan Education Department

शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय सम्मान

मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2021

❒ सत्यनारायण व्यास

रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात बीकानेर में शिक्षा से संबंधित सभी निदेशालय स्थापित किए गए थे, जिसमें सबसे बड़ा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग है, जिसमें राजकीय प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक सहित कुल 66 हजार विद्यालय है। इनमें लगभग 92.00 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत है। जिसमें अध्यापन करवाने के लिए 04 से 05 लाख अध्यापक कार्यरत हैं।

वर्ष 1997 में निदेशालय का पृथ्क्करण प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में किया गया था। जिसके अंतर्गत माध्यमिक शिक्षा को राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार सम्मान समारोह, राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह के आयोजन का दायित्त्व दिया गया।

इस क्रम में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा सदैव दोनों पुरस्कार सम्मान समारोह अनवरत करवाए जा रहे हैं। राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के पुरस्कार सम्मान समारोह का शुभांरभ करने का श्रेय तात्कालिक शिक्षा निदेशक श्री ललित के. पंवार साहब को जाता है। सर्वप्रथम यह सम्मान समारोह 30 मार्च 1990 को हुआ। समय के साथ-साथ सम्मान समारोह की तिथियों में भी परिवर्तन होता रहा है। पिछले कुछ वर्षों से इस राज्य स्तरीय सम्मान समारोह को निदेशालय के स्थापना दिवस 16 दिसम्बर को आयोजित किया जाता है।

समूचे प्रदेश में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग में कार्यालयी कार्यों को करने के लिए कुल 22706 कार्मिक हैं जिसमें 15138 कनिष्ठ सहायक, 5612 वरिष्ठ सहायक, 1847 सहायक प्रशासनिक अधिकारी, 74 अति. प्रशासनिक अधिकारी, 26 प्रशासनिक अधिकारी एवं 9 संस्थापन अधिकारी एवं लगभग 25861 सहायक कर्मचारी कार्यरत हैं।

इनमें से मात्र 40 कार्मिकों का चयन एक जटिल प्रक्रिया द्वारा संपादित किया जाता है, जिसके दौरान कार्मिक की 15 वर्ष की सेवा का होना अनिवार्य होता है, उनके वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन, कार्मिक की कार्य संपादन में भूमिका एवं सामाजिक व्यवहार, खेलकूद, पर्यावरण, साहित्य, जिला, राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर सम्मान, योग एवं अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में भागीदारी का आंकलन करते हुए मेरिट के आधार पर चयन किया जाता है। वर्ष 2021 का राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह इस वर्ष 16 दिसम्बर की जगह 02 जनवरी 2022 को आयोजित किया गया।

02 जनवरी 2022 को राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के सभागार में सायं 4:00 बजे मुख्य अतिथि डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय मंत्री, प्राथमिक एवं माध्यमिक तथा संस्कृत शिक्षा, कला ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। तत्पश्चात् बिन्नाणी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं तथा संगीत अध्यापकों द्वारा सरस्वती वंदना एवं राष्ट्रीय गान का गायन किया गया। इस दौरान श्री कानाराम निदेशक प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, श्रीमती रचना भाटिया अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा, श्री अशोक सांगवा अतिरिक्त निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, श्री बी.एल. सर्वा वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा भी मंचस्थ थे।

सम्मान समारोह दो चरणों मे आयोजित किया गया। प्रथम चरण में निदेशालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सम्मानित होने वाले कार्मिकों को साफा, शॉल, श्रीफल एवं तिलक लगाकर सम्मान किया गया। दूसरे चरण में मंचस्थ अतिथियों द्वारा सम्मानित होने वाले प्रत्येक कार्मिक को राशि रुपये 11,000/- का चेक, प्रतीक चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया।

श्री सत्य नारायण व्यास, वरिष्ठ सहायक एवं प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजस्थान शिक्षा विभागीय एवं संयुक्त कर्मचारी संघ द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत कर आगन्तुकों एवं सभी सम्मानित होने वाले कार्मिकों का हार्दिक अभिनन्दन करने के साथ ही समारोह का परिचय दिया गया। सम्मानित होने वाले कार्मिकों का प्रशस्ति वाचन एवं मंच संचालन श्रीमती प्रीति जालोपिया सहायक निदेशक एवं श्री मदन मोदी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी ने किया।

माननीय निदेशक श्री काना राम ने अपने उद्बोधन मे कहा कि कार्यालय के विभिन्न कार्यों को करने में मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस दौरान उन्होंने निदेशालय के कर्मचारियों को समय का पाबन्द बताते हुए सराहना की साथ ही सम्मानित होने वाले सभी 40 कर्मचारियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

माननीय मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने भी मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों को 'विभाग का मेरूदण्ड' से संबोधित करते हुए विभिन्न सरकारी योजनाओं की क्रियान्विति में दोनों वर्गों का महत्त्वपूर्ण योगदान बताया। मंत्री महोदय ने सम्मानित होने वाले 40 कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि सभी कार्मिकों को कर्म को पूजा मानते हुए ईमानदारी से अपना कार्य करना चाहिए, क्योंकि कठिन परिश्रम व ईमानदारी से किए गए कार्य ही इंसान को आगे बढ़ने में मद्द करते हैं। साथ ही यह चेतावनी भी दी कि विभाग में किसी तरह के भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और इस तरह के कृत्य में लिप्त कार्मिक/अधिकारी के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी।

कार्यक्रम के अंत में श्रीमती रचना भाटिया, अति. निदेशक ने सम्मानित कर्मचारियों का अभिनन्दन करते हुए सभी मंचस्थ अतिथि, सम्मानित कार्मिकों के परिवार जन, निदेशालय परिवार एवं मीडिया का धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मान समारोह के उपरान्त निदेशालय परिसर में सहभोज का आयोजन श्री अजय कुमार आचार्य, भण्डार पाल की देख-रेख में किया गया।

वरिष्ठ सहायक
बजट अनुभाग, मा.शि.राज., बीकानेर
मो: 9413481336

Rajasthan Education Department

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा RSCERT का संबलन

❒ कमलेन्द्र सिंह राणावत

डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय शिक्षा शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा 23 नवम्बर, 2021 को राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर को सम्बलन प्रदान किया। इस कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा विशेष प्रकोष्ठ के भूमि पूजन एवं नवगठित असेसमेंट सेल के उद्घाटन के अलावा परिषद् के परिसर में वृक्षारोपण एवं शिक्षाविदों के साथ संवाद भी किया।

उक्त कार्यक्रमों का संक्षिप्त प्रतिवेदन निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत विवेचित किया गया है:-

विशेष प्रकोष्ठ का भूमि पूजन- माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने सर्व प्रथम प्रोजेक्ट एप्रूवल बोर्ड (PAB) द्वारा स्वीकृत राशि से विशेष प्रकोष्ठ का भूमि पूजन किया। इस प्रकोष्ठ के अंतर्गत अग्रांकित पाँच सन्दर्भ कक्षों का निर्माण करवाया जा रहा है:-

1. गणित कक्ष
2. भाषा/अंग्रेजी शिक्षा कक्ष
3. शैक्षिक तकनीकी/कम्प्यूटर कक्ष
4. सामाजिक विज्ञान कक्ष
5. विज्ञान कक्ष

उक्त सन्दर्भ कक्षों के निर्माण हेतु कुल 50 लाख रुपये की राशि स्वीकृत हुई, जिनमें से 30 लाख रुपये निर्माण लागत में तथा 20 लाख रुपये उपकरण क्रय हेतु खर्च किए जाएंगे। ये सन्दर्भ कक्ष एक स्थायी प्रदर्शनी स्थल के रूप में स्थापित होंगे जहाँ सम्बंधित विषय की विषय सामग्री, शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा सन्दर्भ पुस्तकें इत्यादि रखी जाएगी ताकि राज्य भर के शिक्षक इन सन्दर्भ कक्षों का अवलोकन कर अपनी शिक्षण व्यूह रचना को परिमार्जित कर सकेंगे।

शिक्षाविदों से संवाद-विशेष प्रकोष्ठ के भूमि पूजन के पश्चात् माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा परिषद के शैक्षिक अधिकारियों एवं परिषद में चल रही विभिन्न कार्यशालाओं के संभागियों से ऑडीटोरियम में संवाद किया गया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि पाठ्यक्रम ऐसा हो जिससे विद्यार्थी स्वावलंबी, आत्मनिर्भर एवं संस्कारी बन सके। साथ ही उन्होंने विद्यालय विकास एवं प्रबंधन

समितियों के सुदृढ़ीकरण की बात भी कही ताकि सरकारी विद्यालय प्रतिस्पर्धी बन सकें। उन्होंने आनंदायी शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएं आनंददायी हो जिससे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि बनी रहे और विद्यालय में उनका ठहराव सुनिश्चित हो सके। मंत्री महोदय ने व्यावसायिक शिक्षा को आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए यह विचार रखा कि शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जिसमें विद्यार्थी स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के बाद स्वरोजगार विकसित कर सके।

वृक्षारोपण-शिक्षाविदों को संबोधन के तुरंत बाद माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा परिषद के प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत मंत्री महोदय ने 'अशोक' वृक्ष के पौधे का रोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने पर्यावरण-संरक्षण सम्बन्धी संदर्भों एवं विषय सामग्री को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने का सुझाव भी दिया।

असेसमेंट सेल का उद्घाटन- वृक्षारोपण कार्यक्रम के बाद माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर द्वारा नवगठित 'असेसमेंट सेल' का उद्घाटन किया। सुश्री प्रियंका जोधावत निदेशक आर.एस.सी.ई.आर.टी. ने माननीय मंत्री महोदय को असेसमेंट सेल के उद्देश्यों एवं अब तक सम्पादित कार्यों की प्रगति की जानकारी देते हुए असेसमेंट सेल के गठन को राज्य में आकलन की प्रक्रियाओं में सुधार की दिशा में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम बताया। यह सेल नियमित आधार पर विद्यार्थियों के प्रदर्शन का आकलन एवं विश्लेषण कर सीखने के प्रतिफलों में सुधार हेतु आगे की योजनाओं का निर्माण करेगा। इसमें विद्यार्थियों का हॉलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड बनाया जाएगा जिसमें पुस्तकीय ज्ञान के अलावा विद्यार्थियों का हेल्थ, इमोशनल, फिजिकल और सोशल असेसमेंट भी किया जाएगा। विद्यार्थियों में कौशलों का विकास किया जाएगा ताकि वे इसी हुनर के आधार पर आगे बढ़कर उसमें कॅरियर बना सके। इसके लिए सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखते हुए उपकरण निर्मित किए जा रहे हैं। साथ ही क्षमता संवर्धन हेतु विद्यालय आधारित असेसमेंट होंगे। जिला स्तर से विद्यालय स्तर तक इसमें कार्य किया जाएगा। शिक्षक तय करेंगे कि कक्षाओं में विद्यार्थियों को कैसे तैयार किया जाए।

अकादमिक प्रदर्शनी का अवलोकन-असेसमेंट सेल के भीतर ही परिषद् के अकादमिक कार्यों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी जिसका अवलोकन करते हुए माननीय मंत्री महोदय ने परिषद के द्वारा शोध, शिक्षक-प्रशिक्षण, विषय सामग्री तथा उपकरण निर्माण के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचारों के विषय को जाना। इस दौरान माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने निदेशक महोदया को कक्षा-12 तक के विद्यार्थियों के लिए वर्क बुक्स निर्मित करने हेतु सुझाव भी दिया।

मीडिया कर्मियों के साथ संवाद- माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने असेसमेंट सेल के उद्घाटन एवं अकादमिक प्रदर्शनी के अवलोकन के पश्चात वहीं पर उपस्थित मीडिया कर्मियों के साथ संवाद करते हुए विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न मुद्दों यथा-समानीकरण, विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात, स्थानांतरण नीति इत्यादि पर अपने विचार रखे। उन्होंने शिक्षकों की कमी की बात को नकारते हुए उनके बेहतर प्रबंधन पर जोर दिया ताकि वे निजी विद्यालयों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें।

प्रभागाध्यक्ष
आयोजना, वित्त एवं प्रबंधन प्रभाग-6
आर.एस.सी.ई.आर.टी., उदयपुर (राज.)

Rajasthan Education Department

जयंती विशेष

स्वामी दयानंद सरस्वती : महान समाज सुधारक एवं शिक्षाविद्

❒ अर्चना वर्मा

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक और एक सांस्कृतिक राष्ट्रवादी भी थे। दयानन्द सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान आर्य समाज के जन्मदाता के रूप में हैं। जिसने शिक्षा, धर्म और समाज सुधार के क्षेत्र में नई क्रांति ला दी। शिक्षा के क्षेत्र में स्वामीजी उन महत्त्वपूर्ण समाज सुधारकों और विचारकों में से एक हैं जिनके प्रमुख व्यक्तित्व ने आर्य समाज आंदोलन की क्षमता और उनके अनुयायियों में असाधारण प्रतिबिम्ब पाया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सराहनीय है। डॉ. एस. राधाकृष्ण के अनुसार 'आधुनिक भारत के मंदिरों में, जिन्होंने लोगों के आध्यात्मिक उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और देशभक्ति की आग को जलाया है। मुझे लगता है उनमें स्वामी दयानन्द ने प्रमुख स्थान पर कब्जा कर लिया है।'

जीवन दर्शन– स्वामीजी का जन्म 12 फरवरी, 1824 में काठियावाड़ (गुजरात) के टंकारा में करसन जी तिवारी के परिवार में बालक मूलचन्द का जन्म हुआ। बाद में वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका लालन-पालन अपने पिता की प्यार भरी देखभाल में हुआ, स्वामीजी ने बचपन में ही वेद, संस्कृति, व्याकरण और संस्कृत भाषा में दक्षता हासिल कर ली थी। 1861 में वे मथुरा में स्वामी बृहजानन्द के संपर्क में आए। गुरुजी के निर्देश से वेद का संदेश फैलाने और जिन लोगों का रूढ़िवादी तथा गलत परम्पराओं से लगाव बहुत ज्यादा था, जिससे वे वेदों की सर्वोच्चता और आत्मा के संचरण को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे, ऐसे लोगों के लिए व अपने जीवन के मिशन को पूरा करने के लिए एवं विषम परिस्थितियों से देश एवं संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए 10 अप्रैल 1875 के दिन मुंबई शहर में आर्य समाज की स्थापना की, विभिन्न स्थानों पर आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित करने में अपना शेष जीवन व्यतीत किया। स्वामी दयानन्द के सुधारवादी उत्साह ने रूढ़िवादी लोगों को परेशान किया। 30 अक्टूबर, 1883 को इस महापुरुष का देहावसान हुआ।

शिक्षा व समाज सुधार के लिए प्रमुख योगदान–

1. शैक्षिक दर्शन में इनके तीन प्रसिद्ध योगदानों में सत्यार्थ प्रकाश,वेद भाष्य भूमिका इसके अलावा इनके द्वारा संपादित पत्रिका आर्य भी इनके विचारों को दर्शाती है।
2. दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश के 2 अध्यायों (2 और 3) को शिशुओं और किशोरों के लिए शिक्षा के विषय के लिए समर्पित किया।
3. महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द के अनुसार 'जब सब वर्णों में विद्या, सुशिक्षा होती है, तब कोई भी पाखंड रूप अधर्म युक्त मिथ्या व्यवहार को नहीं चला सकता।'
4. दयानन्द जी ने भारत की भाषा में अपनी रचनाओं को लिखने के लिए चुना, जिसे उन्होंने आर्य भाषा कहा। ताकि उनका संदेश लोगों तक स्पष्ट रूप से पहुँच सके, 'भाषा' उनके लिए ज्ञान और स्वस्थ धार्मिक सिद्धांतों के संचार का माध्यम है। स्वामीजी ने मातृभाषा (सामाजिक या सामूहिक शिक्षा का सही माध्यम) पर बहुत जोर दिया। उसी समय संस्कृत भाषा की भी वकालत की।
5. शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान सराहनीय है।
6. आर्य समाज के महान संस्थापक आधुनिक भारत के राजनीतिक विचारकों के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं।
7. स्वामीजी अपने उदारवाद और राष्ट्रवाद के विचारों को ग्रामीण भारत के दिल तक ले जाने में बहुत सफल रहे। एक कुशल चिकित्सक की तरह उन्होंने उन विकृतियों (सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वास व रूढ़ियाँ) का सही ढंग से निदान किया, जिनसे भारत पीड़ित था। जिसके फलस्वरूप भारत मजबूत, सशक्त एवं आत्मविश्वासी बन सका।
8. सामाजिक सुधार में वे मूर्ति पूजा, जाति व्यवस्था, कर्मकांड, भाग्यवाद, अनैतिकता, दहेज प्रथा, बाल विवाह एवं सती प्रथा के खिलाफ थे तथा वे महिलाओं के अभिवर्धन व अन्य हानिकारक रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं की निन्दा करते हुए दबे कुचले वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा के प्रसार के प्रबल पक्षधर थे।
9. आर्य समाजियों ने भी शिक्षा विस्तार और निरक्षरता के उन्मूलन पर जोर दिया। उन्होंने उपदेश दिया कि महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार होना चाहिए।

निष्कर्ष– वास्तव में स्वामीजी के प्रयासों ने लोगों को पश्चिमी शिक्षा के चंगुल से मुक्त किया। साथ ही भारत के लोकतंत्र और राष्ट्रीय जाग्रति के विकास में भी योगदान दिया। ऐसा कहा जाता है कि राजनीतिक स्वतंत्रता दयानन्द जी के पहले उद्देश्यों में से एक थी। ये हिन्दी को भारत में राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता के पक्षधर थे। दयानन्द जी ने अछूत के साथ भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने कहा कि छूआछूत हमारे समाज का एक अभिशाप है। प्रत्येक जीवित व्यक्ति में एक आत्मा होती है जो स्नेह की पात्र होती है। स्वामी दयानन्द पूरी तरह आश्वस्त थे कि जब तक शिक्षा का प्रसार नहीं होगा, तब तक राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता। भारत में एक नई राष्ट्रीय चेतना के विकास में ब्रह्म समाज के तर्क संगत आंदोलन का अविस्मरणीय योगदान है।

व्याख्याता (अंग्रेजी)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक एस.बी.के.
विद्यालय भरतपुर, (राज.)
मो: 8003441330

Rajasthan Education Department

बसंत पंचमी विशेष

बसन्तोत्सव एवं सरस्वती प्राकट्य दिवस

❐ गोविन्द नारायण शर्मा

प्राचीन भारत में पूरे वर्ष को जिन छह ऋतुओं में बांटा गया था, उनमें बसन्त ऋतु लोगों का मनभावन मौसम है। बसन्त ऋतु का आगमन चैत्र एवं वैशाख महीने में होता है। जब फूलों पर बहार आ जाती, खेतों में सरसों के फूल मानो स्वर्णिम आभा से चमकने लगते हैं, जौ (यव) और गेहूँ की बालियां खिलने लगती है, आम के पेड़ों पर मंजरी (कोंपल) आ जाती है और वनस्पतियों, गुल्म, झाड़ियों पर रंग-बिरंगे फूल कलियों के रूप में विकसित होकर प्रकृति को नयनाभिराम श्रृंगार युक्त परिधान ओढ़ा देती है। चहुँओर नव किसलयों पर रंग-बिरंगी रस लोलुप तितलियां व मदमस्त भ्रमर फूलों का मकरन्द पीने को कोमल कलियों पर मण्डराते हुए गुंजार करने लगे, जो प्रकृति नवौढ़ा के समान परिलक्षित होकर सभी प्राणियों के मनों को आह्लादित कर देती हो तो मानो बसन्तागमन हो गया।

बसन्त ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी, स्थावर, जंगल सभी उल्लास एवं मादकता से सराबोर हो जाते हैं एवं हर दिन सूर्योदय नयी उमंग एवं चेतना के साथ प्राची में उदय होता है। वैसे तो माघ का पूरा महीना ही उमंग एवं उत्साह देने वाला है।

मार्गशीर्ष (माघ) मास की शुक्ल पंचमी का पर्व भारतीय जन मानस को अनेक प्रकार से प्रभावित करता है। आज ही के दिन सृष्टि के सबसे बड़े वैज्ञानिक ब्रह्मा ने प्राणी मात्र के कल्याण के लिए बुद्धि, ज्ञान, विवेक की देवी माँ सरस्वती का प्राकट्य हुआ था।

प्राचीन समय से ही आज के दिन ज्ञान एवं कला की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती का जन्म दिवस मनाया जाता है। जो शिक्षाविद्, वेदों एवं भारतीयता से स्नेह करते हैं, वे इस दिन माँ शारदे की पूजा अर्चना कर अधिकाधिक ज्ञानार्जन करने की प्रार्थना एवं स्तुति करते हैं, जो

महत्त्व सैनिकों के लिए विजयादशमी का है, जो महत्त्व व्यापारियों के लिए दीपावली के दिन अपने तराजू, बाट एवं बहीखातों के पूजन का है, जो विद्वानों के लिए व्यास पूर्णिमा का है वही महत्त्व कवि, लेखक, संगीतकार, नर्तक, वादक, नाटककार, चित्रकार के लिए बसन्त पंचमी का है। सभी कलाकार अपने दिन का आरम्भ अपने उपकरणों की पूजा अर्चना एवं माँ सरस्वती की वन्दना से करते हैं।

बसन्त को ऋतुओं का राजा माना जाता है। इस ऋतु में ना तो अधिक सर्दी पड़ती है ना अधिक गर्मी, पेड़ों पर नए कोमल पत्ते प्रस्फुटित होने लगते हैं। प्रकृति में चारों ओर हरियाली की चादर बिछ जाती है। प्रकृति में परिवर्तन नवता के कारण बसन्त को ऋतु राज कहा जाता है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है- महिनों में मार्गशीर्ष (अगहन) (ऋतुनाम् कुसुमाकर:) समस्त प्रकृति में फूल खिलाने वाला ऋतुओं में मैं बसन्त हूँ।

कवि देव ने बसन्त का कामदेव के पुत्र के रूप में वर्णन करते हुए लिखा है –

डार द्रुम पलना बिछौना नवपल्लव के,
सुमन झिंगोला सौहे तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी कीर बरतावै 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।।
पूरित पराग सों उतारों करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसन्त ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

कवि कहता है कि बसन्त ऋतु आ गयी। बसन्त एक नन्हे बालक की तरह पेड़ की डाली पर नए-नए पल्लवों के रूप में झूलने लगा है, फूलों का ढीला-ढाला झबला उसके तन पर अत्यधिक शोभायमान है अर्थात् बसन्त के आते ही वृक्ष नए-नए पल्लवों फूलों से सजधज कर शोभा देने लगते हैं। हवा उसके पलने को झूलाती है। मोर और शुक अपनी मधुर कर्णप्रिय आवाजों से उससे बतियाते हैं। कोयल उसके पलने को झूलाती है और करतल ध्वनि से अपनी प्रसन्नता प्रकट करती है। कमल की कली रूपी नायिका सिर पर लता रूपी साड़ी ओढ़कर प्रकृति में बिखरे परागकण से मानों बालक को नजर से बचाने के लिए राई नमक से टोटका करती है। महाराज कामदेव के पुत्र बसन्त को प्रात:बेला में गुलाब की कलियाँ चटककर जगाती है।

संगीत में एक राग का नाम बसन्त भी है। धार्मिक शास्त्रों में कहा गया है कि अगर यौवन हमारे जीवन का बसन्त है, तो बसन्त सृष्टि का यौवन है। ज्योतिषीय दृष्टि से पांचवी सिंह राशि के अधिष्ठात्र देव भगवान भास्कर है, जो अज्ञान का नाश कर ज्ञान एवं प्रकाश की ओर प्रवृत्त करते हैं। यदि कोई व्यक्ति इस दिन विवाहादि मांगलिक कर्म, गृहप्रवेश, पदभार, विद्यारम्भ, वाहन आदि खरीदता है, तो अति शुभ माने गए हैं।

संस्कृत वांगमय के देदीप्यमान मूर्धन्य महाकवि कालिदास ने अपनी प्रथम रचना ऋतुसंहार में षड ऋतुओं का मनोरम एवं मन को आह्लादित करने वाला श्रृंगारिक वर्णन किया है, उसमें बसन्त रूपी प्रकृति नटी के सांगोपांग

वर्णन की एक दो छटा दर्शनीय एवं श्लाघनीय है। ऋतुसंहार कालिदास जी की प्रथम एवं युवावस्था की रचना कही जाती है, उसमें उत्कृष्ट काव्य गुणों, रूपक एवं उपमा जैसे अलंकारों के प्रयोग किए हैं।

द्रुमा सपुष्पा: सलिलं सह्मं स्त्रिय:
सकामा: पवन: सुगन्धि:।
सुखा प्रदोषा दिवसाश्च: रम्या:
सर्व प्रिये! चारूतरं वसन्ते।।

इस समय वृक्षों में पुष्प फूलने लगे हैं, सरोवर के जल में कमल निकल आए है, नारियों में प्रेम उमड़ने लगा है, पवन सुगन्धित है, रात्रियाँ सुखद लगने लगी है और दिन भी रम्य है। बसन्त में सब चारू से चारूतम नयनाभिराम लगने लगा है।

वापीजलानां मणिमेखलानां शशांक
भासां प्रमादजनानाम्।
आम्रद्रुमाणां कुसुमान्वितानां तनोति
सौभाग्यमयं वसन्त।।

यह बसन्त ऋतु सभी में स्पृहनीयता का आधार कर रहा है, चाहे वापीजल (बावड़ी) हो, मणिमेखला हो, चन्द्र किरणें हो, प्रमादजन हो, कुसुमाच्छादित आम्रवृक्ष हो।

रामचरित मानस में सन्त शिरोमणि तुलसी दास जी कहते हैं–

रितु बसन्त बह त्रिबिध बयारी।
सब कह सुलभ पदारथ चारी।।
स्रक चन्दन बनितादिक भोगा।
देखि हरष बिसमय बस लोगा।।

(अयोध्याकाण्ड दोहा 214 चापाई 4)

अर्थात् बसन्त ऋतु में शीतल मन्द सुगन्धित तीन प्रकार की हवा बह रही है, सभी को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पदार्थ सहज सुलभ है। सभी ओर बाग-बगीचों, वन, उपवन में आनन्द की बहार है, पक्षियों की कलरव ध्वनियां व जल के पखेरूओं की अठखेलियां दृष्टिगत हो रही है।

बसन्त पंचमी के दिन को विद्यालयों एवं शिक्षा मन्दिरों, शिक्षण संस्थानों में माँ सरस्वती के प्राकट्य दिवस को विभिन्न प्रकार के शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम एवं समारोह के रूप में मनाए जाते हैं। इस दिन पीत परिधान व अंगराग पहनने का विशेष उत्साह नजर आता है। इस दिन पुस्तक व लेखनी का दान पुण्य के रूप में उपहार स्वरूप वितरण भी किया जाता है। सरस्वती के पूजन में श्वेत गुलाब, जूही मोगरा, चमेली आदि फूलों से पूजन अर्चन का विशिष्ट महत्त्व है। मन्दिरों में भी इस दिन भगवान को गुलाबी या बासन्ती वस्त्र धारण करवाए जाते हैं।

लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए विद्या और ज्ञान की आवश्यकता होती है। **'विद्या धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।'** कहा गया है।

'सरस्वती के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खर्चे त्यों-त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात।।

अर्थात् ज्ञान के भण्डार की एक अनोखी विशेषता है कि इसको जितना खर्च करोगें उतना अधिक दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगा बिना खर्च किए न्यूनता को प्राप्त होगा।

न हि ज्ञानेन सदृश्य पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसिद्ध: कालेनात्मनि विन्दति।।

भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि केवल ज्ञान ही है, जो मानव मात्र को पवित्र कर देता है। ज्ञान सदैव पवित्र ही रहता है कभी कलुषित नही होता है। समय आने पर योगसिद्ध ज्ञान योगी स्वयं को जान लेता है।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवै: सदा वन्दिता।
सा मा पातु सरस्वती भगवती नि:शेषजाड्याध्पहा।।

जो कुन्द पुष्प चन्द्रमा व हिमकणों के हार के सदृश्य है, जिसने सफेद वस्त्र धारण किए हुए हैं, श्रेष्ठ वाद्य वीणा से जिसके हाथ सुशोभित है, जो श्वेत पद्मासन पर विराजमान है, जिसकी ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि देवताओं के द्वारा वन्दना की जाती है, वह बुद्धि की समस्त जड़ता को दूर करने वाली माँ भगवती स्वरूपा सरस्वती हम सब की रक्षा करें।

माँ सरस्वती के जो प्रतीक है उनका बड़ा ही अलौकिक एवं दार्शनिक महत्त्व है–

1. **श्वेत वस्त्र**–श्वेत वस्त्र शान्ति व सादगी का प्रतीक है। विद्याध्ययन करने वाले लोगों को शान्ति व सादगी की आवश्यकता होती है ।
2. **हंस**–माँ सरस्वती को हंस वाहिनी भी कहा जाता है। हंस का रंग सफेद होता है। हंस में दूध और पानी को पृथक् करने की शक्ति (नीर क्षीर विवेक) होती है। यह प्रतीक हमें सही, गलत में भेद करना एवं न्याय के मार्ग पर चलना सीखाता है।
3. **कमल**–माँ वागीशा को कमल अतिप्रिय है। कमल कीचड़ में भले ही उद्गिज होता है, परन्तु वह निष्कलंक होता है। तमाम विषम परिस्थितियों में भी निष्कलुष निर्मल छवि बनाए रखने की प्रेरणा देता है।
4. **वीणा**–माँ शारदे के हाथ में वीणा है, जो हमें कला के प्रति जागरूक बनाती है। मानव मन में यदि संगीत या अन्य कला का बीज अंकुरित हो जाए, तो वह व्यक्ति किसी भी गलत काम के प्रति आसक्त नही होगा।
5. **स्फटिकमणि**– वाग्देवी के गले में स्फटिकमणि की माला है। माला ध्यान व एकाग्रता की प्रतीक है, जो विद्यार्थियों को सदैव ध्यान एवं एकाग्रता की प्रेरणा देती है।
6. **पुस्तक**–माँ शारदे के हाथ में पुस्तक है, जो हमें सन्देश देती है, कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र व हितेषी है। बिना ज्ञान के जीवन में कुछ नही है। पुस्तकों से प्रेम करने व सम्मान के प्रतीक रूप में पुस्तक धारण किए हुए हैं।

बसन्त ऋतु के बारे में ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलता है–

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती
धीनामणित्रयवतु।।

हे! परम चेतना सरस्वती के रूप में आप हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका है। हममें जो आचरण एवं मेधा है, उसका आधार आप ही है। आपकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार भगवान श्री कृष्ण ने प्रसन्न होकर सरस्वती को वरदान दिया था कि बसन्त पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोडीकलां,
ब्लॉक-रियांबडी, नागौर (राज.)
मो: 9660408232

Rajasthan Education Department

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर !

एक वर्ष में विद्यालय का कायाकल्प

❒ कमलेश तैतरवाल

विद्यालय स्टाफ, ग्रामीणों, भामाशाहों एवं ग्राम पंचायत के सहयोग से तस्वीर महज एक वर्ष में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तोलियासर चूरू की तस्वीर बदल गई। अगर आप में जोश और जुनून है, काम के प्रति आपकी दृढ़ इच्छाशक्ति है और आपको कुशल नेतृत्व मिल जाए तो फर्श से अर्श पर पहुँचने में बहुत ज्यादा समय नहीं लगता। कुछ ऐसा ही प्रेरक उदाहरण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तोलियासर, जिला चूरू है। अब से ठीक एक वर्ष पहले 8 जनवरी 2021 को जब स्थानांतरण पर मैंने इस विद्यालय में कार्यग्रहण किया तो यह देखकर दंग रह गया कि कोई उच्च माध्यमिक स्तर का विद्यालय भी इस तरह की जीर्ण शीर्ण हालत में व भौतिक सुविधाओं की कमियों से जूझता हुआ कैसे हो सकता है। दिनभर विद्यालय का अवलोकन करने के पश्चात अपने विद्यालय स्टाफ की मीटिंग बुलाई व प्रथम मीटिंग में ही विद्यालय स्टाफ को इस बात के लिए तैयार किया कि यदि हम पहल कर आगे बढ़ने का प्रयास करें तो यह विद्यालय जल्दी ही चूरू जिले का एक श्रेष्ठ विद्यालय बन सकता है और इस संबंध में मैंने एक छोटी सी प्राथमिक विकास योजना उनके सामने प्रस्तुत कर आर्थिक मदद की पहल करने का आग्रह किया। स्टाफ साथियों ने तत्काल इक्कीस हजार रुपयों का सहयोग प्रदान करते हुए मुझे हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया और अगले ही दिन इस विद्यालय की तस्वीर बदलने का अभियान शुरू कर दिया गया। धीरे-धीरे काम होता गया तो गाँव के लोगों में भी जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि अचानक हमारे विद्यालय में इस तरह का काम कैसे शुरू हुआ है। गाँव के लोग विद्यालय से जुड़ते चले गए और एक मध्यमवर्गीय परिवार वाले गाँव के लोगों ने विद्यालय विकास में अपना छोटा-छोटा योगदान शुरू किया। अपनी क्षमता के अनुसार धन से व श्रमदान के माध्यम से विद्यालय के भौतिक विकास में अपना योगदान दिया। धीरे-धीरे यह विकास यात्रा आगे बढ़ती चली गई।

भामाशाहों ने दिया योगदान- विद्यालय विकास में भामाशाहों का बहुमूल्य योगदान प्राप्त हुआ। यहाँ के मध्यमवर्गीय परिवारों ने ग्यारह सौ से लेकर तीन लाख तक की राशि दान की तथा बूँद-बूँद से घड़ा भरता चला गया। परिणामस्वरूप गत एक वर्ष में (जनवरी 2021 से जनवरी 2022 के बीच) लगभग बीस लाख रुपए के विकास कार्य विद्यालय में करवाए जा चुके हैं तथा कार्य निरंतर प्रगति पर है।

रिश्तेदार व मित्र भी बन गए भामाशाह- विद्यालय के विकास की जब चारों ओर चर्चा होने लगी तो न केवल इस गाँव के निवासी व प्रवासी अपितु यहाँ के रिश्तेदारों और मित्रों ने भी दिल खोलकर सहयोग किया तथा लाखों रुपए के कार्य करवाए या सामग्री विद्यालय को भेंट की। मुम्बई, इंदौर निवासी व विदेशों में प्रवासी भामाशाहों ने सहयोग राशि भिजवाई।

विद्यालय बन गया एक हेरिटेज रिसॉर्ट सा- गाँव के बीच में टीले पर अवस्थित इस विद्यालय की स्थिति ऐसी थी कि उबड़-खाबड़ ढलान वाले ऊँचे टीले पर बना हुआ ऊँचे-नीचे व आगे-पीछे बिखरे कमरों वाला भवन था। लेकिन लगभग तीस फीट ऊँचाई व दो सौ फीट ढलान वाला टीला ही आज इस विद्यालय की विशेष आकर्षक पहचान बन गया है। श्रमदान व जनसहयोग से इस ढलान को दीवारें बना कर, रेम्प व सीढ़ियाँ लगाकर बहुत ही शानदार परिसर बना लिया गया है जो अब देखते ही बनता है। पूरे भवन, खिड़की, दरवाजों की मरम्मत करवाकर सम्पूर्ण भवन के अंदर-बाहर प्लास्टिक पेंट व दरवाजे, खिड़कियों को ऑयल पेंट करवाया गया है।

विशाल आकर्षक प्रवेश द्वारों का निर्माण- विद्यालय के एक टूटे हुए प्रवेश द्वार की जगह अब एक बड़ा प्रवेश द्वार एक छोटा प्रवेश द्वार, दो रिवोल्विंग खिड़की व दो सामान्य खुलने वाली खिड़कियाँ भी लगवा दी गई हैं।

बरामदों व कक्षों में आकर्षक फ्लेक्स व बोर्ड- विद्यालय भवन के बरामदों व कक्षा-कक्षों में ज्ञानवर्धक फ्लेक्स चार्ट्स, महापुरुषों के अनमोल वचन व तस्वीरें, तम्बाकू व धूम्रपान निषेध बोर्ड, चाइल्ड लाइन और गुड बेड टच सम्बन्धी फ्लेक्अस लगवाए गए हैं।

ग्राम पंचायत का भी सराहनीय सहयोग- ग्रामीणों व विद्यालय स्टाफ के द्वारा विद्यालय के भौतिक विकास के प्रयासों को देखते हुए भामाशाहों के साथ ग्राम पंचायत मालासी के युवा सरपंच श्री विश्वजीत कस्वां भी आगे आए तथा लगभग संपूर्ण विद्यालय परिसर में सीमेंट इंटरलॉक टाइल्स लगवाकर इसे खूबसूरत बनाया है तथा अन्य सुविधाओं के विस्तार के लिए भी लगातार प्रयासरत हैं।

स्मार्ट क्लास व विशेष अतिरिक्त कक्षाएँ- भौतिक विकास के साथ-साथ शैक्षिक उन्नयन व गुणवत्ता सुधार के लिए ई-लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लासेज के साथ-साथ सुबह शाम विशेष अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन कर कोरोना की वजह से हुए नुकसान की भरपाई के प्रयास किए जा रहे हैं। विद्यालय परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए हैं। प्रधानाचार्य कक्ष व स्टाफ रूम को आकर्षक बनवाया गया है।

खेल सुविधाओं का विस्तार व आधुनिकीकरण- विद्यालय में लगभग बन्द हो चुकी खेल गतिविधियों को पुनः शुरू करते हुए भामाशाहों के सहयोग से बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड, चेस जैसे इंडोर गेम्स की सामग्री प्राप्त कर अभ्यास करवाया जा रहा है। वहीं बास्केटबाल व सॉफ्टबाल के प्रेक्टिस ग्राउंड बनाए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप पहली बार विद्यालय की चार बालिकाएँ राज्य स्तर पर चूरू जिले का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

जल्द ही लगेंगे झूले, फिसलन पट्टी व ओपन जिम भी- छोटे बच्चों के लिए झूले व फिसलन पट्टी लगवाने व युवाओं को व्यायाम करने के लिए ओपन जिम लगवाने के लिए मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजनांतर्गत हिस्सा राशि भामाशाहों के सहयोग से विभाग को जमा करवाई जा चुकी जिनकी स्वीकृति जारी होते ही कार्य पूरा करवाया जाएगा।

Rajasthan Education Department

विशेष वृक्षारोपण अभियान– इस विद्यालय की भौतिक स्थिति तथा टूटी हुई चारदीवारी व टूटे हुए प्रवेश द्वार के कारण पिछले बीस वर्षों में एक भी नया वृक्ष नहीं लगा था। इस वर्ष मानसून के समय वृक्षारोपण का विशेष अभियान चलाकर विद्यालय परिसर में लगभग एक सौ छायादार वृक्ष लगाए गए हैं तथा उनकी सुरक्षा की भी अच्छी व्यवस्था की गई है। इसके अलावा प्रधानाचार्य के नेतृत्व में घर-घर वृक्षारोपण अभियान चलाकर गाँव में पाँच सौ से अधिक वृक्ष निःशुल्क लगाए गए हैं।

दो फलदार बगीचों का विकास– विद्यालय की टीले से नीचे तक की ढलान को सीढ़ीनुमा स्टेप्स में बदलते हुए अलग-अलग लॉन तैयार किए गए हैं तथा दो फलदार वृक्षों के बगीचे भी लगाए गए हैं जिनमें नींबू, अनार, मौसम्मी, आम, जामुन, बील, अनार, बेर आदि फलदार वृक्ष व अर्जुन, तुलसी, अश्वगंधा, कल्पवृक्ष जैसे औषधीय वृक्ष लगाए गए हैं। पूरे विद्यालय परिसर में लॉन के किनारों पर व गमलों के करीब पचास से अधिक प्रजाति के फूलों वाले एवं सजावटी पौधे लगाए गए हैं।

पेयजल की उत्कृष्ट व्यवस्था– विद्यालय के विद्यार्थियों को अपने घर से पेयजल लाना पड़ता था। बारिश के पानी के टांके थे जो टूटे-फूटे पड़े थे उनमें भी पानी स्टोर करने और साफ रखने की कोई व्यवस्था नहीं थी लेकिन वर्तमान में पेयजल के लिए जो चार टांके बने हुए हैं, उनमें सफाई करके दो में इलेक्ट्रिक मोटर तथा दो में हैंडपंप लगा दिए गए हैं जिससे कि पानी की बचत भी होती है व स्वच्छ भी रहता है। इसके अलावा भामाशाह के सहयोग से एक लाख रुपये की लागत से बड़ी पेयजल टंकी का भी निर्माण करवाया गया है जिसमें कुंभाराम लिफ्ट योजना का पेयजल उपलब्ध करवाया जाता है।

एंटीकोविड अभियान– कोरोना की खतरनाक दूसरी लहर में प्रधानाचार्य के नेतृत्व में एंटी कोविड वॉलिंटियर्स टीम का गठन कर उनको विशेष एंटीकोविड स्लोगन प्रिंटेड टी शर्ट व केप पहनाकर जागरूकता अभियान चलाया गया जिससे गाँव में कोरोना का प्रभाव न के बराबर रहा है।

सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार– एक वर्ष के भौतिक व शैक्षिक विकास की वजह से राउमावि तोलियासर चूरू को प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ आदर्श विद्यालय पुरस्कार के लिए चुना गया और 16 नवम्बर 2021 को राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में प्रदेश के शिक्षा सचिव श्री पी. के. गोयल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री कानाराम जी सहित विभाग के उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत व तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा द्वारा प्रधानाचार्य कमलेश कुमार तेतरवाल को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तोलियासर,
चूरू (राज.) **मो: 9414540322**

राजस्थानराज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
प्रभाग-4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान, अजमेर
February 2022 Telecast schedules for 12 TV channels
(one class, one plat form) of PM eVIDYA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

S.No.	Class	Course Link	QR Code	S.No.	Class	Course Link	QR Code
1.	Class I	shorturl.at/msNZ5		7.	Class VII	shorturl.at/rxVY3	
2.	Class II	shorturl.at/acmBI		8.	Class VIII	shorturl.at/mpsIZ	
3.	Class III	shorturl.at/buyHX		9.	Class IX	shorturl.at/fptQ4	
4.	Class IV	shorturl.at/swAEQ		10.	Class X	shorturl.at/dAGI9	
5.	Class V	shorturl.at/zHIPX		11.	Class XI	shorturl.at/crzTZ	
6.	Class VI	shorturl.at/nzDLW		12.	Class XII	shorturl.at/adgoH	

Supportive School Environment to Enhance Oral Communication

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Gone are the days when English was criticized for being adopted as an official language at work place and in offices in our country, India- a motherland of 1639 spoken languages. English language is no more seen as a foreign or British language, a remnant of colonial rule but rather seen as an opportunity for a good job in international and national market. People have realized its importance as a connecting language to not only the world outside but also within boundaries of India. Mahatma Gandhi English Medium Schools opened recently in various parts of Rajasthan are like a dream come true to a medium and lower class family children who wish to learn English and study in an English medium school and at the same time, it shoulders this responsibility over the team of teachers and principals in Mahatma Gandhi English Medium Schools to create a supportive and enriching environment for its learners to have a smooth transition from Hindi medium to English medium for getting educated. Now the question comes how to help learners in switching their medium from Hindi to English and my answer is by creating a rich English language learning environment in school. Now the next question that clicks to the mind is how to create such environment? To answer this question we have to consider all the WHY, WHAT, WHERE, WHO and HOW question in relation to the two factors: Raising students motivation and interest in learning English; and widening students learning space by using effective learning and teaching strategies, flexible curriculum planning and time tabling to make allowance for co-curricular activities and effective deployment of available resources.

Whole school language curriculum should be designed in a manner that it provides maximum opportunities to its students to touch all four pillars of language learning -reading, writing, speaking and listening. For this purpose various activities can be included right from morning assembly to last period in classroom. In today's world of technology one needs a strong determination and right amount of efforts in correct direction to find different activities for your learners. Everything is available to us on a touch thanks to technology. It seems like knowledge is surrounding us just like the atmosphere does, we have to just select and catch the suitable one as per our learners need. Some activities that enhance language interest include-

- Having word of the day in assembly
- Creating print rich environment by putting children's work on display boards in corridors and classrooms
- Organizing regular field visits and excursions for children with purposeful follow up activities like asking them to write their experience that can be shared in classes.
- Providing easy access to authentic reading material to students.
- Organizing motivational workshops by calling guest faculty experts/speakers for both children and teaching staff
- Organizing reading fest and book fair in school or making children visit a book fair
- Including co-curricular activities like- story telling, English day, language games, quizzes etc
- Promoting use of English in school through encouraging class publications like newsletters, class or school magazines

In this respect, I must talk about one such step recently launched in all government school of Rajasthan - a 100 day programme named – Reading Campaign that will be run in all schools to encourage and foster reading in children. This is an amazing step and will definitely bring fruitful results as each and every child will be a source of encouragement and a resource for each other during the campaign. Children will be reading and discussing about books and stories they want to read/have read, what did they like in the story, what kind of story they will pick up next?...etc. The whole aura of the school will be in favour of language learning.

Speaking is one of the most important skills both for social and academic success. Learners use this skill throughout the day to process and deliver instructions, make requests, ask questions, receive new information, and interact with peers. Some suggestions to develop children's oral skills are-

- Students might need a little guidance from teachers to engage in conversations, so spark interactions whenever you can. Ask questions, rephrase the student's answers, and give prompts that encourage oral conversations to continue.
- When a student uses fragmented syntax, model complete syntax back to them. This builds oral language skills.
- Ask a question to encourage talk. A teacher can even write one on the board so the students can read it and start thinking about their answer as soon as they come in. Start with simple one-part questions like "What is your favourite animal?" If a student doesn't answer in a complete sentence, model a complete sentence and ask the student to repeat your model.
- Reading is considered to be the best practice that can enhance basic oral communication skills. Reading English literature in our prescribed text book improves vocabulary skills. This will help our students in developing your thinking process and in gathering ideas and expressing them in English.
- Asking questions before and after a reading assignment not only helps sharpen oral language skills, it also helps students think about what they're read¬ing and absorb information from the words.
- A teacher should summarize the passage asking the students – 'Who were the characters?' 'What was the plot?' 'What was the outcome?' 'What was the main idea?' 'What were the supporting details?'
- Be aware of the potential disconnect between what you say and what your students hear. Go over your message and present it in multiple ways to be sure all students understand.

(1)Reference: https://www.researchgate.net/post/How-can-I-improve-my-students-speaking-skills (2) https://www.eds.gov.hk/en/edu-system/primary-secondary/applicable-to- secondary/mai/english-language-environment-index.html.

Reader and HoD-UG
Govt. IASE, Bikaner
Ph : 9460305331

Rajasthan Education Department

ऑनलाइन शिक्षण हेतु विद्यार्थियों के लिए पीएम ई विद्या (PMeVIDYA) कार्यक्रम

❒ डॉ. जयश्री माथुर

पीएम ईविद्या को वन नेशन डिजिटल प्लेटफॉर्म भी कहा जाता है। इस योजना के तहत, देश के शीर्ष सौ विश्वविद्यालय ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित कर सकेगें। पूरे देश में ऐसे कई छात्र हैं, जिनकी इंटरनेट तक पहुँच नहीं है। उन सभी छात्रों को शिक्षा प्रदान करने के लिए स्वयं प्रभा डीटीएच चैनल शुरू किया गया है । इस योजना के तहत कक्षा 1 से 12 तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए एक कक्षा -एक चैनल नामक 12 डीटीएच टीवी चैनल लॉन्च किए गए हैं। दीक्षा प्लेटफॉर्म पर भी, सभी वर्गों के लिए ई-कंटेंट और क्यूआर कोड एनर्जेटिक पुस्तकें शामिल की गई हैं। नेत्रहीन और श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए भी सरकार ने रेडियो पॉडकास्ट भी लॉन्च किया गया है।

PMeVIDYA कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हैं -

- देश के सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- अब देश के वह विद्यार्थी, जो किसी भी कारण से शिक्षा प्राप्त करने के लिए शारीरिक रूप से विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकते है, वे अपने घर पर ही शिक्षा प्राप्त कर सकें।

पीएम ईविद्या कार्यक्रम के लाभ

- पीएम ईविद्या कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा तक डिजिटल/ऑनलाइन/ऑन एयर द्वारा पहुंच सुनिश्चित की जा सके।
- उन सभी विद्यार्थियों के लिए, जिनके पास इंटरनेट तक पहुंच नहीं है, स्वयं प्रभा टीवी चैनल शिक्षा प्रदान करेगा।
- कक्षा 1 से 12 तक प्रति कक्षा एक समर्पित चैनल है, जिसे 'एक कक्षा,एक चैनल' के रूप में जाना जाता है।
- इस योजना के तहत प्रतियोगी परीक्षा जैसे IIT-JEE के लिए ऑनलाइन कोचिंग भी प्रदान की जा रही है।
- मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण के लिए चैनल कॉल मनोदर्पण शुरू किया गया है ।
- विशेषज्ञ स्काइप के माध्यम से घर बैठे लाइव इंटरएक्टिव सत्र भी कर सकेंगे।

पीएम ईविद्या कार्यक्रम के मॉडल

A ज्ञान साझा करने के लिए डिजिटल अवसंरचना-DIKSHA

यह मंच औपचारिक रूप से 5 सितंबर 2017 को भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति द्वारा लॉन्च किया गया है। इस मंच के माध्यम से निर्धारित स्कूल पाठ्यक्रम की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण सामग्री प्रदान की जाती है। इस पोर्टल को अंग्रेजी और कई अन्य भाषाओं में एक्सेस किया जा सकता है। इस मंच में एक मनोरंजक कक्षा अनुभव बनाने के लिए पाठ योजनाएं, कार्यपत्रक और गतिविधियां भी शामिल होंगी।

B. स्वयं

स्वयं भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम है, जिसे शिक्षा नीति के तीन मुख्य सिद्धांतों,पहुंच, समता और गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस प्रयास का उद्देश्य सबसे अधिक वंचितों सहित सभी को सर्वोत्तम शिक्षण अधिगम संसाधन उपलब्ध कराना है। स्वयं एक ऐसा डिजिटल प्लेटफार्म है जो उन विद्यार्थियों के लिए डिजिटल अन्तराल को पाटने का प्रयास करता है , जो अब तक डिजिटल क्रांति से अछूते रहे हैं और ज्ञान व् अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में शामिल नहीं हो पाए हैं।

स्वयम एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है जो कक्षा 9 से लेकर पोस्ट-ग्रेजुएशन तक किसी भी समय, किसी भी स्थान पर किसी को भी एक्सेस करने के लिए सभी पाठ्यक्रमों की सुविधा प्रदान करता है। सभी पाठ्यक्रम इंटरैक्टिव हैं, जो देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए हैं और किसी भी शिक्षार्थी के लिए मुफ्त उपलब्ध हैं।

स्वयम पर होस्ट किए गए पाठ्यक्रम के 4 भाग हैं -

(1) वीडियो लेक्चर
(2) विशेष रूप से तैयार की गई पठन सामग्री जिसे डाउनलोड/प्रिंट किया जा सकता है।
(3) परीक्षण और क्विज के माध्यम से स्व-मूल्यांकन परीक्षण
(4) संदेह दूर करने के लिए एक ऑनलाइन चर्चा मंच।

स्वयं प्लेटफॉर्म पर क्रमशः एनआईओएस और एनसीईआरटी, स्कूली शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला का संचालन कर रहे हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम में पाठ मॉड्यूल, वीडियो ट्यूटोरियल, मूल्यांकन प्रश्न और स्व-शिक्षा के लिए अतिरिक्त संसाधन शामिल हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों के लिए समय-समय पर पंजीकरण खुलता रहता है। स्कूल और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल सामग्री के उपयोग के तालमेल के लिए, स्वयं मंच को दीक्षा के साथ एकीकृत करने का प्रयास किया जा रहा है। एनसीईआरटी द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी पाठ्यक्रमों के लिए, ई-सामग्री को डाउनलोड करने के लिए एक लिंक दिया जा रहा है। उदाहरण- कक्षा बारहवीं की मानव भूगोल के मूल सिद्धांतों की पुस्तक के http://ncert.nic.in/textbook/textbook.htm?legy1=0-10

इसके अलावा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) बॉम्बे के साथ समन्वय में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) ने कक्षा 9 और उससे ऊपर के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त अनूठे पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं।

विद्यार्थी और शिक्षक सभी पाठ्यक्रम मॉड्यूल (पाठ, वीडियो और मूल्यांकन प्रश्नों) swayam.gov.in लॉग इन करके पहुँच सकते हैं।

C. स्वयं प्रभा टीवी चैनल

स्वयं प्रभा का उद्घाटन 07 जुलाई, 2017 को हुआ था। स्वयं प्रभा डीटीएच चैनलों का एक समूह है, जो सप्ताह में 7 दिन, 24 घंटे गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण करने के लिए समर्पित है। यह जीसैट -15 उपग्रह द्वारा संचालित किया जाता है।

स्वयं प्रभा कम से कम 4 घंटे के लिए दैनिक नई सामग्री प्रसारित करता है। यह एक दिन में 5 बार दोहराया जाता है। जिससे विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार समय चुन सकते हैं। यह सभी चैनल बीआईएसएजी (भास्कराचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस एप्लिकेशन और भू-सूचना विज्ञान), गांधीनगर से अपलिंक किए गए हैं । एनपीटीईएल,

Rajasthan Education Department

आईआईटी, यूजीसी, सीईसी, इग्नू, एनसीईआरटी और एनआईओएस द्वारा इस चैनल को सामग्री प्रदान की जाती है।

दूरदर्शन की डीटीएच सेवा फ्री डिश के सब्सक्राइबर इन शैक्षिक चैनलों को उसी सेट टॉप बॉक्स और टीवी का उपयोग करके देख सकते हैं। इसमें किसी अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता नहीं है।

वेब पोर्टल swayamprabha.gov.in टेलीकास्ट किए गए वीडियो का एक संग्रह भी है, जिसे कभी भी ऑनलाइन एक्सेस किया जा सकता है। https://ciet.nic.in/pages.php?id=pmevidya&ln=en की वेबसाइट पर वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी के बारे में जानकारी पा सकते हैं।

इनफ्लिबनेट केन्द्र ने भी स्वयम प्रभा ऐप विकसित किया है। विद्यार्थी इसे प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। सभी वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी ऐप पर देखी जा सकती है।

यह प्रत्येक विद्यार्थी को स्लॉट्स अपनी सुविधा से चुनने और शैक्षिक कार्यक्रमों का सार्थक उपयोग करने और सीखने की सुविधा प्रदान करता है। साप्ताहिक प्रसारण कार्यक्रम सीआईईटी-एनसीईआरटी की वेबसाइट के साथ ही स्वयम प्रभा की वेबसाइट पर भी उपलब्ध रहते हैं। विद्यार्थी निम्नांकित तालिका के अनुसार अपनी कक्षा के अनुसार चैनल पर कार्यक्रम देख सकते हैं।

क्र.सं.	कक्षा	चैनल संख्या
1	कक्षा-1	चैनल 23
2	कक्षा-2	चैनल 24
3	कक्षा-3	चैनल 25
4	कक्षा-4	चैनल 26
5	कक्षा-5	चैनल 27
6	कक्षा-6	चैनल 28
7	कक्षा-7	चैनल 29
8	कक्षा-8	चैनल 30
9	कक्षा-9	चैनल 31
10	कक्षा-10	चैनल 32
11	कक्षा-11	चैनल 33
12	कक्षा-12	चैनल 34
13	आईआईटी पाल व्याख्यान (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित)	चैनल 22

D. विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान अपनी वेबसाइट को निशक्त लोगों के लिए सुलभ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। वेबसाइट को सुलभ बनाने के अपने प्रयास में, एनआइओएस ने विभिन्न विशेषताओं को शामिल किया है। जिससे उपयोगकर्ताओं को वेबसाइट ब्राउज़ करना आसान हो जाएगा। वेबसाइट में शामिल कुछ एक्सेसिबिलिटी फीचर्स में डिस्प्ले सेटिंग्स को एडजस्ट करना, नेविगेशन में आसानी, विषवस्तु को पढ़ सकनाआदि शामिल हैं।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सामग्री निम्नानुसार है -

1. डिजिटल मैटीरियल, ऑडियोबुक और कम्प्यूटरीकृत पाठ के लिए तकनीकी मानक डिजिटली एक्सेसिबल इनफॉर्मेशन सिस्टम (डीएआईएसवाई) में अध्ययन सामग्री विकसित की गई है।
2. बधिर और कम सुनने वाले विद्यार्थियों के विचारों के आदान प्रदान और शिक्षा की सुविधा के लिए एक भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) शब्दकोश विकसित किया गया है।
3. एनआईओएस ने माध्यमिक स्तर और योग पाठ्यक्रम में शिक्षार्थियों को शैक्षिक पहुँच प्रदान करने के लिए 7 विषयों में साइन लैंग्वेज में 270 से अधिक वीडियो विकसित किए हैं।
4. ये https://www.youtube.com/channel/UCXBn5q8Zv4BzLZXWWD7Jxw/playlists उपलब्ध हैं
5. स्कूल पाठ्यक्रम मे पहुच-एनसीईआरटी की पहल को देखा जा सकता है : 1. https://ciet.nic.in/pages.php?id=accesstoedu&ln=en&ln=en

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सामग्री निम्नानुसार है -

1. एनआईओएस की पाठ्यक्रम सामग्री (चयनित) भी साइन भाषा में दर्ज की गई है जिसे एनआईओएस वेबसाइट के साथ-साथ यू-ट्यूब पर भी रखा गया है।
2. एनआईओएस ने माध्यमिक स्तर और योग पाठ्यक्रम में शिक्षार्थियों को शैक्षिक पहुँच प्रदान करने के लिए 7 विषयों में साइन लैंग्वेज में 270 से अधिक वीडियो विकसित किए हैं।
3. ये वीडियो https://www.youtube.com/channel/UCXBn5q8Zv4BzLZXWWD7Jxw/playlists पर उपलब्ध हैं।
4. रिकॉर्ड की गई सामग्री को एचआई शिक्षार्थियों को डीवीडी पर भेजा जाता है।

E. प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए ऑनलाइन कोचिंगआईआईटीजेईई/एनईईटी की तैयारी के लिए आईआईटीपीइएल

उच्च शिक्षा विभाग ने प्रतियोगी परीक्षाओं -आईआईटीपीएल और ई-अभ्यास के लिए ऑनलाइन सीखने की व्यवस्था की है। आईआईटीपीएल या आईआईटी प्रोफेसर सहायक लर्निंग, आईआईटी प्रोफेसरों द्वारा संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) की तैयारी करने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए तैयार किए गए व्याख्यानों की एक श्रृंखला है। यहाँ पर भौतिकी के 193 वीडियो, गणित के 218 वीडियो, रसायन विज्ञान के 146 वीडियो एवं जीव विज्ञान के 120 वीडियो उपलब्ध हैं ।

आईआईटीपीएल व्याख्यान स्वयं प्रभा चैनल पर प्रसारित किए जाते हैं। इसके लिए चैनल नंबर 22 को आवंटित किया गया है।

https://www.swayamprabha.gov.in/index.php/channel_profile/profile/22

ई-अभ्यास राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षा-जेईई और एनईईटी - देने वाले विद्यार्थियों के लिए एक व्यक्तिगत अनुकूल शिक्षा मंच है। ऐप प्रत्येक दिन तैयारी के लिए अंग्रेजी और हिंदी दोनों में एक पूर्ण परीक्षा प्रकाशित करता है।

https://www.nta.ac.in/abhyas

F. रेडियो, सामुदायिक रेडियो और पोडकास्ट

मुक्ता विद्या वाणी

मुक्ता विद्या वाणी कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य वेब स्ट्रीमिंग के माध्यम से विभिन्न पाठ्यक्रम सामग्रियों का अध्ययन करने वाले एनआईओएस के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों को सशक्त बनाना है। एनआईओएस मुक्ता विद्या वाणी (एमवीवी) के माध्यम से अपने नामांकित विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विभिन्न विषयों

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

पर व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों (पीसीपी) की लाइव इंटरएक्टिव वेब-स्ट्रीमिंग का आयोजन करता है। रेडियो वाहिनी इन पीसीपी का प्रसारण केवल विद्यार्थियों के बीच ही नहीं बल्कि आम लोगों तक भी कर रहा है।

शिक्षा वाणी पोडकास्ट

सीबीएसई की शिक्षा वाणी नामक पोडकास्ट कक्षा 9 से 12 के विभिन्न विषयों के लिए एक सामयिक, शिक्षाप्रद, आकर्षक और सहज तरीके से ऑडियो सामग्री का प्रसार करता है। सीबीएसई-शिक्षा वाणी एंड्रॉइड फोन उपयोगकर्ताओं के लिए प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। अब तक शिक्षा वाणी में एनसीईआरटी पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न विषयों पर 400 ऑडियो फाइलों का संकलन हैं।

इनमें से अधिकांश शैक्षिक प्रसारण सुबह जल्दी शुरू होते हैं और दोपहर में दोहराए जाते हैं। इन ऑडियो पीसीपी की रिकॉर्डिंग 24x7 एनआईओएस की वेबसाइट https://nios.iradioindia.in पर उपलब्ध है। एनआईओएस विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से विद्यार्थियों तक अपने ऑडियो / रेडियो सामग्री पहुँचाता है।

विद्यार्थी https://www.youtube.com/channel/UCQoE4TšIVObZGWeMIRDQFww लिंक के माध्यम से यूट्यूब चैनल पर और https://www.facebook.com/Radio-Vahini-FM²-912-MHz-NIOS-Community-Radio-2297095143891802 के जरिए फेसबुक पेज तक पहुँच सकते हैं।

सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे इन अनुपम प्रयासों को सभी शिक्षक साथी स्वयं देखें व् अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप इन सभी शैक्षिक प्लेटफार्म का उपयोग करने हेतु प्रेरित करें। जिससे मेधावी विद्यार्थी, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थी बिना किसी खर्च के अपने घर पर रहकर बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

अस्सिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर
मो. 9413915956

स्काउट-गाइड

राजस्थान में 65 वर्ष बाद होगी 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी

❒ राकेश टाक

बड़ा ही हर्ष का विषय है कि 65 वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद राजस्थान प्रदेश के पाली जिले में बड़े ही भव्य तरीके से भारत स्काउट व गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली के तत्वावधान में राजस्थान प्रदेश आयोजित कराएगा- '18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी'।

राजस्थान प्रदेश में पुनः जम्बूरी का आयोजन करवाने की घोषणा व उसके लिए तैयारियाँ करवाने का पूर्ण श्रेय हमारे प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत व राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के स्टेट चीफ कमिश्नर श्रीमान निरंजन आर्य को जाता है। राष्ट्रीय जम्बूरी की घोषणा के साथ ही राज्य मुख्यालय के समस्त पदाधिकारियों व संगठन के कार्यकर्त्ता जोर-शोर से सारी तैयारियों में लग चुके हैं।

'जम्बूरी' स्काउट गाइड का महाकुंभ है। जिसमें देश के विभिन्न प्रदेशों, सार्क सहित अन्य देशों के स्काउट गाइड (बालक/ बालिकाएँ) एकत्र होकर वहाँ अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हैं और वे एक-दूसरे की संस्कृति, साहित्य, भाषा, खान-पान, रहन-सहन, पहनावा को देखने का अवसर प्राप्त करते हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्काउट गाइड में साहस और जोश के साथ सद्भावना भरने का माहौल है 'जम्बूरी'।

राष्ट्रीय जम्बूरी का यह आंदोलन अपने आप में स्काउट आंदोलन से जुड़े हर सदस्य के लिए अनोखा अनुभव है। देश-विदेश के हजारों स्काउट गाइड का यह अभूतपूर्व मेला इसलिए भी महत्त्व रखता है कि इतनी अधिक संख्या में एक साथ स्काउट गाइड का संगम अन्यत्र कहीं नहीं होता है। जम्बूरी के इस 07 दिवसीय महाकुंभ के जम्बूरी नगर में वर्दीधारी स्काउट गाइड का समागम होता है और एक विशाल भूखण्ड पर तम्बुओं की नगरी में सभी हँसते-गाते, नाचते व मस्ती के आलम में सराबोर सम्पूर्ण भारत की उभरती तस्वीर का नजारा जहाँ अखिल भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता का सजीव चित्रण मानो लघु भारत को इस नीले गगन के तले तम्बू नगरी में देखा जा सकता है।

जम्बूरी इसलिए भी अपने आप में खास स्थान रखती है क्योंकि यहाँ अलग-अलग प्रान्तों से विभिन्न विचारधाराओं, रंग, वेशभूषा, खान-पान, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोल-चाल, तौर-तरीके होते हुए भी जम्बूरी नगरी में मैत्री भाव से साथ-साथ रहेंगे, विचार एवं भावनाओं वैचारिक आदान-प्रदान के साथ रहना, विचार एवं भाषाओं में मंथन एवं आपसी समझ के साथ सात दिन खुशी-खुशी जीवन भर की यादों को मन में संजोए गुजार देते हैं। यहाँ बच्चों में राष्ट्रीय एकता, मैत्री भावना, पारस्परिक समझदारी के भावों का विकास के साथ सभी धर्मों के लोगों को एक साथ मिलजुल कर रहने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही स्काउट गाइड अपने-अपने राज्यों एवं क्षेत्रों से अपनी-अपनी संस्कृति, लोकगीत, लोक नृत्य, पायनियरिंग, प्रोजेक्ट, शिविर ज्वाल, मार्च पास्ट, कलर पार्टी, बैण्ड, युवा चर्चा, झाँकी प्रदर्शन, स्किल ओ रामा, पैट्रोल इन कैसिंल, शारीरिक व्यायाम, मलखंभ, लेजियम, पिरामिड, पी.टी. प्रदर्शन, शिविर कला, राज्य गेट निर्माण, राज्य दिवस आयोजन, प्रदर्शनी, कुड प्लाजा, भारत दर्शन, अनुशासन व साफ-सफाई, बी.पी. सिक्स, योग, प्राणायाम, क्लेग सेरेमनी, आपदा प्रबंधन, रूट मार्च, निबंध, चित्रकला, वाद-विवाद, भाषण, एकाभिनय, एडवेंचर गतिविधि, ट्रेनर्स मीट, हिमालय वुड बैज री यूनियन, दक्षता बैज, तम्बू सजावट की गतिविधियों में स्काउट गाइड व स्काउटर, गाइडर स्पर्धात्मक प्रदर्शन कर अपनी-अपनी क्षमताओं का परिचय देते हैं।

विद्यार्थी जीवन में कभी कक्षा-6 की हिन्दी की पुस्तक में 'जयपुर की जम्बूरी' नामक पाठ पढ़ा था। उस समय यह ज्ञान नहीं था कि जम्बूरी होती क्या है? लेकिन संगठन से जुड़ने व यूनिट लीडर बनने पर इसका व्यावहारिक ज्ञान हुआ। अभी तक मुझे 03 राष्ट्रीय जम्बूरियाँ (1) स्पेशल स्काउट गाइड जम्बूरी-अहमदाबाद (गुजरात) 2009 में, (2) 16वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी-हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)

Rajasthan Education Department

2011 में तथा (3) 17वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी –मैसूर (कर्नाटक) 2017 में तथा साथ ही 02 राष्ट्रीय जनजाति मिनी जम्बूरीयाँ उदयनिवास उदयपुर (राजस्थान) में स्काउट्स के साथ सहभागिता करने का अवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा 44 स्काउट्स के राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता करायी।

अब तक आयोजित राष्ट्रीय जम्बूरियाँ

जम्बूरी	वर्ष	स्थान	राज्य
पहली	1953	हैदराबाद	आंध्रप्रदेश
दूसरी	1956	जयपुर	राजस्थान
तीसरी	1960	बैंगलोर	मैसूर (कर्नाटक)
चौथी	1964	इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश
पाँचवी	1967	कल्याणी (कलकत्ता)	पश्चिम बंगाल
छठी	1970	बम्बई	महाराष्ट्र
सातवीं	1974	फरीदाबाद	हरियाणा
आठवीं	1979	मराई मलाई (मद्रास)	तमिलनाडु
नवीं	1982	बोधगया	बिहार
दसवीं	1986	बैंगलोर	कर्नाटक
एशिया पेसिफिक विशेष	1987	हैदराबाद	आंध्रप्रदेश
ग्यारहवीं	1990	भोपाल	मध्यप्रदेश
बारहवीं	1994	पालघाट	केरल
तेरहवीं (मय तीसरी सार्क)	1998	खुर्दा रोड़ (भुवेनश्वर)	उड़ीसा
स्वर्ण जयंती जम्बूरी विशेष	2000	चैन्नई	तमिलनाडु
चौदहवी	2002	रामपुर	छत्तीसगढ़
पन्द्रहवीं	2005	हरिद्वार	उत्तराखण्ड
स्पेशल शताब्दी वर्ष प्रारंभ	जनवरी 2007	कोलकाता	पश्चिम बंगाल
शताब्दी वर्ष समापन	दिसम्बर 2007	बुराडी	दिल्ली
स्पेशल जम्बूरी	2009	अहमदाबाद	गुजरात
सोलहवीं	2011	हैदराबाद	आंध्रप्रदेश
सत्रहवीं	2017	मैसूर	कर्नाटक

जयपुर (राजस्थान) की पहली जम्बूरी– भारत स्काउट गाइड की स्थापना 7 नवम्बर 1950 को एकीकृत रूप में हुई थी। स्थापना के बाद तय किया गया था कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रति 04 वर्ष के अंतराल के बाद राष्ट्रीय जम्बूरी देश में आयोजित की जाए। इस निर्णय के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम जम्बूरी सन् 1953 में हैदराबाद में एवं इस क्रम 10 दिवसीय राष्ट्रीय जम्बूरी राजस्थान प्रदेश की राजधानी जयपुर की पावन धरा पर 26 दिसम्बर 1956 से 01 जनवरी 1957 तक रामबाग शाही प्रसाद के सामने टीलों से भरी ऊँची नीची जमीन जहाँ अब सवाई मान सिंह स्टेडियम और उसके पीछे स्थित अल मशहूर व विशाल अमरूदों के बाग के भूखण्ड पर सम्पन्न हुई थी।

इस जम्बूरी के भारत भर से 10,800 स्काउट गाइड ने बड़े ही जोश व उत्साह के साथ भाग लिया व अपने–अपने स्काउट कौशल का शानदार प्रदर्शन किया था। राजस्थान प्रदेश से 4444 का दल था। इस जम्बूरी में श्रीलंका के स्काउट्स के एक दल भी अतिथि के रूप में सम्मिलित हुआ था।

जम्बूरी का शुभारंभ 27 दिसम्बर, 1956 को विशालकाय एरिना में तत्कालीन राज्यपाल माननीय गुरुमुख निहाल सिंह ने स्काउट गाइड संगठन का झंडारोहण कर देश के सभी प्रदेशों के स्काउट गाइड टुकड़ियों की मार्च पास्ट की सलामी लेकर किया। 28 दिसम्बर, 1956 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमान मोहनलाल सुखाड़िया ने स्काउट गाइड प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित करने व उसका अवलोकन कर उद्घाटन किया।

29 दिसम्बर 1956, को जम्बूरी स्थल पर झांकी प्रदर्शन हुआ। जिसमें राजस्थान प्रदेश की झांकी जयपुर मण्डल द्वारा प्रस्तुत की गई। जिसमें गाँव की बारात की सजीव झांकी की प्रस्तुति दी। इस झांकी में बाराती, गीत गाती बहनों, गहनों से लदी रमणियां, ढोल थाली व बांकियों की तुमुल ध्वनि, घोड़ी पर दूल्हा (बींद) मंच के सामने से गुजरे तो सभी ने उनकी गर्म जोशी से स्वागत किया। दर्शक दिवस के साथ विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन जम्बूरी में किया गया।

30 दिसम्बर, 1956 को मोहन सिंह मेहता व भारत के तत्कालीन गृहमंत्री डॉ. कैलाश नाट काटजू के सान्निध्य में स्काउटिंग गाइडर्स व पैट्रोल लीडर्स की कॉन्फ्रेंस हुई व विशाल रैली व नगर भ्रमण भी हुआ। इस प्रकार से राजस्थान में द्वितीय राष्ट्रीय जम्बूरी का आयोजन बड़े ही ठाट–बाट से हुआ।

13वीं एवं तीसरी सार्क जम्बूरी उड़ीसा (1998) से उच्च प्रदर्शन वाले राज्य संगठन के चीफ कमिश्नर शील (स्काउट व गाइड विभाग) एवं सम्पूर्ण श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए नेशनल कमिश्नर फ्लेग दिए जाने का प्रावधान रखा गया। तब से निरंतर राजस्थान प्रदेश को उच्च स्तरीय प्रदर्शन के लिए नवाजे जाने का गौरव प्राप्त हो रहा है। यह हमारे लिए बड़े ही सम्मान की बात है। हम सभी आशावादी है कि 18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी में भी राजस्थान प्रदेश से सहभागिता करने वाले सभी स्काउट गाइड, स्काउट्स गाइड्स व प्रदेश के संगठन के सभी पदाधिकारियों के दिशा निर्देशन व मार्गदर्शन में दिन रात कड़ी मेहनत करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे व राजस्थान प्रदेश के स्काउट गाइड व सभी कार्यकर्त्ता जम्बूरी में अपना 100% देकर उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिए प्राप्त होने वाले अलंकरणों की निरन्तरता बनाए रखने में अपना–अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने को अभी से तैयार है।

सारांश : वास्तव में जम्बूरी उल्लास, साहस, रोमांस, मित्रता, खेल, संस्कृति, भक्ति, प्रतिस्पर्धाओं, जज्बे, जंगल में मंगल, विभिन्न संसाधनों में जीवन यापन करने, जीने की कला, पाक कला, वैचारिक मिलन का संगम आपसी भाईचारा, बंधुता का सशक्त उदाहरण व महाकुंभ सा स्वरूप है। 'जम्बूरी'

शारीरिक शिक्षक एवं स्काउटर
सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट) एवं जिला प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंचौली, कुंभलगढ़, राजसमंद
मो: 8290362575

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

कोरोना महामारी विशेष

कोविड 19 बीमारी और कोरोना वायरस का इतिहास और वर्तमान

❒ डॉ. कुलदीप पंवार

कोविड 19 (Coronavirus Disease 2019) हमारे श्वसन तंत्र की यह बीमारी नई नहीं है। कोरोना वायरस फेमिली में आने वाले वायरस आम तौर पर ऊपरी श्वसन तंत्र (Upper Respiratory Tract Infection) के रोग उत्पन्न करते हैं। राइनो वाइरस की तरह ये भी हमारे शरीर में आम सर्दी जुखाम के लक्षण उत्पन्न करते है। विज्ञान के अनुसार वायरस सजीव और निर्जीव के बीच की कड़ी है अर्थात् इन्हें धरती के सबसे पुराने जीव कहा जा सकता है। इस कारण इनमें विकासवादी (Evolutionary) परिवर्तन बहुत जल्दी होता है। ऐसा ही एक विकासवादी परिवर्तन कोरोना वायरस फैमिली में सन् 2002 में चीन और हांगकांग में हुआ था, जिससे सार्स कोरोना वायरस का जन्म हुआ था, यह वायरस अपनी फैमिली के बाकी सदस्यों की तरह सिर्फ ऊपरी श्वसन तंत्र तक सीमित नहीं रहा अपितु फेंफड़ों के वायुकोष्ठिका (Alveoli) तक इसनें संक्रमण पैदा करके न्युमोनिया का कारण बना और इससे उत्पन्न बीमारी को सार्स (Severe Acute Respiratery Syndrom) नाम दिया गया। उस समय यह बीमारी सिर्फ एशिया तक ही सीमित रही थी और यूरोप और अमरीका तक नहीं पहुँच पाई। सन् 2004 में इसके आखिरी कुछ केस देखे गए थे।

2019 में फिर से एक विकासवादी परिवर्तन के साथ ही चीन के वुहांग प्रांत में एक नए वायरस-सार्स कोरोना वायरस 2 का जन्म हुआ। इसे हम आम भाषा में कोरोना वायरस कह रहे हैं। यह भी सार्स कोरोना वायरस की तरह निचले श्वसन तंत्र को प्रभावित करके न्युमोनिया उत्पन्न करता है और इससे होने वाले रोग को कोविड 19 कहा गया। इस रोग के फैलने की गति बहुत तेज थी। दिसंबर 2019 में चीन के वुहांग प्रान्त में इसके रोगी ध्यान में आए। इसके बाद 30 जनवरी 2020 विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने इसे अंतरराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल (Public Health Emergency Of International Concern) घोषित किया। भारत का पहला केस केरल में रिपोर्ट हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 मार्च 2020 को कोविड 19 बीमारी को महामारी (Pandemic) घोषित किया।

कोविड 19 बीमारी की लहरें- पहले सन् 2020 में फिर मार्च अप्रेल 2021 में दूसरी और अब कोविड 19 की तीसरी लहर आ चुकी है। म्युटेशन के कारण कोरोना वायरस की सरंचना बदलती है जिस वजह से हर कुछ महीनों बाद कोरोना की लहरें आती है और व्यक्ति एक बार संक्रमित होने के बाद भी दोबारा संक्रमित हो जाता है। किसी भी वायरस में म्यूटेशन तब ज्यादा होती है जब वो होस्ट अर्थात व्यक्ति के शरीर में विभाजित होता है। इस कारण जैसे जैसे यह रोग फैल रहा है इसमें म्यूटेशन बढ़ने से वायरस की सरंचना बदल रही है और हमें इसके नए स्ट्रेन जैसे ओमिक्रोन, डेल्टा इत्यादि मिल रहे हैं। मास्क का उपयोग इस म्यूटेशन और संक्रमण के फैलाव के चक्र को रोकने में एक कारगर उपाय है इसलिए कहा जाता है कि वेक्सिनेशन के बाद भी मास्क का उपयोग जारी रखना चाहिए क्योंकि वेक्सीन सिर्फ हमारे इम्यून सिस्टम को एक्टिवेट करती है जिससे हमारे इम्यून सेल्स शरीर के अन्दर पहुँचे वायरस को खत्म करती है, परंतु वैक्सीन हमारी नाक की बाहरी कोशिकाओं में वायरस के विभाजन को नहीं रोक पाती, इसलिए वहाँ वायरस विभाजित होता रहता है। और विभाजन से म्युटेशन की संभावना बढ़ती है। जैसे ही वायरस म्यूटेट होता है तब वह पुन: शरीर के भीतर प्रवेश कर जाता है और न्युमोनिया उत्पन्न करता है।

एम्स और आईसीएमआर कोविड 19 नेशनल टास्क फोर्स की मैनेजमेंट गाइडलाइंस- इसके तहत कोविड 19 के केसेज को तीन समूहों में बांटा गया है-

माइल्ड कोविड 19-जिन कोविड 19 मरीजों में ऊपरी श्वसन तंत्र संक्रमण के लक्षण यानी नाक बहना, नाक बंद होना, आँखों से पानी आना, खांसी आना और गले में खराश होना अथवा बुखार आता है उनको इस श्रेणी में रखा गया है। जिन मरीजों को सांस लेने में तकलीफ है अथवा जिनका ऑक्सीजन सेच्युरेशन 93 प्रतिशत से कम है उनको पृथक रखा गया है। इस वर्ग के मरीजों को होम आइसोलेशन की सलाह दी जाती है, जिसमें निम्न बातों का ध्यान रखना होता है-

1. घर के अन्दर भी मास्क का उपयोग करना, 2 गज की शारीरिक दूरी बनाए रखना, नाक और मुँह पर हाथ लगाने से पहले और बाद में हाथ साबुन से धोना अथवा सेनिटाइज करना।
2. मल्टीविटामिन, जिंक इसके अलावा लक्षणों के अनुसार पेरासिटामोल, कफ सिरप और एंटी हिस्टामिनिक जैसे दवाओं को लेना।
3. शरीर में हाइड्रेशन को बनाए रखने के लिए दिन में कम से कम 2-3 लीटर पानी पीना।
4. दिन में कम से कम 2-3 बार भाप लेना।
5. थर्मामीटर और ऑक्सीमीटर की मदद से अपना तापमान और ऑक्सीजन लेवल चैक करते रहना।

इस श्रेणी के मरीजों को निम्न लक्षणों के आने पर तुरंत अपने नजदीकी चिकित्सालय में संपर्क करना चाहिए-

1. सांस लेने में तकलीफ होना।
2. शरीर का तापमान बहुत ज्यादा बढ़ जाना (102 डिग्री सेल्सियस या उससे ज्यादा)/बहुत ज्यादा खांसी होना, खासकर जब यह सब 5 से ज्यादा दिन हो।
3. हाई रिस्क मरीजों में जैसे- मधुमेह, हार्ट फेल्योर, लंबे समय से चल रही दिल, फेफड़ों एवं गुर्दो की बीमारी, कैंसर, अंग प्रत्यापन के मरीज, मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर इत्यादि के रोगी और जिनकी उम्र 60 वर्ष से ज्यादा हो।

मॉडरेट कोविड 19- जिन कोविड 19 मरीजों में सांस लेने की गति प्रति मिनट 24 से ज्यादा है अथवा जिनकी ऑक्सीजन सेच्युरेशन

Rajasthan Health Education Department

90 से 93 के बीच में हो उन्हें इस श्रेणी में रखा गया है और उनको वार्ड में भर्ती करने की सलाह दी जाती है।

सिवियर कोविड 19– जिन कोविड 19 मरीजों में सांस लेने की गति प्रति मिनट 30 से ज्यादा हो अथवा जिनकी ऑक्सीजन सेच्युरेशन 90 प्रतिशत से कम हो उन्हें इस श्रेणी में रखा गया है और उनको आई. सी. यू में भर्ती करने की सलाह दी जाती है।

बचाव एवं सावधानियाँ–

1. **वैक्सीन एवं बूस्टर डोज–** इनसे नए संक्रमण का खतरा 70–80 प्रतिशत कम हो जाता है और कोविड–19 के गंभीर रूप से बचाव होगा।
2. एन 95 के साथ–साथ घर पर बने कपड़े के मास्क भी (बशर्ते वो मास्क जो कि वो नाक और मुँह को अच्छे से ढकता हो) बहुत कारगर है। मास्क कोरोना को रोकने एवं इसके म्यूटेशन की दर को कम करने के लिए उपयोगी है।
3. सर्दी जुखाम, बुखार, सांस लेने में तकलीफ, बदन दर्द, सीने में दर्द, स्वाद और सुंघने की शक्ति का चले जाना ये सभी कोरोना के लक्षण है। इन लक्षणों के होने पर तुरंत अपने नजदीकी चिकित्सालय से जाँच करवानी चाहिए। कोरोना की पिछली लहर में बहुत से रोगी बीमारी की प्राथमिक अवस्था में डॉक्टर की सलाह के बिना स्टेरॉइड एवं अन्य दवा लेने से गंभीर स्थिति में पहुँच गए थे। इसलिए डॉक्टर की सलाह पर ही दवाई लेनी चाहिए। जाँच का परिणाम आने तक अपने आप को आइसोलेट रखें और यदि परिणाम पॉजिटिव हो तो 7 दिन के लिए अपने आप को आइसोलेट करें।
4. घर पर एक ऑक्सीमीटर जरूर रखें, यदि आप कोविड पॉजिटिव है और आपको डॉक्टर द्वारा होम आइसोलेशन की सलाह दी गई है तो दिन में दो बार अपना ऑक्सीजन लेवल जरूर चैक करें, चेक करने के लिए दाएं हाथ के दूसरी उंगली में ऑक्सीमीटर लगाकर एक स्थाई रीडिंग का इंतजार करें, रीडिंग 93 प्रतिशत से कम होने पर डॉक्टर की सलाह अवश्य लेवें।
5. अपने नाक और मुँह को हाथ लगाने से पहले और बाद में साबुन से हाथ जरूर धोएं अथवा सैनिटाइजर का इस्तेमाल करें। सैनिटाइजर के असरदार होने के लिए इसमें अल्कोहल की मात्रा 60 से 80 फीसदी होनी चाहिए।
6. दरवाजे के हैंडल, कड़ी इत्यादि की सफाई के लिए डिटर्जेंट और सोडियम हाइपोक्लोराइड (ब्लीच) का उपयोग कर सकते हैं।
7. घर के 60 वर्ष से अधिक आयु के सदस्य और सहरूग्ण (Comorbid) अवस्था यानी सहरूग्ण परिस्थितियाँ जैसे मधुमेह, हार्ट फेल्योर, लंबे समय से चल रही दिल, फेफड़ों एवं गुर्दों की बीमारी, कैंसर, अंग प्रत्यापन के मरीज, मोटापा, हाई ब्लड प्रेशर इत्यादि के सदस्यों का खास तौर पर ख्याल रखें और उनमें लक्षण आने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। इन सभी मरीजों को आईसीएमआर और एम्स की गाइडलाइंस के अनुसार हाई रिस्क ग्रुप में रखा गया है।
8. सार्वजनिक स्थलों पर थूकना नहीं चाहिए।

आईसीएमआर की नई गाइडलाइंस
(10 जनवरी 2022)

इसके तहत इन 5 समूहों को कोविड 19 का टेस्ट करवाने की जरूरत नहीं होगी–

1. समुदाय के ऐसे लोग जिन्हें कोई लक्षण नहीं है।
2. लैब टेस्ट से पुष्टित कोविड 19 संक्रमित केस के संपर्क में आए लोग जिन्हें कोई सहरूग्ण परिस्थिति ना हो और जिनकी आयु 60 वर्ष से कम हो।
3. ऐसे मरीज जिन्हें कोरोना होम आइसोलेशन गाइडलाइन के तहत डिस्चार्ज किया गया है।
4. इलाज के बाद कोविड फैसिलिटी से डिस्चार्ज मरीज।
5. अंतर राज्य यात्रा कर रहे यात्री।

इन सभी गाइडलाइंस का विशेष मकसद संसाधनों और टेस्टिंग किट का उचित उपयोग और उनके अपव्यय को रोकना है। कोविड से संबंधित किसी भी तरह के चिकित्सकीय परामर्श के लिए 181 पर कॉल करें।

एम.बी.बी.एस.
माताजी के मंदिर के पास,
पुरानी गिन्नाणी, बीकानेर (राज.)
मो:7976500137

शिक्षा निदेशक स्टेट कमिश्नर स्काउट नियुक्त

बीकानेर- राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर के स्टेट कमिश्नर स्काउट पद पर शिक्षा निदेशक श्री काना राम (आइएएस) ने सोमवार को कार्यग्रहण किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त मानमहेन्द्रसिंह भाटी ने बताया कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के स्टेट चीफ कमिश्नर एवं मुख्य सचिव राजस्थान सरकार निरंजन आर्य ने 01 जनवरी 2022 को यह नियुक्ति प्रदान की है। सोमवार को श्री काना राम ने स्टेट कमिश्नर स्काउट के पद पर कार्य ग्रहण करते हुए कहा कि स्काउट गाइड गतिविधियों से बालक-बालिकाओं का सर्वांगीण विकास होता है। विद्यार्थियों में शिष्टाचार एवं अनुशासन विकसित करने के लिए इन गतिविधियों का विद्यालयों में समुचित संचालन हो, इसके सभी प्रयास किए जाएंगे। साथ ही आपने शिविर केन्द्र एवं मण्डल मुख्यालय का विजिट करने की बात भी कही।

इस अवसर पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड सुयश लोढ़ा, सी ओ स्काउट जसवंत सिंह राजपुरोहित, सी ओ गाइड ज्योतिरानी महात्मा, लीडर ट्रेनर घनश्याम स्वामी, महेश कुमार शर्मा ने उपस्थित रहकर बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित की।

बीकानेर मण्डल चीफ कमिश्नर एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी राजकुमार शर्मा, मण्डल कोषाध्यक्ष मनोज तंवर ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की है।

–मानमहेन्द्र सिंह भाटी
सहायक राज्य संगठन आयुक्त

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

परीक्षा विशेष

बोर्ड परीक्षा की तैयारी कैसे करें

❒ जयश्री वर्मा

आगामी मार्च माह में बोर्ड कक्षाओं की परीक्षाएँ आरंभ होने वाली है। परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की योग्यता, बौद्धिक क्षमता, ज्ञान, परिश्रम, आत्मविश्वास, धैर्य, दृढ़ता, प्रस्तुतीकरण आदि गुणों की जाँच करना है। विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान और विषय के बारे में जानकारी को परखने के लिए परीक्षाएँ आयोजित की जाती है। अध्यापक विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी किस प्रकार करवाएँ कि विद्यार्थी परीक्षा परिणाम में अव्वल रह सकें, के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें विस्तार से साझा की जा रही है जो विद्यार्थियों के लिए परीक्षा तैयारी में सहायक सिद्ध होगी।

सर्वप्रथम अध्यापक को विद्यार्थी से समय-सारणी बनवानी चाहिए। समय-सारणी में प्रत्येक विषय को शामिल करते हुए कठिन से सरल विषय हेतु ज्यादा से कम समय का सुव्यवस्थित तरीके से निर्धारण करें। यदि विद्यार्थी अपनी समय-सारणी निर्धारण के अनुसार तैयारी करते हैं तो निश्चित रूप से सफलता के अवसर बढ़ते हैं। परीक्षा तैयारी हेतु लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण एकाग्रता, दृढ़ता, धैर्य, सकारात्मक सोच, तनाव रहित शांत मस्तिष्क से सम्पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कठिन परिश्रम करें। अपने शत प्रतिशत प्रयास के साथ स्वयं को बेहतर ही नहीं बेहतरीन साबित करें।

प्रत्येक विषय को बराबर समय दें, किसी भी विषय को कम नहीं आंके। किसी भी विषय के प्रति मन में डर या द्वंद्व की स्थिति न बन पाए। परीक्षा तैयारी हेतु अध्यापक विद्यार्थियों को शॉर्ट नोट्स बनवाएं। पॉइन्ट्स बनाकर याद करवाएं। याद करने के लिए सरल से कठिन विषयवस्तु की तरफ बढ़ें जिससे कि विद्यार्थी की रुचि विकसित होती जाएगी। एक निश्चित समय के पश्चात या टॉपिक की तैयारी के पश्चात अध्यापक विद्यार्थियों का टेस्ट लेवें और जानने का प्रयास करें कि उनकी तैयारी कैसी हुई है। पढ़ाई में नियमितता की भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वर्षभर यदि नियमित रूप से पढ़ा जाए तो परीक्षा

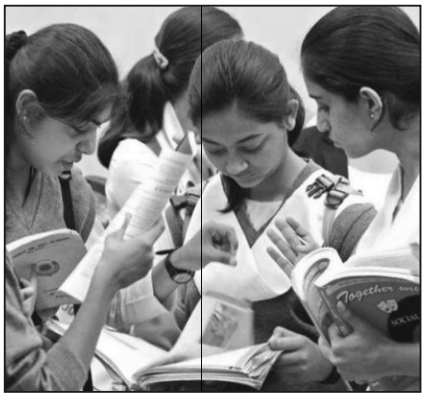

नजदीक आने पर एक साथ सभी विषयों में सब कुछ याद करने का वजन नहीं बढ़ेगा। नियमितता विद्यार्थियों की सफलता की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी और सीढ़ी है।

अध्यापक को परीक्षा तैयारी हेतु पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन कराना चाहिए। इसके लिए निर्धारित ब्लू प्रिंट की सहायता लेनी चाहिए कि किस पाठ/यूनिट/प्रश्नावली/टॉपिक से किस तरह के (वस्तुनिष्ठ, अति लघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक, निबंधात्मक) प्रश्न आएंगे व कौनसा प्रश्न अधिक या कम अंकों का है। अधिक अंक वाले प्रश्नों की तैयारी पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसके लिए पुराने प्रश्न-पत्रों की सहायता लें। इन प्रश्न-पत्रों को हल करके विद्यार्थी स्वयं भी अपनी तैयारी का बखूबी आंकलन कर सकते हैं। सभी विषयों में बार-बार रिवीजन करें। जो भी आपने पढ़ा है उसमें से पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रश्नों के अलावा अध्यापक विद्यार्थियों से भी प्रश्न बनवाने का अभ्यास करवाएँ, विद्यार्थी स्वयं भी प्रश्न बनाने की कोशिश करें और साथ ही उनके उत्तर लिखने का भी अभ्यास करें। कठिन प्रश्नों का अधिक रिवीजन करें।

विद्यार्थी प्रति विषय के लिए निर्धारित समय के पश्चात कुछ समय के लिए अंतराल लेकर पुनः पढ़ाई करने में जुट जाए जिससे कि अगले विषय के अध्ययन के लिए पूर्ण ताजगी से उत्साहपूर्वक तैयारी कर सके। कभी भी लेटकर न पढ़े, कुर्सी-टेबल पर बैठकर ही पढ़े जिससे कि पढ़ा हुआ अच्छी तरह याद रहें, अन्यथा लेटकर पढ़ने से आलस्य छाने लगता है व पढ़ा हुआ याद नहीं रह पाता है। अधिक समय तक पढ़ाई करने पर बोरियत महसूस होने लगे तो विद्यार्थी अपना रुचिकर विषय पढ़े या निश्चित समय के लिए शारीरिक मेहनत वाला कोई खेल खेले जिससे कुछ मनोरंजन हो सके पर सोशल मीडिया से उपयुक्त व आवश्यक दूरी भी बनाए रखें।

समय-समय पर विद्यार्थियों को समूह अध्ययन भी करना चाहिए। अध्यापक के द्वारा बनाए गए समान स्तर के विद्यार्थियों के साथ समूह अध्ययन करने से आप अपनी तैयारी का आंकलन कर सकते हैं। साथ ही प्रतियोगिता की शुद्ध भावना रखते हुए आपस में एक-दूसरे का टेस्ट भी ले ताकि आपका मूल्यांकन हो सके एवं अध्यापक भी समय-समय पर विद्यार्थियों का टेस्ट लेकर मूल्यांकन कर उन्हें उनकी प्रगति के बारे में अवगत करवाते रहें। परीक्षा समय में स्वास्थ्य के प्रति पूर्णतः सजग रहें। 6 से 8 घण्टे की भरपूर नींद लेवे जिससे मस्तिष्क चुस्त-दुरुस्त रहें व अगले दिन और बेहतर तैयारी कर सके।

परीक्षा में प्रश्न-पत्र हल करते समय सबसे पहले अच्छी तरह से आने वाले प्रश्नों को हल करें तथा उन्हें हल करने में आवश्यकतानुसार समय देवें ताकि कोई भी प्रश्न छूटे नहीं। पूरा प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात एक बार चैक अवश्य कर ले कि कोई भी प्रश्न छूटा तो नहीं। इस तरह से अध्यापक विद्यार्थियों को पूर्ण एकाग्रचित्तता, कठिन परिश्रम, समय-सारिणी निर्धारण, समय प्रबंधन के साथ उक्त महत्त्वपूर्ण बातों का अनुसरण करवाते हुए तैयारी करवाएँ तो परीक्षा में उत्तम परिणाम के अवसर बढ़ेंगे और विद्यार्थी सफलता का वरण करेंगे।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कल्याणपुरा
रोहितान, सरदारशहर, चूरू (राज.)
मो: 8890126020

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2022

1. **पदोन्नति में दिव्यांगजनों के लिए प्रत्येक संवर्ग में 4 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के संबंध में।**
2. **वर्तमान कोविड परिस्थितियों के चलते आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना।**
3. **राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के संचालन के संबंध में नवीन दिशा निर्देश।**

1. पदोन्नति में दिव्यांगजनों के लिए प्रत्येक संवर्ग में 4 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/संस्था/वरि./के-1/दि.प.आ./2021 दिनांक : 21.01.2022 ● समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा विभाग ● विषयः पदोन्नति में दिव्यांगजनों के लिए प्रत्येक संवर्ग में 4 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान के संबंध में। ● संदर्भः कार्मिक विभाग का पत्रांक प-14(36)कार्मिक/क-2/2007 पार्ट-1, जयपुर दिनांक 01.12.2021।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि कार्मिक विभाग द्वारा पदोन्नति में भी दिव्यांगजनों के लिए प्रत्येक संवर्ग में 4% आरक्षण प्रावधान करते हुए संदर्भित परिपत्र द्वारा उक्त बाबत नवीन निर्देश जारी किए गए हैं। कार्मिक विभाग के संदर्भित परिपत्र की प्रति संलग्न प्रेषित कर आदेशित किया जाता है कि परिपत्र में अंकित निर्देशों की क्षेत्राधिकार में अक्षरशः पालना सुनिश्चित करते हुए अग्रांकित विवरणानुसार वांछित कार्यवाही संलग्न प्रेषित निर्धारित समय रेखा के अनुरूप निष्पादित कर सूचित करावेंः-

1. संभाग क्षेत्राधिकार में अधीनस्थ नियुक्ति अधिकारियों, जिनके द्वारा किसी संवर्ग विशेष की वरिष्ठता सूचियों का संधारण किया जाता है, उन्हें संलग्न प्रेषित समय रेखा के अनुरूप उनके द्वारा संधारित समस्त वरिष्ठता सूचियों में पात्र दिव्यांग कार्मिकों से संलग्न प्रेषित निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्राप्त कर उनकी दिव्यांग पात्रता की चिह्नित श्रेणी सहित पुष्टि उपरांत संबंधित वरिष्ठता सूचियों में प्रविष्टि की सुनिश्चितता किए जाने हेतु आदेशित करें। साथ ही उक्त समस्त अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा वांछित कार्य निष्पादन की पूर्णता बाबत प्रमाण पत्र प्राप्त कर कार्यालय अभिलेखों में सुरक्षित रखें तथा उक्त समस्त प्रविष्टियों का अंकन आवश्यकतानुसार संभाग कार्यालय के अभिलेखों में भी तत्काल किए जाने की सुनिश्चितता कराए। यह ध्यान रहे कि सम्बन्धित कार्यालयाध्यक्ष द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यरत समस्त दिव्यांगजन की बैंचमार्क दिव्यांगता श्रेणी की विशिष्टियों का अंकन संलग्न प्रेषित निर्धारित आवेदन पत्र की सम्यक पूर्ति उपरान्त सम्बन्धित के सेवा अभिलेखों में यथास्थान किया जाकर आवेदन पत्र सम्बन्धित नियुक्ति अधिकारी/संयुक्त निदेशक को सलंग्न प्रेषित समय रेखा के अनुसार अग्रेषित किया जाएगा।
2. मंडल अधिकारी के रूप में स्वयं आपके द्वारा जिन संवर्गों हेतु सक्षम अधिकारी के नाते वरिष्ठता सूचियों का संधारण किया जाता है, उन वरिष्ठता सूचियों में बैंचमार्क दिव्यांग पात्रता की सम्यक पुष्टि उपरांत यथास्थान प्रविष्टि की सुनिश्चितता करते हुए उक्त बाबत जारी समस्त आदेशों की प्रतियाँ (हार्ड कॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी में) दिनांक 25.02.2022 तक इस कार्यालय को भिजवाए जाने की सुनिश्चितता कराए। उक्त विषयक कार्य पूर्णता का प्रमाण पत्र भी संलग्न प्रेषित समय रेखा के अनुरूप इस कार्यालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।
3. संभाग क्षेत्राधिकार के विद्यालयों/कार्यालयों में कार्यरत समस्त प्राध्यापक एवं समकक्ष/प्रधानाध्यापक एवं समकक्ष/प्राचार्य एवं समकक्ष तथा उच्चस्थ अधिकारियों में से पात्र दिव्यांग अधिकारियों का समेकित विवरण निम्नांकित प्रारूप में अधिकृत सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी दिव्यांगता प्रमाण-पत्र की सत्यापित प्रति के साथ दिनांक 25.02.2022 तक इस कार्यालय के वरिष्ठता अनुभाग में हार्ड कॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी (MS Excel फॉन्ट DevLys 010) में भिजवाए जाने की सुनिश्चितता करावेंः-

क्र. सं.	नाम अधिकारी	जन्म तिथि	एम्प्लोई आईडी	संवर्ग में मूल पद एवं वरिष्ठता क्रमांक मय वर्ष	पद एवं पदस्थापन स्थान	बैंचमार्क दिव्यांगता की श्रेणी	विशेष विवरण
1	2	3	4	5	6	7	8

4. उपर्युक्त निर्देशित कार्यवाही के सम्यक एवं समयबद्ध निष्पादन हेतु संभाग क्षेत्राधिकार में इसका समुचित प्रचार-प्रसार करते हुए समस्त अधीनस्थ अधिकारियों को भी उक्त बाबत पाबंद करने की सुनिश्चितता करें।
5. संभाग क्षेत्राधिकार में समस्त अधीनस्थ अधिकारियों तथा पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों/संस्थाप्रधानों/कार्यालयाध्यक्षों को उनके स्वयं तथा अधीनस्थ कार्मिकों के शाला दर्पण पोर्टल पर व्यक्तिगत विवरण (प्रपत्र-10) में संबंधित बैंचमार्क दिव्यांगता की प्रविष्टि संबंधित कार्मिक से प्राप्त अधिकृत सक्षम पदाधिकारी द्वारा जारी दिव्यांगता प्रमाण पत्र की पुष्टि उपरान्त नियमान्तर्गत कर शाला दर्पण में उक्त प्रविष्टि तत्काल किए जाने हेतु पाबंद करें। साथ ही उक्त आवेदन-पत्र मय सत्यापित दिव्यांगता प्रमाण-पत्र को संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी/संभागीय संयुक्त निदेशक (उपरांकित निर्देशानुरूप जहाँ भिजवाया जाना हो) को भिजवाए जाने हेतु निर्देशित करें।

उपर्युक्त निर्देशित कार्यवाही को निर्धारित समयावधि में सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते हुए ठोस कार्य योजना निर्मित कर निष्पादित करवाए जाने की सुनिश्चितता करें।

● संलग्न : यथोक्त

● **(काना राम)** आइ.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

Rajshan Education Department सत्यमेव जयते

(Time Line - समय रेखा)

क्र. सं.	आवेदन प्रक्रिया के चरण	निर्धारित समय सीमा
1.	कार्मिक द्वारा नियंत्रण अधिकारी को निर्धारित प्रारूप में बैंचमार्क दिव्यांगता प्रमाण-पत्र के साथ आवेदन पत्र प्रस्तुतीकरण	15.02.2022 तक
2.	नियंत्रण अधिकारी द्वारा परीक्षण/तस्दीक कर नियुक्ति अधिकारी/DEO/JD (यथा निर्देशित) को अग्रेषण	18.02.2022 तक
3.	संभागीय संयुक्त निदेशक द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त आवेदनों के समेकन उपरान्त निर्धारित प्रारूप में सूचना मय वांछित प्रमाण-पत्र निदेशालय को भिजवाना	25.02.2022 तक

बैंचमार्क दिव्यांगता की वरिष्ठता सूची में प्रविष्टि हेतु आवेदन-पत्र

● संदर्भ : कार्मिक विभाग का निर्देश परिपत्र क्रमांक : प.14(36)कार्मिक/क-2/2007 पार्ट-I, जयपुर, दिनांक : 01.12.2021

1.	नाम कार्मिक.....
2.	जन्म दिनांक.....
3.	सेवा संवर्ग का नाम एवं मूल पद.....
4.	स्थाई/परिवीक्षाधीन.....
5.	वर्तमान पदस्थापन स्थान.....
6.	वर्तमान पदस्थापन स्थान पर पदनाम.....
7.	एम्प्लॉई आईडी.....
8.	वरिष्ठता सूची में पूर्व से नामांकन होने पर- जिला/मण्डल/राज्यस्तरीय वरिष्ठता क्रमांक मय चयन वर्ष
9.	वरिष्ठता सूची में नाम अंकन न होने पर-
	(i) डीपीसी चयन वर्ष एवं पदोन्नत पद पर कार्यग्रहण तिथि-.....
	(ii) आरपीएससी चयन वर्ष मय मेरिट क्रमांक/प्राप्तांक प्रतिशत मय विषय एवं कार्यग्रहण तिथि.....
10.	बैंचमार्क दिव्यांगता का विवरण :
	(अ) दृष्टि बाधित और अल्पदृष्टि.....
	(ब) श्रवण बाधित.....
	(स) सेरेब्रल पाल्सी, कुष्ठ रोग, बौनापन, एसिड पीड़ित, माँसपेशियों की डिस्ट्रोफी सहित समस्त चलन-निःशक्तता
	(द) (1) ऑटिज्म, बौद्धिक निःशक्तता, लर्निंग निःशक्तता एवं मानसिक रुग्णता.....
	(2) बहुविकलांगता (उपरोक्त ग्रुप अ से द तक में वर्णित निःशक्तता एवं श्रवण शक्ति का ह्रास एवं दृष्टि बाधित सहित)।.....
11.	विशेष विवरण.....

दिनांक-

(हस्ताक्षर आवेदक)
नाम.....
पद.....
पदस्थापन स्थान.....

❑ नियंत्रण अधिकारी/कार्यालयाध्यक्ष द्वारा अग्रेषण ❑

क्रमांक : दिनांकः

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री..... पद.....द्वारा उपर्युक्त आवेदन पत्र में अंकित विशिष्टियों की जाँच सेवाभिलेख में उपलब्ध अभिलेख से कर ली गई है तथा सत्यापन उपरान्त यथास्थान प्रविष्टि कर दी गई है। प्रस्तुत दस्तावेजों के परीक्षण उपरान्त यह पाया गया है कि कार्मिक विभाग के संदर्भित परिपत्र दिनांक 01.12.2021 के परिप्रेक्ष्य में बैंचमार्क दिव्यांगता के अंकन हेतु प्रकरण उपयुक्त है।

हस्ताक्षर नियंत्रण अधिकारी
मय नाम एवं मुहर

सीधी भर्ती और पदोन्नति में दिव्यांगजन को आरक्षण देने के संबंध में।

● कार्मिक (क-2) विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांक प.14(36)कार्मिक/क-2/2007 पार्ट-1, जयपुर दिनांक 01.12.2021 ●1. समस्त अति. मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/शासन सचिव 2. समस्त विभागाध्यक्ष (संभागीय आयुक्त एवं जिला कलेक्टर्स) सहित। ● परिपत्र।● विषयः सीधी भर्ती और पदोन्नति में दिव्यांगजन को आरक्षण देने के संबंध में।

इस विभाग के समसंख्यक परिपत्र दिनांक 29.8.2019 के द्वारा दिव्यांगजनों (विशेष योग्यजनों) (Persons with Disabilities) को सीधी भर्तियों में आरक्षण देने के लिए रोस्टर बिन्दु निर्धारित करने एवं रोस्टर पंजिका संधारित करने के संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग में अधिसूचना क्रमांक प. (10) एस ए पी/एक्ट/15374 दिनांक 14 अक्टूबर 2021, जिसका प्रकाशन राजस्थान राजपत्र में दिनांक 21.10.2021 को हुआ है, द्वारा दिव्यांगजनों के लिए प्रत्येक संवर्ग में 4 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है, जिसके आधार पर दिव्यांगजनों को पदोन्नति में भी आरक्षण देय है। दिव्यांगजन आरक्षण के संबंध में इस विभाग द्वारा पूर्व में जारी समस्त निर्देशों के अतिक्रमण में यह नवीन निर्देश जारी किए जा रहे हैं।

राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2018 में वर्णित दिव्यांगजन की प्रत्येक श्रेणी को एक-एक प्रतिशत आरक्षण निम्नानुसार देय है-

(अ) दृष्टिबाधित और अल्पदृष्टि।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

(ब) श्रवण बाधित।

(स) सेरेब्रल पाल्सी, कुष्ठ रोग, बौनापन, एसिड पीड़ित, माँसपेशियों की डिस्ट्रोफी सहित समस्त चलन-निःशक्तता।

(द) (1) ऑटिज्म, बौद्धिक निःशक्तता, लर्निंग निःशक्तता एवं मानसिक रुग्णता।

(2) बहुविकलांगता उपर्युक्त ग्रुप-अ से द तक में वर्णित निःशक्तता एवं श्रवण शक्ति का ह्रास एवं दृष्टि बाधित सहित।

रिक्तियों का उक्त आरक्षण क्षैतिज माना जाएगा और बैंचमार्क दिव्यांगजन के लिए रिक्तियाँ एक अलग वर्ग के रूप में संधारित की जाएगी।

2. **दिव्यांगजन प्रमाण-पत्र-** दिव्यांगजन श्रेणी का लाभ प्राप्त करने के लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा अधिकृत सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण-पत्र आवश्यक होगा। सक्षम प्राधिकारी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा अधिकृत व्यक्ति होगा।

3. **आरक्षण हेतु पदों का चिह्नीकरण एवं आरक्षण में छूट-** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार की अधिसूचना दिनांक 4.1.2021 द्वारा निःशक्तता की विभिन्न श्रेणियों से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए उपयुक्त नौकरियों/पदों का चिह्नीकरण किया गया है। राज्य सरकार में पदों की भर्ती के समय दिव्यांगजन हेतु पद आरक्षित करने के लिए उक्त अधिसूचना एवं समय-समय पर अद्यतन अधिसूचनाओं का संदर्भ लिया जाएगा तथा इनमें वर्णित पदों की भर्ती में दिव्यांगजन हेतु पद आरक्षित किए जाएंगे। सामान्यतया सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों के लिए उपयुक्त चिह्नित पदों को दिव्यांगजन आरक्षण से मुक्त नहीं किया जाएगा।

परन्तु यह भी किसी पद का पदनाम भारत सरकार के पदनाम से भिन्न हो या कोई पद भारत सरकार के किसी विभाग में अस्तित्व में नहीं हो तो राज्य में किसी समकक्ष श्रेणी के पद को चिह्नित करने के लिए प्रकरण राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2018 के नियम 6 के अन्तर्गत गठित समिति को संदर्भित किया जाएगा। उक्त समिति किसी पद विशेष की कार्य की प्रकृति और पद के दायित्व के आधार पर समकक्ष पद पर चिह्नित करेगी।

यदि कोई नियुक्ति प्राधिकारी निःशक्तता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए आरक्षण के प्रावधान से किसी कार्य अथवा कतिपय पद से संबंधित कार्यों को अंशतः अथवा पूर्णतया मुक्त रखना आवश्यक समझे तो नियोक्ता प्राधिकारी द्वारा इसका पूर्ण औचित्य दर्शाते हुए निदेशक, विशेष योग्यजन, राजस्थान सरकार को प्रस्ताव प्रेषित किया जाएगा। निदेशक, विशेष योग्यजन द्वारा प्रकरण में छूट पर विचार किए जाने हेतु राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2018 के नियम 6 के तहत गठित समिति के समक्ष रखा जाएगा। समिति द्वारा समस्त तथ्यों पर विचार कर पद विशेष के लिए सीधी भर्ती में दिव्यांगजन की किसी विशेष श्रेणी अथवा सभी श्रेणियों में लिए आरक्षण से छूट प्रदान करेगी।

यह भी उल्लेखनीय है कि यदि कोई पद विशेष योग्यजन की किसी एक ही श्रेणी के लिए उपयुक्त होना चिह्नित किया गया है तो उस स्थिति में विशेष योग्यजन हेतु आरक्षित सभी 4 प्रतिशत पद विशेष योग्यजन की उसी श्रेणी से भरे जाएंगे।

4. **रिक्तियों का अग्रेषण एवं अन्तःश्रेणी परिवर्तन-** जहाँ किसी भर्ती वर्ष में कोई रिक्ति, उपयुक्त बैंचमार्क निःशक्तजन की अनुपलब्धता के कारण या किसी अन्य कारण से भरी नहीं जा सकी हो, तो ऐसी रिक्ति आगामी भर्ती वर्ष में अग्रेषित की जाएगी और यदि आगामी भर्ती वर्ष में भी उपयुक्त बैंचमार्क दिव्यांगजन उपलब्ध नहीं होता है, तो उसे प्रथमतः निःशक्तता की निर्धारित विभिन्न श्रेणियों में अन्तर परिवर्तन (Interchange) कर भरा जाएगा। अन्तर परिवर्तन करने के पश्चात भी यदि किसी रिक्ति हेतु कोई दिव्यांगजन उपलब्ध नहीं होता है उस रिक्ति को दिव्यांगजन के अलावा अन्य अभ्यर्थी से भरा जा सकेगा।

5. **अनारक्षित रिक्ति के विरुद्ध चयन-**जहाँ कोई पद दिव्यांगजन की सभी श्रेणिया या एक श्रेणी के लिए उपयुक्त हो तो उस पद की भर्ती में दिव्यांगजन के लिए रिक्ति आरक्षित नहीं होने पर भी बिना आरक्षण का लाभ लिए स्वयं की योग्यता पर चयनित होने के पात्रता रखने पर विशेष योग्यजन को उस पद के लिए प्रतियोगिता और चयन से वंचित नहीं किया जा सकता है। मापदण्डों में शिथिलन के बिना स्वयं की योग्यता से चयनित ऐसे विशेष योग्यजन अभ्यर्थियों को रोस्टर में अनारक्षित बिन्दुओं के विरुद्ध दर्शाया जाएगा तथा भविष्य में भर्ती के समय विशेष योग्यजन के लिए उपलब्ध होने वाली आरक्षित रिक्तियों के विरुद्ध समायोजित नहीं किया जाएगा।

6. **दिव्यांगजन को सीधी भर्ती में निम्न रियायतें देय होगी-**

(1) **आयु सीमा-** सीधी भर्ती में दिव्यांगजन अभ्यर्थियों को ऊपरी आयु सीमा में 5 वर्ष का शिथिलन देय होगा। आयु सीमा में यह शिथिलन नियमों में विभिन्न श्रेणियों में लंबवत व क्षैतिज आरक्षण श्रेणियों को देय शिथिलन के अतिरिक्त होगा।

(2) सेवा नियमों में जहाँ कहीं भी किसी भी पेपर के लिए न्यूनतम अर्हता /उत्तीर्णांक निर्धारित है, दिव्यांगजन को उसमें 5% की रियायत होगी।

7. **आरक्षण की गणना की पद्धति-** दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 की धारा 34 के प्रयोजन हेतु राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2018 के नियम 5 के अनुसार सीधी भर्ती से भरे जाने वाले पदों के संवर्ग में 4 प्रतिशत आरक्षण संदर्भित दिव्यांगजनों को देय होगा। दिव्यांगजन को सीधी भर्ती अथवा पदोन्नति में जैसी भी स्थिति हो, निर्धारित 4 प्रतिशत आरक्षण की गणना किसी सेवा संवर्ग में कुल पदों की संख्या को आधार मानते हुए की जाएगी।

उक्त अधिनियम की धारा 33 के अन्तर्गत चिह्नित निःशक्तजन के लिए किया गया आरक्षण एक क्षैतिज आरक्षण होगा और संदर्भित निःशक्तजन के लिए निर्धारित पद विशिष्ट प्रवर्ग के रूप में संचालित

होगा।

8. **पदोन्नति में आरक्षण–** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अधिसूचना दिनांक 14.10.2021, जिसका राजस्थान राजपत्र में दिनांक 21.10.2021 को प्रकाशन हुआ है। अतः यह अधिसूचना दिनांक 21.10.2021 को प्रभावी है। इस संबंध में स्पष्ट किया जा सकता है कि यदि विभाग द्वारा रिक्ति वर्ष 2021-22 में किन्हीं पदों की विभागीय पदोन्नति समिति आयोजित नहीं होने के कारण पदोन्नति की कार्यवाही नहीं की जा सकी है, तो अब उक्त अधिसूचना के प्रावधान के अन्तर्गत बैंचमार्क दिव्यांगजन को पदोन्नति में उक्तानुसार 4 प्रतिशत का आरक्षण दिया जाएगा परन्तु जिन विभागों द्वारा दिनांक 21.10.2021 से पूर्व दिव्यांगजन को पदोन्नति में बिना आरक्षण देते हुए विभागीय पदोन्नति समितियाँ आयोजित की जा चुकी है, इन्हें पुनः नहीं खोला जाएगा अर्थात ऐसी डी.पी.सी. को रिव्यू नहीं किया जाएगा।

9. **रोस्टर का संधारण–** दिव्यांगजन के लिए सीधी भर्ती और पदोन्नति के लिए अलग-अलग रोस्टर संधारित किया जाएगा। कार्मिक विभाग द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 29.08.2019 के निर्देशानुसार रोस्टर रजिस्टर सीधी भर्ती की भांति ही पदोन्नति में भी 100 अंकों का चक्र होगा। प्रत्येक चक्र 4 ब्लॉक में विभाजित किया जाएगा, जिसमें निम्नलिखित बिंदु शामिल है-

प्रथम ब्लॉक : रोस्टर रजिस्टर के क्र.सं. 01 से 25

द्वितीय ब्लॉक : रोस्टर रजिस्टर के क्र. सं. 26 से 50

तृतीय ब्लॉक : रोस्टर रजिस्टर के क्र.सं. 51 से 75

चतुर्थ ब्लॉक : रोस्टर रजिस्टर के क्र. सं. 76 से 100

रोस्टर रजिस्टर के क्रम सं. 1, 26, 51 एवं 76 वाले पद सीधी भर्ती व पदोन्नति दोनों में दिव्यांगजन हेतु क्षैतिज आधार पर आरक्षित रहेंगे। प्रत्येक विभाग में दिव्यांगजन हेतु संलग्न प्रपत्र 'अ' में निर्धारित प्रारूप में रोस्टर पंजिका का संधारण किया जाएगा।

10. **निःशक्तता से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए सम्पर्क अधिकारी–** प्रत्येक विभाग में दिव्यांगजन आरक्षण की अनुपालना के लिए एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाएगा। नोडल अधिकारी द्वारा विभाग के सभी सेवा संवर्गों में सीधी भर्ती एवं पदोन्नति में आरक्षण प्रावधानों की पालना सुनिश्चित करवाई जाएगी। नोडल अधिकारी द्वारा दिव्यांगजन हेतु रोस्टर पंजिका भी संधारित करवाई जाएगी तथा यह सुनिश्चित किया जाएगा कि आरक्षण रोस्टर पंजिका का संधारण सही तरीके से किया जा रहा है। दिव्यांगजन आरक्षण के संबंध में नोडल अधिकारी द्वारा प्रतिवर्ष रिपोर्ट विभागाध्यक्ष को प्रस्तुत की जाएगी।

सभी विभागों द्वारा दिव्यांगजन हेतु 4 प्रतिशत आरक्षण हेतु उपर्युक्तानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

● **(हेमन्त कुमार गेरा)** प्रमुख शासन सचिव

प्रपत्र 'अ'

विशेष योग्यजन हेतु रोस्टर पंजिका

(विभिन्न श्रेणियों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण)

ब्लॉक	आरक्षित रोस्टर बिन्दु	विशेष योग्यजन जनश्रेणी जिसके लिए आरक्षित है	भर्ती वर्ष	चयनित व्यक्ति का नाम	अग्रेषित आरक्षण (यदि कोई है)	टिप्पणी
1-25	01					
26-50	26					
51-75	51					
76-100	76					

नियुक्ति प्राधिकारी या अन्य
प्राधिकृत अधिकारी के हस्ताक्षर

2. वर्तमान कोविड परिस्थितियों के चलते आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-द/गुण. प्र./गुणवत्ता/61186/2021-22/01-09 दिनांक : 18.01.2022 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा, ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। ● समस्त पीईईओ/यूसीईईओ. ● समस्त संस्थाप्रधान सरकारी/गैर सरकारी विद्यालय। ● विषयः वर्तमान कोविड परिस्थितियों के चलते आगामी तीन माह की शिक्षण कार्य योजना। ● प्रसंगः राज. सरकार गृह विभाग आदेश क्रमांक पं. 7(1) गृह-7/2021 जयपुर दिनांकः 09.01.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के गृह विभाग द्वारा दिनांक 09.01.2022 को जारी **'महामारी सतर्क-सावधान जन अनुशासन दिशा-निर्देश'** द्वारा राज्य के समस्त नगर निगम/नगर पालिका क्षेत्र के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों के नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण को 30 जनवरी 2022 तक बंद किया गया हैं तथा ऑनलाइन शिक्षण जारी रखने के निर्देश प्रदान किए गए हैं। पिछले कुछ दिनों से प्रदेश में कोविड के नए वेरिएंट Omicron संक्रमण के बढ़ते मामलों के दृष्टिगत नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण स्वास्थ्य विभाग एवं गृह विभाग की गाइडलाइन के अनुरूप ही किया जाना है। विद्यार्थियों के अध्ययन की निरंतरता के लिए संचालित 'आओ घर में सीखें-2.0' तथा 'बैक टू स्कूल' कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को कोविड की परिस्थितियों में भी शिक्षण से जोड़ा रखे जाने के निरंतर प्रयास किए गए है। साथ ही गत सत्र की विस्मृत दक्षताओं अथवा लर्निंग गैप्स का आकलन भी विभाग द्वारा

Rajasthan Education Department

सुनियोजित योजनापूर्ण रूप से किया गया है।

विद्यार्थियों की अधिगम निरंतरता के उद्देश्य से विधिवत एवं सुनियोजित रूप से संचालित 'आओ घर में सीखें-2.0' तथा 'बैक टू स्कूल' कार्यक्रम के परिणामों को निखारने के क्रम में विभाग द्वारा 'जनवरी 2022 से मार्च 2022' के लिए 'STAR'(Set To Augment Result) पहल की जा रही है।

STAR कार्यक्रम के तहत निम्नांकित कार्य किए जाने हैं:-

- कक्षा 1-8 के लिए उपचारात्मक शिक्षण (Remediation Program)
- पाठ्यक्रम पूर्ण करने की योजना एवं इसकी समय सीमा।
- नवीन वेब एप के माध्यम से साप्ताहिक क्विज अभ्यास।
- पाठ्यक्रम पुनरावृत्ति (रिवीजन वर्कशीट, e-कक्षा के माध्यम से)।
- बोर्ड कक्षाओं के लिए प्रैक्टिस टेस्ट।

'बैक टू स्कूल' उपचारात्मक शिक्षण (Back to school-Remediation Program)- विभाग द्वारा नवीन सत्र 2021-22 के प्रारंभ से ही गत वर्ष में रहे लर्निंग गैप्स को दूर करने के लिए कक्षा 3 से 8 में अंग्रेजी, हिन्दी, गणित विषयों की इस क्लस्टर वर्कबुक से तीन माह के शिक्षण ब्रिज कार्यक्रम के पश्चात विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप उसके लर्निंग गैप्स को दूर करने की दिशा में कार्य प्रारंभ किया जाना है। इस हेतु-

1. विद्यार्थियों को उनके सीखने के स्तर के आधार पर बैक ग्रेड हेतु दक्षता आधारित लक्षित समर्थन (Targeted Support) दिया जाना है।
2. उपचारात्मक शिक्षण के लिए कार्यपुस्तिकाओं पहल, प्रयास, प्रवाह और प्रखर के भाग-2 का उपयोग किया जाना है।
3. सभी विद्यालयों में 20 जनवरी से शैक्षणिक वर्ष के अंत तक उपचारात्मक कार्यक्रम संचालित रहेगा।
4. प्रथम दो कालांश उपचारात्मक शिक्षण हेतु आवंटित किए जाने हैं।
5. विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के आधार पर विद्यार्थी समूहन किए जाने के लिए 21-24 जनवरी के मध्य कार्यपुस्तिका में दिए गए अंतिम मूल्यांकन किया जाना है।

   नोटः- कोविड परिस्थितियों के चलते जिन विद्यालयों में नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण स्थगित है उनके लिए अंतिम पंक्ति मूल्यांकन (End line assessment) का लिंक स्माइल मैसेज के साथ भेजा जाएगा। शिक्षक गण उक्त वर्णित अवधि में विद्यार्थियों तक इसकी पहुँच व मूल्यांकन किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
6. विद्यार्थियों के अंतिम पंक्ति मूल्यांकन में प्रदर्शन के आधार पर विद्यार्थी समूहन किया जाना है। जो कि निम्न सारणी के अनुरूप रहेगा।

कक्षा	मानदंड (कार्यपुस्तिका में अंतिम पंक्ति मूल्यांकन में आधार प्रदर्शन)	छात्र समूहन (LL= सीखने का स्तर)
कक्षा 3	सभी विद्यार्थियों को पीछे की बैक ग्रेड दक्षताओं को कवर करने के लिए	समूह-LL1-2
कक्षा 4-5	30% से कम स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL-2
	30-59% तक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL 3-4
	60% से अधिक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	At grade समूह
कक्षा 6-7	30% से कम स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL-4
	30-59% तक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL 5-6
	60% से अधिक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	At grade समूह
कक्षा 8	30% से कम स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL-5
	30-59% तक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	समूह-LL 6-7
	60% से अधिक स्कोर करने वाले विद्यार्थी	At grade समूह

7. विद्यार्थियों को उनके प्रदर्शन के आधार पर समूहित करने के पश्चात, समूहों को निम्नलिखित सारणी में उल्लिखित उनके सीखने के स्तर के अनुसार कार्यपत्रकों को हल करने का निर्देश देवे।

कक्षा	अंग्रेजी	हिन्दी	गणित
कक्षा 3	Learning level 1-2: Page 51 to Page 106	Learning level 1-2: Page 51 to Page 104	Learning level 1-2: Page 51 to Page 106
कक्षा 4, कक्षा 5	Learning level 2: Page 53 to Page 67 Learning level 3-4: Page 70 to Page 109	Learning level 2: Page 54 to Page 66 Learning level 3-4: Page 67 to Page 110	Learning level 2: Page 59 to Page 87 Learning level 3-4: Page 89 to Page 139
कक्षा 6, कक्षा 7	Learning level 4: Page 45 to Page 64 Learning level 5-6: Page 67 to Page 98	Learning level 4: page 50 to Page 64 Learning level 5-6: Page 66 to Page 97	Learning level 4: page 73 to Page 86 Learning level 5-6: Page 88 to Page 138
कक्षा 8	Learning level 5: Page 46 to Page 64 Learning level 6-7: Page 67 to Page 106	Learning level 5: page 50 to Page 65 Learning level 6-7: page 67 to Page 92	Learning level 5: page 68 to Page 90 Learning level 6-7: page 93 to Page 125

8. अंतिम रेखा मूल्यांकन में 60% से अधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को At grade समूह में रखा जाएगा। जो विद्यार्थी At grade समूह सीखने के स्तर पर हैं वे उपचारात्मक शिक्षण अवधि के दौरान कार्यपुस्तिका में स्वतंत्र रूप से कार्यपत्रकों का अभ्यास कर सकते हैं।
9. जिन विद्यालयों में नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण सुचारू रूप से संचालित है। वहाँ शिक्षकों द्वारा कालांश 1-2 में विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन किया जाए।
10. जिन विद्यालयों में कोविड परिस्थितियों में दृष्टिगत नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण फिलहाल स्थगित है वहाँ शिक्षक विद्यार्थी के होम विजिट के दौरान अथवा साप्ताहिक शिक्षक कॉल के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करेंगे।

    इस हेतु 21 जनवरी से पूर्व पृथक वी.सी. के माध्यम से विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान कर दिए जाएंगे।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

डिजिटल अध्ययन सामग्री प्रेषण व पाठ्यक्रम पूर्ण करने की योजना तथा टाइमलाइन– वर्तमान में राज्य के समस्त नगर निगम/नगर पालिका क्षेत्र के सभी विद्यालयों में कक्षा 12वीं तक 30 जनवरी 2022 तक बंद कर दिया गया हैं तथा ऑनलाइन शिक्षण जारी रखने के निर्देश प्रदान किए गए हैं तथा ग्रामीण परिक्षेत्र के सभी विद्यालयों में कक्षा-कक्ष संचालन सुचारू हैं। कोविड परिस्थितियों के दृष्टिगत विद्यालय संचालन परिस्थितियों के अनुरूप सभी कक्षाओं का पाठ्यक्रम ऑनलाइन/ ऑफलाइन माध्यम से पूर्ण करवाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

(i) ऑनलाइन माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्णता योजना:

- STAR कार्यक्रम के तहत संचालित सभी कार्यक्रमों से विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए एवं लर्निंग गैप्स की क्षतिपूर्ति की दिशा में सुनियोजित कार्ययोजना के अंतर्गत पूर्व की भाँति विद्यालयों में स्टूडेंट्स के कक्षावार व्हाट्सएप स्माइल ग्रुप में प्रतिदिन सुबह 8 बजे अध्ययन सामग्री तथा गृहकार्य वर्कशीट साझा की जाएगी।
- इन वितरित वर्कशीट्स को विद्यार्थियों द्वारा हल करके पुनः व्हाट्सएप ग्रुप में डाला जाना हैं। शिक्षकों द्वारा व्हाट्सएप ग्रुप्स से एकत्र करके स्कूल में बनाए गए विद्यार्थी पोर्टफोलियों में आवश्यक रूप से संधारित किया जाना है।
- जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, उनसे शिक्षकगण घर विजिट के समय वर्कशीट देकर आए तथा उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तक का उपयोग करके वर्कशीट को हल करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करें।
- विद्यार्थियों को इसमें आ रही समस्याओं का निवारण टीचर कॉलिंग अथवा विद्यार्थी के घर विजिट के समय किया जाना सुनिश्चित करें।
- विद्यार्थियों को सप्ताह में साझा की गई सामग्री के आधार पर प्रत्येक शनिवार को वेब एप आधारित क्विज प्राप्त होगा। जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुँच नहीं है, उन्हें शिक्षकों द्वारा उनके घर पर विजिट के समय क्विज को भी प्रिंट करके विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाया जाएगा। विद्यार्थी के द्वारा दिए गए उत्तरों को शिक्षक द्वारा रिकॉर्ड किया जाएगा।
- गृहकार्य व क्विज में शत-प्रतिशत विद्यार्थियों की भागीदारी को सुनिश्चित किया जाए।

(ii) ऑफलाइन माध्यम से पाठ्यक्रम पूर्णता योजना:-

- ऑनलाइन माध्यम कार्ययोजना के साथ नियमित कक्षा-कक्ष शिक्षण करवाया जाना हैं।
- संस्थाप्रधान ऑफलाइन एवं ऑनलाइन अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के अध्यापन में एकरूपता बनाए रखना सुनिश्चित करेंगे।
- विषयाध्यापक द्वारा प्राप्त ऑनलाइन शिक्षण सामग्री का अध्यापन उसी दिन कक्षा-कक्ष अध्यापन के दौरान करना होगा।
- ऑनलाइन शिक्षण सामग्री के प्रत्यय को प्रभावी व स्थाई अधिगम की आवश्यकता होने पर संबंधित प्रत्यय की शिक्षण सामग्री का अध्यापन करवाना होगा।
- जो शिक्षण सामग्री ऑनलाइन प्राप्त नहीं हो रही, उनका पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने हेतु उसका अध्यापन विषयाध्यापक द्वारा अध्यापन करवाना होगा।

पाठ्यक्रम पूर्णता हेतु निर्धारित समय सीमा :

- शिक्षण के निर्धारित दिवस घट जाने के कारण समस्त कक्षाओं हेतु 30% पाठ्यक्रम को कम कर RSCERT तथा BSER द्वारा जारी किया जा चुका है।
- अनुमत सिलेबस का **60% पाठ्यक्रम अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक पूर्ण** कराया जा चुका है।
- साथ ही स्माइल-3.0 के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री तथा अभ्यास हेतु वर्कशीट अनवरत पहुँचाई जा रही है तथा शिक्षकगणों द्वारा प्रति विद्यार्थी पोर्टफोलियों का संधारण किया जा रहा है।
- **बोर्ड कक्षाओं (कक्षा 8, 10 व 12) के लिए 20 फरवरी 2022 तक तथा गैर बोर्ड कक्षाओं (कक्षा 1-7, 9 व 11) के लिए 15 मार्च** तक संपूर्ण पाठ्यक्रम ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से पूर्ण करवाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

नवीन वेब एप के माध्यम से साप्ताहिक क्विज अभ्यास:

कोविड-19 संक्रमण के कारण सत्र 2021-22 में विद्यार्थियों की अध्ययन निरंतरता हेतु 'आओ घर में सीखें-2.0' कार्यक्रम के तहत स्माइल 3.0 के द्वारा प्रतिदिन विभिन्न विषयों के वीडियो लिंक तथा वर्कशीट के माध्यम से अध्यापन करवा, सप्ताह में साझा की गई सामग्री के आधार पर प्रत्येक शनिवार को व्हाट्सएप आधारित क्विज (प्रश्नोत्तरी) के माध्यम से विद्यार्थियों का आंकलन किया जा रहा है।

स्व-मूल्यांकन और उपचारात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए 22 जनवरी 2022 से साप्ताहिक क्विज आयोजन का एक नया, इंटरैक्टिव और आनंदमयी अभ्यास का प्रारंभ किया जा रहा हैं।

- इस नवाचार में साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी अभ्यास व्हाट्सएप के स्थान पर एक नवीन वेब एप (PWA=Progressive Web App.) पर होगा, जो विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल और रोचक है।
- विद्यार्थी इस वेब एप पर क्विज अभ्यास करने के पश्चात गलत हुए प्रश्नों का विश्लेषण वहाँ दिए गए लिंक पर क्लिक करके कर सकेंगे।
- साथ ही प्रश्न से संबंधित वीडियो लिंक पर क्लिक करके टॉपिक से संबंधित वीडियो भी देख सकेंगे।
- नवीन वेब एप (web.convegenius.ai) पर विद्यार्थियों को साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी अभ्यास के लिए विद्यार्थियों द्वारा चरणबद्ध प्रक्रिया अपनाई जानी है।
- इस संबंध में दिनांक 22 जनवरी 2022 से पूर्व वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विस्तृत दिशा-निर्देश दिए जाएंगे।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

पाठ्यक्रम पुनरावृत्ति योजना एवं टाइमलाइन :

- कोविड काल में राज्य सरकार के e-कक्षा कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षा सुचारू रूप से चलती रही। कक्षा 1 से 12 के लिए हिन्दी माध्यम, अंग्रेजी माध्यम तथा सांकेतिक भाषा (Sign language) में e-कक्षा के 10,000 से अधिक वीडियो निर्माण किया जाकर इन वीडियोज की डिजिटल लाइब्रेरी का संधारण किया गया है।
- वर्तमान में e-कक्षा से अध्ययन हेतु सामग्री 'Misssion Gyan' एप डाउनलोड कर इच्छित कक्षा/विषय के वीडियो लेसन को देख सकते हैं अथवा निम्नांकित QR कोड को स्कैन करने भी इस ऐप को डाउनलोड किया जा सकता है-

  (उक्त QR Code स्कैनर से उपर्युक्त कोड स्केन करने पर सीधे गूगल प्ले स्टोर के मिशन ज्ञान एप पर पहुँच जाएंगे, जहाँ से आप इस एप को डाउनलोड कर इच्छित कक्षा/विषय के वीडियो लेसन को देख सकते हैं।)

Mission Gyan Mobile Application

- संधारित डिजिटल लाइब्रेरी Blended Learning में सहयोगी है अतः e कक्षा डिजिटल लाइब्रेरी को **मिशन e-विद्यालय** के तहत चरणबद्ध रूप (Phasewise manner) में सभी जिलों तक वितरित किया जाना विभाग की प्राथमिकता हैं।
- जिन विद्यालयों में ICT फेज लैब संचालित है तथा विषय विशेष के शिक्षक का पद रिक्त है, वहाँ प्राथमिकता से e- कक्षा का डेटा ऑफलाइन उपलब्ध करवाया जाए।
- ICT Phase विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य उच्च प्रा./माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जहाँ भी कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट टी.वी. इत्यादि की सुविधा उपलब्ध हो तथा शिक्षक का पद रिक्त है वहाँ भी e- कक्षा डेटा की ऑफलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- संधारित e- कक्षा डिजिटल लाइब्रेरी से डेटा संग्रहण के लिए मिशन ज्ञान, जयपुर में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रतिनिधि (पत्र तथा उपर्युक्त GB की Hard disc/pendrive लेकर) व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अतिशीघ्र डेटा संग्रहण करे तथा अपने अधीनस्थ ब्लॉक्स में वितरित कर e कक्षा से अध्यापन कार्य प्रारंभन सुनिश्चित करें तथा पद रिक्त विद्यालयों में ICT फेज लैब में e- कक्षा डेटा की ऑफलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करें।

Phase	Timeline
Phase 1 (उद्गम)	20-28 जनवरी तक
Phase 2 (उन्नति)	28 जनवरी से 4 फरवरी तक
phase 3 (उत्कृष्ट)	4 से 11 फरवरी तक

- 11 फरवरी तक समस्त जिलों के ICT फेज विद्यालयों तथा जहाँ भी कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट टी.वी. इत्यादि की सुविधा उपलब्ध हो वहाँ e-कक्षा डेटा की ऑफलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- पाठ्यक्रम पूर्णता के पश्चात शिक्षकगण तथा विद्यार्थी स्वयं भी उपलब्ध e-कक्षा शिक्षण सामग्री का उपयोग करके रिवीजन कार्य को गति प्रदान करें यह अपेक्षित है।
- 20 फरवरी 2022 के पश्चात बोर्ड कक्षाओं के लिए रिवीजन वीडियो तथा रिवीजन वर्कशीट स्माइल मैसेज के माध्यम से भी शेयर किए जाएंगे।

बोर्ड कक्षाओं के लिए मॉडल प्रैक्टिस टेस्ट पेपर :

- कक्षा 8, 10 तथा 12 हेतु PWA= Progressive Web App. प्लेटफॉर्म के माध्यम से 20 फरवरी 2022 के पश्चात तीन-तीन मॉडल प्रैक्टिस टेस्ट पेपर उपलब्ध करवाए जाएंगे।
- कोविड परिस्थितियों के अनुरूप यह प्रैक्टिस परीक्षा प्रश्न पत्र ऑफलाइन या ऑनलाइन करवाए जाएंगे।

शाला दर्पण मॉड्यूल पर अद्यतन सूचना प्रविष्टि:-

- विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री की पहुँच, उपचारात्मक शिक्षण, निर्धारित टाइमलाइन के अनुरूप पाठ्यक्रम पूर्णता एवं रिवीजन, नवीन वेब एप (web.convegenius.ai) पर विद्यार्थियों के साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी अभ्यास की सभी सूचनाएँ शाला दर्पण पर उपलब्ध मॉड्यूल में शिक्षकों द्वारा साप्ताहिक रूप से अद्यतन की जानी नितांत आवश्यक हैं।

STAR कार्यक्रम संचालन व प्रभावी प्रबोधन के लिए मुख्य बिन्दु:

PEEO स्तर पर करणीय कार्य:-

- पत्र में दिए गए निर्देशों की क्रियान्विति सुनिश्चित करना।
- अपने अधीनस्थ विद्यालयों में स्माइल कन्टेन्ट की पहुँच सुनिश्चित करना।
- अधीनस्थ विद्यालयों में 'बैक टू स्कूल'-उपचारात्मक शिक्षण प्रक्रिया पूर्ण करना सुनिश्चित करेंगे।
- नवीन वेब एप द्वारा शत प्रतिशत विद्यार्थी क्विज अभ्यास से जुडे है यह सुनिश्चित करेंगे।
- निर्धारित समय सीमा में पाठ्यक्रम पूर्णता सुनिश्चित करेंगे।
- जिन विद्यालयों में डिजिटल बोर्ड/टी.वी./स्मार्ट क्लास है वहाँ पर ई-कक्षा वीडियों के माध्यम से ऑफलाइन शिक्षण सुनिश्चित करेंगे।

CBEO स्तर पर करणीय कार्य:-

- 'STAR' कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु CBEO स्तर पर ACBEO-I को नोडल अधिकारी बनाकर ब्लॉक स्तर की प्रति दिवस सुदृढ़ मॉनिटरिंग करेंगे।
- CBEO स्वयं अपने स्टाफ के अन्य सदस्यों, पीईईओ और यूसीईईओ (शहरी नोडल) के माध्यम से विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री की पहुँच, उपचारात्मक शिक्षण, निर्धारित टाइमलाइन के अनुरूप पाठ्यक्रम पूर्णता एवं रिवीजन, नवीन वेब एप

(web.convegenius.ai) पर विद्यार्थियों के साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी अभ्यास को सुनिश्चित करेंगे तथा विद्यालय निरीक्षण के दौरान उक्त कार्यों बाबत संबलन प्रदान करेंगे।

- पद रिक्त विद्यालयों के ICT फेज लैब में e-कक्षा डेटा की ऑफलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करेंगे तथा किन विद्यालयों में डाटा वितरित किया गया है, इसकी साप्ताहिक रिपोर्ट का संधारण कर सीडीईओ को प्रस्तुत करेंगे।

CDEO स्तर पर करणीय कार्य

- उक्तानुसार सीडीईओ भी स्वयं अपने कार्यालय के सहायक निदेशक को नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाए।
- डीईओ माध्यमिक तथा प्रारंभिक को ब्लॉक आवंटित कर प्रति दिवस विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री की पहुँच, उपचारात्मक शिक्षण, निर्धारित टाइमलाइन के अनुरूप पाठ्यक्रम पूर्णता एवं रिवीजन, नवीन वेब एप (web.convegenius.ai) पर विद्यार्थियों के साप्ताहिक प्रश्नोत्तरी अभ्यास को सुनिश्चितता की मॉनिटरिंग करेंगे।
- संधारित e-कक्षा डिजिटल लाइब्रेरी से डेटा संग्रहण के लिए मिशन ज्ञान, जयपुर में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी प्रतिनिधि (पत्र तथा उपर्युक्त GB की Hard disc / Pendrive लेकर) व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अतिशीघ्र डेटा संग्रहण करेंगे।
- साथ ही अपने अधीनस्थ ब्लॉक्स के ICT फेज विद्यालयों तथा जहाँ भी कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट टी.वी. इत्यादि की सुविधा उपलब्ध हो वहाँ e-कक्षा डेटा की ऑफलाइन उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- पद रिक्त विद्यालयों में e कक्षा डेटा से अध्यापन कार्य प्रारंभन की सुदृढ़ मॉनिटरिंग कर डेटा वितरण की पाक्षिक रिपोर्ट का संधारण कर संयुक्त निदेशक महोदय को प्रस्तुत करेंगे।
- जिला स्तर पर एक व्हाट्सएप ग्रुप पृथक से बनाया जाए जिसमें 'STAR' कार्यक्रम, डाटा वितरण की पाक्षिक रिपोर्ट 'बैक टू स्कूल' उपचारात्मक शिक्षण के तहत धरातल पर होने वाले कार्यों के छायाचित्र साझा किए जाए। इस व्हाट्सएप ग्रुप में अधोहस्ताक्षरकर्ता को अवश्य जोड़ा जाए।

संयुक्त निदेशक स्तर पर करणीय कार्य :

- संभाग स्तर पर अपने कार्यालय में 'STAR' कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु ADEO (शैक्षिक) को नोडल अधिकारी बनाकर संभाग की प्रति दिवस सुदृढ़ मॉनिटरिंग करेंगे।
- समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, निदेशालय, समसा कार्यालय, एससीईआरटी कार्यालय में कार्यरत RCSE जिला प्रभारी अधिकारी प्रति दिवस प्रभाग वाले किसी न किसी एक विद्यालय के शिक्षकों के साथ वीडियो कॉल द्वारा जुड़कर उनसे 'STAR' कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबलन प्रदान करेंगे।
- संभाग के कितने ICT फेज विद्यालयों में e-कक्षा का ऑफलाइन डेटा संधारण तथा वितरण किया गया है, इसकी संख्यात्मक सूचना से निदेशक महोदय को प्रत्येक माह जिला समीक्षा बैठक में अवगत करवाएंगे।
- जिला एवं ब्लॉक कार्यालय के अधिकारियों में विद्यालयों को आवंटित किया जाकर उनके व्हाट्सएप ग्रुप में जोड़ा जाए तथा उन विद्यालयों में विजिट कर विद्यार्थियों, अभिभावकों से ऑनलाइन/ ऑफलाइन सम्पर्क स्थापित करें।

• **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के संचालन के संबंध में नवीन दिशा निर्देश।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/विविध दिवस/2018-22/25 दिनांक : 09.01.2022 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा। ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा। ● समस्त पीईईओ/यूसीईईओ ● समस्त संस्थाप्रधान सरकारी/गैर सरकारी विद्यालय। ● विषयः राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के संचालन के संबंध में नवीन दिशा निर्देश ● प्रसंग : राज. सरकार गृह विभाग आदेश क्रमांक पं. 7(1) गृह-7/2021 जयपुर दिनांकः 09.01.2022 तथा इस कार्यालय से जारी SOP क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा-स/ विविध दिवस/ 2018-22/15 दिनांकः 06.01.2022 ।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत पिछले कुछ दिनों से प्रदेश में कोविड के नए वेरिएंट Omicron संक्रमण के लगातार बढ़ते मामलों की रोकथाम एवं बचाव हेतु राज्य सरकार के गृह विभाग के आदेश दिनांक : 09 जनवरी, 2022 के क्रम में, विभाग द्वारा राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के संचालन हेतु जारी समेकित (Consolidate) मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure) के निर्देश जारी किए जाते हैं, जो दिनांक : 10.01.2022 से लागू होंगेः-

1. राज्य के समस्त नगर निगम/नगर पालिका क्षेत्र में कक्षा 12 तक की शैक्षणिक (विद्यालय/कोचिंग) गतिविधियाँ दिनांक : 30 जनवरी, 2022 तक बन्द रहेगी परन्तु ऑनलाइन अध्ययन जारी रखा जाएगा। कक्षा 10 से 12 के विद्यार्थियों को कोविड वैक्सीन लगवाने एवं माता-पिता/अभिभावक की लिखित सहमति पश्चात अध्ययन से सम्बन्धित संशय/समस्याओं के निराकरण हेतु विद्यालय/कोचिंग जाने की अनुमति होगी।
2. विद्यालय की शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ एवं संस्थान आवागमन हेतु संचालित बस, ऑटो एवं कैब के चालक को दोनों खुराक (1-2nd dose) अनिवार्य रूप से लेनी होगी।
3. शैक्षणिक व अशैक्षणिक स्टाफ/विद्यार्थियों के आवागमन हेतु

संचालित स्कूल बस/ऑटो/कैब इत्यादि वाहन की बैठक क्षमता के अनुसार ही अनुमत होंगे।

4. शिक्षण संस्थानों में आने से पूर्व सभी विद्यार्थियों द्वारा अपने माता-पिता/अभिभावक से लिखित में अनुमति लेना अनिवार्य होगा। वे माता-पिता/अभिभावक जो अपने बच्चों को अभी ऑफलाइन अध्ययन हेतु संस्थान नहीं भेजना चाहते उन पर संस्थान द्वारा उपस्थिति हेतु दबाव नहीं बनाया जाएगा (Attendance optional) एवं उनके लिए ऑनलाइन अध्ययन की सुविधा निरंतर संचालित रखी जाए।

5. ऑनलाइन/डिस्टेंस लर्निंग जारी रहेगी एवं इसे प्रोत्साहित किया जाएगा।

6. अध्ययन अवधि के दौरान संस्थान में एवं आवागमन के दौरान फेस मास्क पहनना अनिवार्य होगा। **'No Mask No Entry'** की पालना आवश्यक है। किसी विद्यार्थी/स्टाफ द्वारा मास्क नहीं लगाया जाने पर संस्थान द्वारा मास्क उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जावें।

7. नियमित कक्षाओं के अध्ययन के लिए छात्रों की बैठक व्यवस्था इस प्रकार की जावे कि प्रत्येक छात्र के मध्य कम से कम दो गज की दूरी सुनिश्चित हो सके।

8. शिक्षण संस्थानों द्वारा प्रार्थना सभा (Assembly) एवं अन्य किसी प्रकार के भीड़-भाड़ वाले कार्यक्रमों का आयोजन नहीं किया जाए।

9. मुख्य द्वार पर प्रवेश एवं निकास के दौरान संस्थान परिसर, कक्षाओं में सामाजिक दूरी (दो गज की दूरी) का ध्यान रखा जावे एवं संस्थान में किसी भी स्थान पर विद्यार्थी/अभिभावक/कर्मचारी अनावश्यक रूप से एकत्र न हो। इसके साथ ही भिन्न-भिन्न कक्षाओं के आवागमन के समय में कुछ समय का अंतराल रखा जाए ताकि बड़ी संख्या में विद्यार्थी एकत्र न हो। संस्थान परिसर में स्थित कैंटीन को आगामी आदेश तक बंद रखा जाए।

10. प्रत्येक फ्लोर पर क्लास रूम एवं फैकल्टी रूम में कुर्सियों, सामान्य सुविधाओं एवं मानव सम्पर्क में आने वाले सभी बिन्दुओं जैसे रेलिंग्स, डोर हैण्डलस एवं सार्वजनिक सतह, फर्श आदि प्रतिदिन सेनेटाइज किया जाए एवं खिड़की/दरवाजों को खुला रखा जावे ताकि हवा का पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित रहे।

11. संस्थान में प्रतिदिन काम में आने वाली स्टेशनरी एवं अन्य उपकरणों को सेनेटाइज कराना अनिवार्य होगा।

12. जिन शिक्षण संस्थानों द्वारा छात्रावास का संचालन किया जा रहा है, उनके द्वारा बाहर से आने वाले छात्रों का आरटीपीसीआर टेस्ट करवाया जाए व रिपोर्ट आने तक क्वारंटीन किया जावे।

13. सार्वजनिक स्थान पर थूकने पर प्रतिबंध है एवं उल्लंघन किए जाने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाए।

14. संस्थान परिसर में किसी भी विद्यार्थी/शिक्षकगण/कार्मिक के कोविड पॉजिटिव या फिर संभावित संक्रमण की स्थिति बनने पर संस्थान द्वारा संबंधित कक्ष को 07 दिनों के लिए बंद किया जाए।

15. किसी विद्यार्थी/शिक्षकगण/कार्मिक में कोविड-19 के लक्षण पाए जाने पर उसे तुरंत निकटस्थ अस्पताल/कोविड सेन्टर में इलाज/आइसोलेशन हेतु रेफर/भर्ती करवाया जाएगा एवं संस्थान द्वारा एंबुलेंस की व्यवस्था की जाएगी।

16. शिक्षण संस्थानों द्वारा माता-पिता/अभिभावक को यह परामर्श दिया जाए कि किसी भी छात्र या उसके परिवार के किसी भी सदस्य के बीमार होने पर उसकी सूचना विद्यालय/स्थानीय प्रशासन को दी जाए।

17. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, स्वायत्त शासन विभाग एवं जिला प्रशासन द्वारा कोविड उपयुक्त व्यवहार के सम्बन्ध में सघन जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। चिकित्सा विभाग द्वारा समय-समय पर विद्यालयों में चिकित्सा दल भेजकर स्टाफ/विद्यार्थियों की रेण्डम सेम्पलिंग कराई जाए। पुलिस, यातायात व चिकित्सा विभाग के कार्मिकों द्वारा स्कूल वाहनों की रेण्डम जाँच कर कोविड गाइड लाइन की पालना सुनिश्चित कराई जाए।

18. जिला मजिस्ट्रेट द्वारा शिक्षण संस्थानों में कोरोनो प्रोटोकॉल एवं उक्त दिशा-निर्देशों की अनुपालना की मॉनिटरिंग हेतु एक नोडल अधिकारी की नियुक्ति की जाएगी।

19. विभिन्न शहरों/कस्बों/ग्रामीण क्षेत्र में कोविड संक्रमण की तात्कालिक परिस्थिति के मद्देनजर किसी भी विद्यालय/हॉस्टल इत्यादि को कुछ समय के लिए बन्द करने या अन्य कोई प्रतिबंध लगाने के लिए जिला मजिस्ट्रेट अधिकृत होंगे ताकि उनके द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप निर्देश जारी किए जा सकें।

20. विभाग के अधिकारियों (संभाग/जिला/ब्लॉक स्तर के समस्त अधिकारी) द्वारा लगातार मॉनिटरिंग एवं निरीक्षण द्वारा विद्यालयों में कोविड गाइड लाइन की पालना सुनिश्चित कराई जाए। कोविड गाइड लाइन्स की पालना हेतु विद्यालय का संस्थाप्रधान व स्कूल प्रशासन पूर्णतया उत्तरदायी होंगे।

21. विद्यालय अपने विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन शिक्षण अथवा डिस्टेंस लर्निंग को प्राथमिकता देंगे तथा ऑनलाइन अध्ययन सामग्री पहुँचा कर शिक्षण कार्य निरंतर रखेंगे। स्माइल, आओं घर से सीखे, ई-कक्षा एवं अन्य ऑनलाइन शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों तक पहुँचाने वाले डिजिटल कार्यक्रम अनवरत जारी रहेंगे तथा इस क्रम में यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक विद्यार्थी चाहे वह विद्यालय में उपस्थित है अथवा घर से अध्ययन जारी रखे हुए हैं को विद्यालय की तरफ से Online अध्ययन सामग्री पहुँच रही है।

22. विद्यालय में उपस्थित होने वाले विद्यार्थी, स्टाफ एवं अन्य आगंतुक कोविड उपयुक्त व्यवहार (Covid appropriate behavior) सुनिश्चित करेंगे।

- **(काना राम) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

Rajasthan Education Directorate
सत्यमेव जयते

माह : फरवरी, 2022	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
01.02.2022	मंगलवार	उदयपुर	8	विज्ञान	परीक्षामाला
02.02.2022	बुधवार	कोटा			गैरपाठ्यक्रम
03.02.2022	गुरुवार	जयपुर	12	हिन्दी साहित्य	परीक्षामाला
04.02.2022	शुक्रवार	जोधपुर	12	गणित	परीक्षामाला
05.02.2022	शनिवार	जयपुर			गैरपाठ्यक्रम No Bag Day
07.02.2022	सोमवार	बीकानेर			गैरपाठ्यक्रम
08.02.2022	मंगलवार	उदयपुर	12	व्यावसायिक अध्ययन	परीक्षामाला
09.02.2022	बुधवार	जोधपुर			गैरपाठ्यक्रम
10.02.2022	गुरुवार	जयपुर	12	राज. विज्ञान	परीक्षामाला
11.02.2022	शुक्रवार	कोटा	10	विज्ञान	परीक्षामाला
12.02.2022	शनिवार	जोधपुर			गैरपाठ्यक्रम No Bag Day
14.02.2022	सोमवार	जयपुर			गैरपाठ्यक्रम
15.02.2022	मंगलवार	कोटा			गैरपाठ्यक्रम
16.02.2022	बुधवार	जोधपुर	12	गणित	परीक्षामाला
17.02.2022	गुरुवार	बीकानेर			गैरपाठ्यक्रम
18.02.2022	शुक्रवार	कोटा	10	अंग्रेजी	परीक्षामाला
19.02.2022	शनिवार	उदयपुर			गैरपाठ्यक्रम No Bag Day
21.02.2022	सोमवार	बीकानेर	12	भूगोल	परीक्षामाला
22.02.2022	मंगलवार	कोटा	12	हिन्दी अनिवार्य	परीक्षामाला
23.02.2022	बुधवार	उदयपुर			गैरपाठ्यक्रम
24.02.2022	गुरुवार	जोधपुर	12	अर्थशास्त्र	परीक्षामाला
25.02.2022	शुक्रवार	जयपुर			गैरपाठ्यक्रम
26.02.2022	शनिवार	कोटा			गैरपाठ्यक्रम No Bag Day
28.02.2022	सोमवार	बीकानेर			अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान दिवस(गैर पाठ्यक्रम)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

● **(इन्द्रा सोनगरा)** प्रभारी अधिकारी, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर।

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **रचनाकार अपनी रचना के संदर्भ में इस आशय का अवश्य प्रमाण पत्र रचना के साथ प्रेषित करेगा कि उसकी रचना मौलिक, स्वरचित एवं अप्रकाशित है। उक्त प्रमाण पत्र के अभाव में रचना के प्रकाशन पर विचार नहीं किया जाएगा।**

–वरिष्ठ संपादक

शाला दर्पण : शंका एवं समाधान

❐ अखाराम चौधरी

शाला दर्पण पोर्टल से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु शाला दर्पण पोर्टल पर हेल्प सेन्टर मॉड्यूल प्रारम्भ किया गया है, जिसमें विद्यालय लॉगिन से प्रकरण आवश्यक दस्तावेज अपलोड करते हुए निस्तारण हेतु राज्य स्तर पर गठित शाला दर्पण प्रकोष्ठ (जयपुर एवं बीकानेर) को प्रेषित कर सकते हैं। हेल्प सेंटर मॉड्यूल से प्राप्त होने वाली सामान्य समस्याएँ एवं उनके समाधान निम्नानुसार है–

1. कार्मिक का स्टाफ लॉगिन नहीं हो पाना– जब तक किसी कार्मिक का व्यक्तिगत विवरण प्रपत्र–10 लॉक एवं वेरीफाई नहीं होता है, तब तक उस कार्मिक का स्टाफ लॉगिन नहीं हो पाएगा। अतः प्रपत्र–10 में शत–प्रतिशत सूचना इन्द्राज कर लॉक एवं वेरीफाई करें।

2. कार्मिक विस्तृत विवरण प्रपत्र–10 अनलॉक/वेरीफाई करना– कार्मिक विस्तृत विवरण प्रपत्र–10 विद्यालय लॉगिन में पूर्ण सूचना का इन्द्राज करने के उपरांत लॉक किया जाता है, तत्पश्चात वेरीफाई टैब में जाकर लॉक की गई सूचनाओं को वेरीफाई किया जाता है। प्रपत्र–10 में संशोधन करने के लिए संबंधित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय लॉगिन से अनलॉक करवाकर विद्यालय लॉगिन से संशोधित किया जा सकता है।

3. राज्य स्तर से प्रपत्र–10 में होने वाले संशोधन– किसी कार्मिक के नाम एवं जन्मतिथि में संशोधन के लिए प्रकरण राज्य स्तर पर प्रेषित किया जाता है। नाम में संशोधन हेतु सेकेण्डरी प्रमाण–पत्र, आधार कार्ड एवं सेवा पंजिका के प्रथम पेज की प्रति संलग्न करते हुए प्रकरण प्रेषित करें। कार्मिक के आधार पर सत्यापन के उपरांत नाम में संशोधन नहीं होगा, फिर भी संशोधन आवश्यक हो तो स्टाफ लॉगिन से आधार सत्यापन को निरस्त कर नाम संशोधन हेतु प्रकरण प्रेषित करें। कार्मिक की आई.डी. में त्रुटि होने पर विद्यालय लॉगिन में कार्मिक कार्यग्रहण 3ए में जाकर एडिट बटन से संशोधन किया जा सकता है।

4. कार्मिक के मोबाइल नम्बर एवं मेल आई.डी. में संशोधन– कार्मिक के मोबाइल नम्बर एवं मेल आई.डी. में संशोधन हेतु कार्मिक के व्यक्तिगत लॉगिन में सुविधा उपलब्ध करवा दी गई है, इस हेतु प्रकरण राज्य स्तर पर प्रेषित नहीं किया जाना है।

5. कार्मिक के प्रपत्र–10 में प्रथम नियुक्ति तिथि, वर्तमान जिले के प्रथम कार्यग्रहण तिथि एवं वर्तमान विद्यालय में कार्यग्रहण तिथि में संशोधन– उक्त सभी संशोधन विद्यालय लॉगिन में कार्मिक के विस्तृत विवरण प्रपत्र–10 के व्यक्तिगत विवरण में जाकर संशोधित किए जा सकते हैं। प्रपत्र–10 लॉक होने की स्थिति में संशोधन संभव नहीं होगा। इस हेतु प्रपत्र–10 को संबंधित सीबीईओ कार्यालय से अनलॉक करवाकर विद्यालय लॉगिन से संशोधन करें।

6. कार्मिक के मूल पद एवं विषय में संशोधन– कार्मिक के मूल पद एवं विषय में अशुद्धि होने की स्थिति में प्रकरण राज्य स्तर से निस्तारित होना है, इस हेतु संबंधित दस्तावेज (कार्मिक की प्रथम नियुक्ति आदेश, अंकतालिका, पदोन्नति परित्याग आदेश) संलग्न करते हुए प्रकरण हेल्प सेन्टर मॉड्यूल के माध्यम से प्रेषित करें।

7. कार्मिक सेवा विवरण प्रविष्टि– कार्मिक के विस्तृत विवरण प्रपत्र–10 में सेवा विवरण टैब में जाकर कार्मिक द्वारा शिक्षा विभाग की समस्त सेवा का विवरण विद्यालय लॉगिन से इन्द्राज किया जाता है। यदि कहीं संशोधन की आवश्यकता है तो प्रपत्र–10 संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से अनलॉक करवाते हुए अशुद्ध सूचना को एडिट अथवा डिलीट किया जा सकता है। कार्मिक के वर्तमान पदस्थापन की सूचना को केवल एडिट किया जाना है। वर्तमान पदस्थापन की सूचना तकनीकी कारणों से दो बार प्रदर्शित हो रहा हो तो एक एंट्री को डिलीट किया जाना है।

8. कार्मिक के एसीपी एवं स्थायीकरण प्रकरण में प्रथम कार्यग्रहण तिथि में संशोधन– कार्मिक के एसीपी एवं स्थायीकरण आवेदन हेतु प्रथम कार्यग्रहण तिथि की गणना कार्मिक के प्रपत्र–10 के आधार पर स्वतः होती है। अतः कार्मिक के प्रपत्र–10 में सेवा विवरण में पदस्थापन का प्रकार (Type of Positing) में सही विकल्प का चयन करें। सेवा विवरण में प्रथम नियुक्ति के लिए समायोजन या स्थानान्तरण का चयन करने पर प्रथम नियुक्ति तिथि गलत प्रदर्शित होगी। कार्मिक का शिक्षा विभाग में एक से अधिक बार सीधी भर्ती से चयन होने पर अंतिम सीधी भर्ती के विकल्प के अनुसार स्थायीकरण तिथि की गणना होती है।

9. कार्मिक की कार्यमुक्ति में संशोधन– कार्मिक जब तक पूर्व विद्यालय से ऑनलाइन कार्यमुक्त होकर नव–पदस्थापन विद्यालय में ऑनलाइन कार्यग्रहण नहीं करता है, तब तक कार्मिक की कार्यमुक्ति में संशोधन किया जा सकता है। अतः कार्यग्रहण करवाने से पूर्व सभी सूचना को भली भाँति जांच लें।

10. कार्मिक की कार्यग्रहण एवं कार्यमुक्ति की तिथि में संशोधन– अगर किसी कार्मिक के कार्यमुक्ति एवं कार्यग्रहण की तिथि में त्रुटि हो तो उक्त संशोधन के लिए विद्यालय लॉगिन में कार्मिक के विस्तृत विवरण

Rajasthan Education Department

प्रपत्र-10 में सेवा विवरण में जाकर संशोधन किया जा सकता है।

11. नव-नियुक्त/नव-पदस्थापित कार्मिक का नाम प्रदर्शित नहीं होना- शाला दर्पण पोर्टल पर नव-नियुक्त/नव पदस्थापित कार्मिक की प्रविष्टि नियुक्ति अधिकारी कार्यालय स्तर से की जाती है। इस संबंध में संबंधित नियुक्ति अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क कर कार्मिक की मैपिंग संबंधी कार्यवाही करवाएं। समायोजन काउंसलिंग/पदोन्नति काउंसलिंग एवं सीधी भर्ती काउंसलिंग संबंधित प्रविष्टि नियुक्ति अधिकारी कार्यालय से की जाती है।

12. 3बी कार्मिकों का समायोजन उपरान्त कार्यमुक्ति- 3बी कार्मिकों का अन्य विद्यालय में समायोजन आदेश जारी होने पर नियुक्ति स्तर से काउंसलिंग मैपिंग उपरांत ही कार्यमुक्ति/कार्यग्रहण करवाया जा सकता है। अतः संबंधित नियुक्ति अधिकारी कार्यालय से सम्पर्क करें।

13. कार्मिक का नाम ऑनलाइन उपस्थिति में प्रदर्शित नहीं होना- कार्मिक की शाला दर्पण पोर्टल पर प्रविष्टि के आगामी दिवस को ऑनलाइन उपस्थिति में नाम प्रदर्शित होता है। कार्मिक की 3ए में प्रविष्टि का प्रकार परमानेंट होना आवश्यक है तथा साथ ही कार्मिक की कार्य व्यवस्थार्थ प्रविष्टियों को भली भाँति जाँच लेवें, अधूरी प्रविष्टियों की स्थिति में ऑनलाइन उपस्थिति में नाम प्रदर्शित नहीं होता है।

14. नव-क्रमोन्नत विद्यालय में पद स्वीकृत करवाने बाबत- नव-क्रमोन्नत विद्यालय में वित्त विभाग द्वारा स्वीकृति उपरान्त निदेशालय द्वारा पद आवंटन आदेश जारी होने पर ही शाला दर्पण पोर्टल पर पद आवंटित किए जाते हैं, इस हेतु प्रकरण प्रेषित नहीं किया जावे। केवल बजट हेड एवं पदों का गलत आवंटन होने की स्थिति में ही प्रकरण निदेशालय को प्रेषित किया जावे।

15. माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालय क्रमोन्नत होने पर प्रपत्र-6 में विषय अद्यतन करने बाबत- किसी विद्यालय को माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत होने पर निदेशालय द्वारा संकाय एवं विषय आवंटन संबंधी आदेश जारी किए जाते हैं, तदुपरान्त निदेशालय स्तर से ही संबंधित विद्यालयों के प्रपत्र-6 में विषय अद्यतन कर दिए जाते हैं, अतः प्रपत्र-6 अनलॉक करने हेतु प्रकरण प्रेषित नहीं किए जावे।

16. पूर्व पद की एसीपी एवं स्थायीकरण बाबत- कार्मिक के एसीपी एवं स्थायीकरण हेतु ऑनलाइन आवेदन कार्मिक के वर्तमान पद के अनुसार अग्रेषित होते हैं, अतः पूर्व पद के एसीपी एवं स्थायीकरण हेतु फ्लो परिवर्तन के प्रकरण कार्यालय स्तर से पूर्ण सूचना मय पत्र मेल के माध्यम से निदेशालय को प्रेषित किए जावें। फ्लो परिवर्तन आवेदन के अंतिम स्तर पर पहुँचने के पश्चात ही संभव हो पाता है।

17. संकाय परिवर्तन/संकाय आवंटन होने पर पद संशोधनः- किसी उच्च माध्यमिक विद्यालय में संकाय आवंटन होने पर स्टाफिंग पैटर्न के अनुसार पद परिवर्तन होते हैं यथा कला संकाय आवंटन होने पर वरिष्ठ अध्यापक सामाजिक विज्ञान का पद प्रत्याहारित किया जाता है, इसी तरह विज्ञान संकाय में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान के साथ गणित या जीव विज्ञान विषय आवंटन करने पर क्रमशः गणित या विज्ञान के वरिष्ठ अध्यापक का पद प्रत्याहारित किया जाता है।

निदेशालय से पद अद्यतन करते समय प्रत्याहारित होने वाले वरिष्ठ अध्यापक के पद पर कार्यरत कार्मिकों को व्याख्याता के पद विरुद्ध शिफ्ट किया जाता है, जिसे संबंधित संस्थाप्रधान द्वारा नियुक्ति अधिकारी कार्यालय हेतु कार्यमुक्त करना होता है। संकाय परिवर्तन/आवंटन आदेश जारी होने के बाद प्रत्याहारित होने वाले पद पर कार्यमुक्त कार्मिक की कार्यमुक्ति के लिए निदेशालय स्तर से पृथक से कोई आदेश जारी नहीं किए जाते हैं, अतः इस संबंध में अनावश्यक पत्राचार ना करते हुए संस्थाप्रधान उक्त कार्मिक को संबंधित नियुक्ति अधिकारी कार्यालय हेतु कार्यमुक्त करें।

18. नवसृजित महात्मा गाँधी विद्यालयों में अनवरत हिन्दी माध्यम के छात्रों के बोर्ड परीक्षा फॉर्म हेतु माध्यम की समस्या- विद्यालय लॉगिन में विद्यालय प्रोफाइल टैब में मान्यता एवं अन्य जानकारी मॉड्यूल में जाकर विद्यालय में शिक्षण का माध्यम हिन्दी व अंग्रेजी (दोनों) का चयन करें एवं विद्यार्थी मॉड्यूल में सेक्शन एवं स्टूडेंट मीडियम एंट्री टैब में जाकर माध्यम अपडेट करें।

19. नवक्रमोन्नत माध्यमिक/महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम राजकीय विद्यालयों में कार्मिकों की कार्यमुक्ति/कार्यग्रहण नहीं होनाः- प्राथमिक/उच्च प्राथमिक से माध्यम अथवा महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम राजकीय विद्यालयों में क्रमोन्नत होने पर विद्यालय लॉगिन में कार्मिक टैब में जाकर लॉक कार्मिक विद्यालय में क्रमोन्नत होने पर विद्यालय लॉगिन में टैब में जाकर लॉक कार्मिक प्रविष्टि को केवल एक बार लॉक करना होता है। लॉक कार्मिक प्रविष्टि को लॉक करने के बाद अधिशेष कार्मिकों की कार्यग्रहण/कार्यमुक्ति की जा सकती है।

20. महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम राजकीय विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षक के कार्यग्रहण बाबतः- महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम राजकीय विद्यालयों में साक्षात्कार से कम्प्यूटर शिक्षक के पद पर चयन होने वाले कार्मिक को आगामी निर्देशों तक मूल पद एवं विषय पर ही कार्यग्रहण करवाया जाना है। शाला दर्पण पोर्टल पर स्वीकृत पद एवं विषय कम्प्यूटर शिक्षक के पद चयनित कार्मिक के मूल पद एवं विषय से भिन्न होने की स्थिति में हेल्प सेन्टर मॉड्यूल से प्रकरण प्रेषित कर स्वीकृत पद एवं विषय में संशोधन करवाया जा सकता है।

21. कार्मिक दैनिक ऑनलाइन उपस्थिति में संशोधन बाबतः- कार्मिकों की दैनिक ऑनलाइन उपस्थिति में संशोधन अथवा नियत तिथि पश्चात उपस्थिति दर्ज करवाने हेतु मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय लॉगिन में सुविधा उपलब्ध है। इस हेतु संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से सात दिवसों में संशोधन/प्रविष्टि करवायी जा सकती है।

अनुसंधान अधिकारी,
शाला दर्पण प्रकोष्ठ,
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मोः 9001456998

Rajasthan Education Department

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन

❒ प्रदीप जोशी

लोक सेवकों द्वारा प्रति वर्ष कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन भरे जाने का प्रावधान है। कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन का सेवाकाल में महत्त्वपूर्ण स्थान है। कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन का पदोन्नति, एसीपी, राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय पुरस्कार में विशेष महत्त्व है। कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में प्रतिवेदन अधिकारी द्वारा आलोच्य अवधि में किए गए कार्य के आधार पर प्रतिवेदक/समीक्षक/स्वीकारकर्ता अधिकारियों द्वारा ग्रेडिंग/टिप्पणी/मूल्यांकन किया जाता है। कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन अनुदेश-2008 के निर्देशानुसार यह निर्देश राज्य के सभी कर्मचारियों, सरकार के अधीनस्थ और मंत्रालयिक सेवाओं पर लागू होंगे, लेकिन निम्नलिखित लोक सेवकों पर लागू नहीं होंगे।

1. अखिल भारतीय सेवाओं के सदस्य।
2. राजस्थान उच्च न्यायालय के अधिकारी और सेवक जो संविधान के अनुच्छेद 229 के खंड (2) के तहत बनाए गए नियमों द्वारा शासित हाते हैं।
3. राजस्थान विधान सभा के सचिवालय के कर्मचारी।
4. राजस्थान लोकायुक्त सचिवालय के कर्मचारी।
5. राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष और सदस्य जो संविधान के अनुच्छेद 318 के तहत बनाए गए नियमों द्वारा शासित हैं।
6. भारत सरकार या किसी अन्य राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश से प्रतिनियुक्ति पर व्यक्ति।
7. औद्योगिक विवाद अधिनियम के अर्थ में औद्योगिक संगठनों में कामगार के रूप में कार्यरत व्यक्ति तथा
8. चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी और आकस्मिक/संविदात्मक/अंशकालिक रोजगार में लगे व्यक्ति।

प्रतिवेदन में प्रतिवेदित अधिकारी द्वारा आलोच्य अवधि में किए गए कार्य के आधार पर प्रतिवेदक/समीक्षक/स्वीकारकर्त्ता अधिकारियों द्वारा ग्रेडिंग/टिप्पणी/मूल्यांकन किया जाता है। कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन अनुदेश-2008 में इस संबंध में महत्त्वपूर्ण निर्देश जारी किए गए हैं तथा माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा सिविल अपील सं. 7631/2002 देवदत्त बनाम यूनियन ऑफ इंडिया में पारित निर्णय दिनांक : 12.05.2008 में कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदनों में अंकित प्रतिकूल /सलाहकारी प्रविष्टियां सूचित किए जाने एवं प्रतिकूल प्रविष्टियों के विरुद्ध प्राप्त अभ्यावेदनों पर निर्णय किए जाने का प्रावधान किया गया है। कार्मिक विभाग ने दिनांक : 22.02.2013 के द्वारा इस सम्बन्ध में निर्देश जारी किए हैं। जिसमें निम्नलिखित तथ्यों को स्पष्ट किया गया है-

1. कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन पूर्ण होने के बाद कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन संबंधित विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी अपने अभिरक्षा में रखेंगे।
2. विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी द्वारा संबंधित लोक सेवक का कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन पूर्ण होकर प्राप्त होने पर संबंधित लोक सेवक को सूचित कर अवलोकन हेतु आमंत्रित किया जाएगा एवं लोक सेवक को अवलोकन कराने के पश्चात अवलोकन किया का प्रमाण पत्र लिया जाएगा। यदि अवलोकन पश्चात लोक सेवक अपने कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में अंकित प्रतिवेदक/समीक्षक/स्वीकारकर्ता अधिकारी की ग्रेडिंग/टिप्पणी/मूल्यांकन से संतुष्टि नहीं हो तो वह ग्रेडिंग/टिप्पणी/ मूल्यांकन सुधार हेतु 15 दिवस में अपना अभ्यावेदन संबंधित विभागाध्यक्ष /कॉडर नियंत्रण अधिकारी को प्रस्तुत करेगा।
3. यदि सम्बन्धित लोक सेवक अपने मूल्यांकन के विरुद्ध 15 दिवस में अभ्यावेदन प्रस्तुत नहीं करे तो कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन कार्मिक/संबंधित विभाग को भिजवाएंगे।
4. यदि लोक सेवक द्वारा किए गए मूल्यांकन के विरुद्ध ग्रेडिंग/टिप्पणी/मूल्यांकन में सुधार हेतु अभ्यावेदन प्रस्तुत करे तो विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी सक्षम स्तर से अनुमोदन प्राप्त कर एक माह में उस पर निर्णय लेवे।
5. यदि विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी द्वारा अभ्यावेदन पर लिए गए निर्णय से लोक सेवक संतुष्ट नहीं हो तो वह उसके विरुद्ध अपीलीय बोर्ड के समक्ष अपील प्रस्तुत कर सकता है।
6. इन निर्णयों के विरुद्ध सभी विभागों को विभिन्न सेवा संवर्गों के लिए सक्षम अधिकारी की अध्यक्षता में अपीलीय बोर्ड का गठन करना होगा जो विभागाध्यक्षों/कॉडर नियंत्रण अधिकारी द्वारा ग्रेडिंग/टिप्पणी/ मूल्यांकन में सुधार हेतु प्रस्तुत अभ्यावेदन पर लिए गए निर्णय की सुनवाई करेगा एवं सक्षम स्तर के अनुमोदन प्राप्त कर निर्णय लेगा।

इस संबंध में कार्मिक विभाग द्वारा परिपत्र दिनांक : 17.09.2013 (स्पष्टीकरण) भी जारी किया गया है।

अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य:

'कोई प्रमाण नहीं की रिपोर्ट : नो रिपोर्ट सर्टिफिकेट'-निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए-।/19-20 दिनांक 23.11.2020 के बिन्दु सं. 14 के अनुसार निर्देश अंकित किए गए हैं।

(1) प्रतिवर्ष 31 मार्च को प्रशासनिक सचिव द्वारा राज्य सेवा के अधिकारियों की तथा नियुक्ति अधिकारी अधीनस्थ और मंत्रालयिक सेवा के उन लोक सेवकों की सूची तैयार की जाएगी जो कि निम्न श्रेणियों के अन्तर्गत आते हैं-

(क) जिन कर्मचारियों को अध्ययन अवकाश दिया गया है।
(ख) जिन कर्मचारियों को निलंबित रखा गया।
(ग) जिन कर्मचारियों को आदेश की प्रतीक्षा में रखा गया है।
(घ) उन कर्मचारियों के मामले में, जिनमें से कोई भी प्रतिवेदक अधिकारी, समीक्षा करने वाला अधिकारी और स्वीकार करने वाला अधिकारी APAR लिखने के लिए सक्षम नहीं हैं।
(ड़) उन कर्मचारियों के मामले में जिनकी अवधि पाँच वर्ष से अधिक पुरानी है, पूरा होने के लिए लंबित है। (उक्त शर्त को कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक : 30 नवम्बर, 2012 के द्वारा दस वर्ष के स्थान पर पाँच वर्ष प्रतिस्थापित कर दिया गया है।)

(2) उपर्युक्त व्यक्तियों के लिए यदि अवधि तीन महीने या उससे अधिक है, तो कारणों का उल्लेख करने वाले एक नोट को डोजियर में 'नो रिपोर्ट सर्टिफिकेट' के रूप में रखा जाना चाहिए।

Rajasthan Education Department

Part of the relative-कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन अनुदेश-2008 के बिन्दु क्रमांक : (2) के अनुसार PAR of the relative हेतु निर्देश अंकित किए गए है-The administrative authority should take care that, tho the extent possible, a close relative of an official is not placed under the direct charge of that official where the latter has to write the PAR of the former. Should such a situation become inescapable, it should not be allowed to continue beyond the barest minimum time possible. In such a situation, the employee is prohibited to write or review the PAR of his close relative.

(APAR लिखने के लिए सक्षम/असक्षम- निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए-।/19-20 दिनांक 23.11.2020 के बिन्दु संख्या 10 के उप बिन्दु 02 रिश्तेदार की APAR- के अनुसार निम्न निर्देश अंकित किए गए है। अधिकारी अपने करीबी रिश्तेदार की APAR को लिखने या समीक्षा करने के लिए अधिकृत नहीं है।)

तीन महीने से कम की अवधि- निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए-।/19-20 दिनांक 23.11.2020 के बिन्दु सं. 10 के उप बिन्दु 3 तीन महीने से कम की अवधि के अनुसार निम्न निर्देश अंकित किए गए है-प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी उन लोकसेवकों की APAR को लिखने/समीक्षा के लिए सक्षम नहीं है, जिन लोकसेवकों ने उनके सुपरविजन में 03 माह से कम अवधि हेतु काम किया है।

निलम्बन/एपीओ/अध्ययन अवकाश पर APAR- निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए-।/19-20 दिनांक 23.11.2020 के बिन्दु संख्या 10 के उप बिन्दु 05 के अनुसार निम्न निर्देश अंकित किए गए हैं-वे लोक सेवक जिन्हें निलम्बन के तहत रखा गया है अथवा पोस्टिंग आदेश की प्रतीक्षा में है अथवा अध्ययन अवकाश पर है, उनकी उक्त अवधि की APAR तैयार नहीं की जाएगी।

तीन वर्ष पूर्व के प्रतिवेदन- निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा जारी परिपत्र क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए/17-18 दिनांक : 13.07.2018 के बिन्दु सं. 04 के अनुसार-तीन वर्षों से पूर्व के प्रतिवेदन राज्य सरकार के आदेश क्रमांक : एफ-14 (29) कार्मिक/एसीआर/73 दिनांक 16.07.1985 के अनुसार स्वीकार योग्य नहीं है। अतः तीन वर्षों के पूर्व के मूल प्रतिवेदन तैयार नहीं करवाए जावे, इसके स्थान पर तीन वर्ष से पूर्व के प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी स्वयं द्वारा कार्यालय अभिलेख के आधार पर (कार्यालय स्तर पर) तैयार कर भिजवाया जाए। ध्यान रहे कि ऐसे प्रतिवेदनों में समग्र मूल्यांकन संतोषप्रद से ऊपर की श्रेणी का नहीं भरा जावे।

अचल सम्पत्ति का विवरण- कार्मिक विभाग के पत्र दिनांक : 17.05.2018 के द्वारा अनुदेश संशोधन के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि राजस्थान सिविल सेवाएं (कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन) अनुदेश-2008 में अंकित राजपत्रित अधिकारियों के कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के साथ संलग्न अचल सम्पत्ति विवरण प्रपत्र को हटाया गया है।

जिला स्तरीय अधिकारियों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन

1. जिला स्तरीय अधिकारियों के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में जिला कलक्टर की भूमिका को स्पष्ट किया गया है तथा बिना जिला कलक्टर की टिप्पणी के अंकन के वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन कार्मिक (क-1/गो.प्र.) विभाग द्वारा स्वीकार नहीं किए जाने के निर्देश दिनांक : 08 मई, 2017 द्वारा जारी किए गए हैं।
2. कार्मिक विभाग द्वारा संशोधित परिपत्र दिनांक 31 मई, 2017 के द्वारा परिपत्र दिनांक 22.03.2013 के दिशा-निर्देश के बिन्दु सं. 02 के क्रम में स्पष्ट किया गया है कि विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी द्वारा राज्य सेवा अधिकारी को अवलोकन हेतु जारी पत्र के दिनांक से दो माह के भीतर अवलोकन नहीं करता है तो विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी दो माह पश्चात राज्य सेवा अधिकारी को अवलोकन करने के जारी पत्र की प्रति के साथ कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन कार्मिक विभाग को भिजवा दिया जावें। विभागाध्यक्ष/कॉडर नियंत्रण अधिकारी राज्य सेवा अधिकारी को जारी अवलोकन पत्र में यह भी अंकित करे कि पत्र प्राप्ति के दो माह पश्चात आप अपने कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन का अवलोकन सीधे ही कार्मिक (क-1/गो.प्र.) विभाग में करें।

शिक्षा विभागीय APAR सम्बन्धित निर्देश- शिक्षा निदेशालय द्वारा वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन परिपत्र भरने व भिजवाने संबंधी निर्देश क्रमांकः शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए/17-18 दिनांक 13.07.2018 एवं 23.11.2020 द्वारा APAR हेतु विभागीय चैनल एवं विस्तृत निर्देश एवं तत्पश्चात दिनांक : 20.07.2021, 30.07.2021 द्वारा एपीआर चैनल के सम्बन्ध में आंशिक संशोधन/नवीन चैनल निर्धारण सम्बन्धी नवीन निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

शिक्षा विभाग में APAR ऑनलाइन प्रक्रिया- निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/विविध/डी-।।/ए/19-20 दिनांक : 30.07.2021 के माध्यम से 02 अगस्त 2021 से वरिष्ठ अध्यापक, व्याख्याता, प्रधानाध्यापक (मा.वि.) एवं प्रधानाचार्य वर्ग को वर्ष 2020-21 की शाला दर्पण के स्टाफ विंडो के माध्यम से APAR ऑनलाइन हेतु दिशा-निर्देश एवं लोक सेवक, प्रतिवेदक/समीक्षक/स्वीकारकर्ता अधिकारियों की जिम्मेदारियों संबंधी विस्तृत निर्देश जारी करते हुए APAR संबंधित विस्तृत सामान्य प्रश्न एवं उत्तर (FAQ) भी जारी किए गए हैं। इसी की निरंतरता में आदेश क्रमांक : शिविरा-मा/संस्था/गोप्र/शाला दर्पण/Online Module/2020-21 दिनांक 18.11.2021 के द्वारा APAR मॉड्यूल के सरलीकरण की कार्यवाही के तहत विभिन्न बिन्दुओं यथा- प्रतिवेदक अधिकारी, No Report Certificate (NRC), ऑफलाइन आवेदन एवं प्रतिवेदक/समीक्षक अधिकारी का गलत चयन होने (Change Officer Request) के संबंध में विस्तृत निर्देश जारी किए गए हैं, जिसके फलस्वरूप वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (2020-21) हेतु स्वीकारकर्ता अधिकारी द्वारा E-sign के माध्यम से प्रक्रिया निरंतर ऑनलाइन रूप से गतिशील है, जिसका लाभ शिक्षा विभाग के कार्मिकों को मिल रहा है।

वरिष्ठ सहायक
माध्यमिक अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय,
राजस्थान, बीकानेर
मो: 9414776569

Rajasthan Education Department

निपुण भारत मिशन

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल

❒ मुकेश चन्द

1. पृष्ठभूमि– बुनियादी शिक्षण विद्यार्थियों के भावी जीवन में सीखने का आधार होता है। यदि बच्चे शुरूआती कक्षाओं में समझ के साथ बुनियादी पठन–लेखन और गणितीय कौशलों को हासिल नहीं कर पाते हैं तो उन्हें आगे की कक्षाओं में निरन्तर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रारम्भिक शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता प्राथमिक विद्यालओं में 2025 तक सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना होना चाहिए। यदि हमारे विद्यार्थियों की बड़ी संख्या आरंभिक कक्षाओं में बुनियादी शिक्षा (बुनियादी पठन–लेखन और अंकगणितीय कौशल) हासिल नहीं कर पाते हैं तो यह शिक्षा नीति अप्रासंगिक होगी।

हमारे प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी पढ़ने, लिखने और अंकगणित के मूलभूत कौशल हासिल कर सके इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर–

1. विद्यार्थियों में बुनियादी कौशल सीखने पर सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।
2. FLN हेतु राष्ट्रीय स्तर पर मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन का गठन किया गया है।
3. सत्र 2026–27 तक कक्षा 3 तक विद्यार्थियों में आवश्यक सार्वभौमिक FLN कौशल हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इस हेतु विद्यालयों में सीखने के लिए उपयुक्त और सक्षम वातावरण तैयार किया जाएगा। इससे प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा 3 के अंत तक पढ़ने, लिखने और अंकगणित में वांछित सीखने की क्षमता प्राप्त कर सकेगा। ये अर्जित क्षमताएं विद्यार्थियों को आगे की कक्षाओं में आवश्यक अधिगम को सुगम करने में मददगार होगी।

2. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की आवश्यकता क्यों?–NEP 2020 में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए काम करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए ऐसी शिक्षा की परिकल्पना कर 'शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है' विशेष महत्त्व दिया गया है।

- विश्व बैंक की Learning Property रिपोर्ट के अनुसार 10 साल की उम्र तक 50 प्रतिशत बच्चे सरल अनुच्छेद (Text) को भी समझ के साथ पढने में असमर्थ रहते हैं। NEP 2020 में भी इस चिंता को रेखांकित किया गया है कि हमारे देश के विद्यालयों में अनुमानत: 5 करोड़ से अधिक बच्चे बुनियादी अक्षर ज्ञान, पठन–लेखन और संख्या ज्ञान नहीं जानते।
- तंत्रिका विज्ञान (Neuro Science) के अनुसार 85 प्रतिशत मानव मस्तिष्क का विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। बच्चों में सुनने, देखने, संवेदना और भाषायी कौशल का क्रमिक विकास शुरूआती वर्षों में जितना होता है, उतना शेष जीवन में नहीं होता। अत: उच्च संज्ञानात्मक कौशलों के विकास हेतु शुरूआती कक्षाओं में भाषायी और गणितीय कौशलों पर काम करने की विशेष आवश्यकता होती है।
- मानव में अलग–अलग आयु वर्ग में किए गए निवेश के अनुसार ही उसकी प्रतिफल दर निर्भर करती है। यदि यह कम आयु में किया जाता है तो इसके परिणाम बेहतर होते हैं। (स्रोत: हेकमैन, 2007)

भारत सरकार द्वारा उपर्युक्त कारणों और जरूरतों के आधार पर व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित करने के लिए पूरे देश में निपुण भारत मिशन की शुरुआत की गई है, जिसका लक्ष्य है – **'देश का प्रत्येक बालक कक्षा 3 के स्तर को पूरा करने के साथ बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में दक्ष हो।'**

3. राष्ट्रीय संख्या ज्ञान और साक्षरता ज्ञान मिशन के उद्देश्य– निपुण भारत मिशन का वृहत उद्देश्य वर्ष 2026–27 तक सुनिश्चित करना है कि प्राथमिक कक्षाओं विशेषकर कक्षा 3 तक अध्ययनरत सभी बच्चे निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हासिल कर पायें। निपुण भारत मिशन की योजना प्री–स्कूल से कक्षा 3 तक यानि 3 से 9 वर्ष तक की उम्र के बच्चों को केंद्र में रख कर तैयार की गई है। इसके तहत बुनियादी साक्षरता और संख्या–ज्ञान के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य तय किए गए हैं।

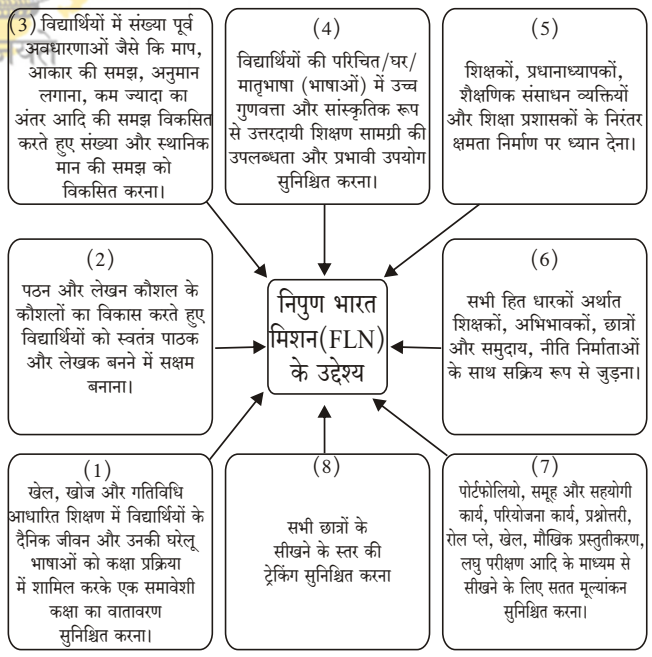

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

4. निपुण भारत मिशन (FLN) क्रियान्वयन की कार्यनीति– इसके अंतर्गत प्री–स्कूल से कक्षा 3 सहित 3 से 9 वर्ष की आयु के बच्चों में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की मूलभूत दक्षताओं को अर्जित किया जाना सुनिश्चित किया जाएगा। इस राष्ट्रव्यापी मिशन को राजस्थान के शैक्षिक सन्दर्भ और परिस्थितियों के अनुरूप अपनाया गया है। राज्य में इसको क्रियान्वित करने के लिए अपनाई गयी कार्यनीति इस प्रकार है–

1. आंगनबाड़ी से स्कूल तक बच्चों का निरंतर जुड़ाव सुनिश्चित करने हेतु ईसीसीई पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क को प्री–स्कूल और प्राथमिक कक्षाओं में अपनाया जाएगा।
2. प्राथमिक कक्षाओं में शैक्षिक प्रक्रियाओं में नवाचारों को शामिल किया जाएगा। इसके अंतर्गत कक्षाओं में विद्यार्थियों की अधिगम जरूरतों के अनुसार लचीलापन रखा जाएगा और कक्षाओं को अधिक सक्रिय बनाया जाएगा।
3. शिक्षकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए Interactive Plateform माध्यम से प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन करना।
4. विद्यार्थियों की 360 डिग्री आधारित व्यापक आकलन प्रक्रिया को अपनाना जिसमें स्कूल आधारित मूल्यांकन (School Based Assessment) और व्यापक स्तर के मानकीकृत मूल्यांकन (Large Scale Assemssment) शामिल है। राजस्थान में पहले से ही SIQE कार्यक्रम में सतत और व्यापक आकलन शामिल है और निपुण भारत मिशन में भी आकलन यथानुरूप संचालित किया जाना है।
5. शिक्षकों को सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में प्रशासनिक संबलन उपलब्ध करवाना, जिसके अंतर्गत बच्चों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए उन्हें नियमित नाश्ता, मध्याह्न भोजन (MDM) उपलब्ध करवाना और नियमित स्वास्थ्य जाँच करवाने के साथ–साथ समुदाय की सहभागिता बढ़ाना।

5. FLN और उसके मुख्य घटक– निपुण भारत मिशन के अंतर्गत कक्षा 3 के अंत तक बच्चे अपनी कक्षा स्तर की विषयवस्तु को समझ के साथ पढ़ने और अंकों के माध्यम से गणना कर सकें यही बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) कौशल हैं। ये कौशल दो प्रकार के होते हैं–

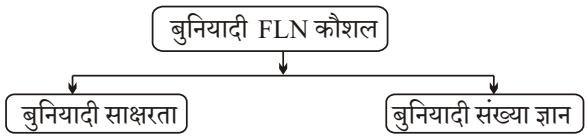

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान कौशल के प्रमुख घटक– मूलभूत भाषा एवं साक्षरता–मौखिक भाषा का ज्ञान साक्षरता कौशल के विकास में आवश्यक सहायता करता है। जिन बच्चों की अपनी घरेलू भाषा पर मजबूत पकड़ होती है वे द्वितीय भाषा को अधिक सरलता के साथ समझ पाते हैं। बुनियादी साक्षरता के मुख्य घटक निम्नानुसार हैं–

- मौखिक भाषा का विकास।
- ध्वनि जागरूकता का विकास।
- डिकोडिंग।
- शब्दावली विकास।
- धाराप्रवाह पठन
- समझ के साथ पढ़ना।
- प्रिंट जागरूकता का विकास।
- लेखन।
- पढ़ने की रुचि व आदत का विकास।

बुनियादी संख्या ज्ञान: बुनियादी संख्या ज्ञान और गणितीय कौशल का अर्थ तार्किक योग्यता और साधारण गणितीय सिद्धांतों का उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में प्रयोग से है। प्रारंभिक गणित के मुख्य घटक इस प्रकार हैं –

- प्रारंभिक गणना।
- संख्या ज्ञान और स्थानिक समझ।
- आकार और स्थानिक समझ।
- मापन।
- डाटा का रखरखाव।
- गणितीय सम्प्रेषण।

6. इसके लिए शिक्षक क्या करें ?

- प्रत्येक विद्यार्थी को बिना लैंगिक पक्षपात उचित महत्त्व, सम्मान और अधिगम के समान अवसर देना।
- विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुसार समावेशी अधिगम प्रक्रिया (Inclusive Pedagogy) जिनमें बिना किसी लैंगिक भेदभाव के विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी सहित बिना किसी लैंगिक भेदभाव के लड़के–लड़कियों हेतु समावेशी गतिविधियों को शामिल करना।
- शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तकों के साथ पुस्तकालय की पुस्तकें, पोस्टर, खिलौने, शिक्षण सहायक सामग्री के साथ कहानी, कविताओं, गीतों को शिक्षण गतिविधियों में शामिल करना।
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में खिलौना आधारित शिक्षण प्रक्रिया और अनुभव आधारित अधिगम कराना और परिवेशीय ज्ञान को कक्षा की प्रक्रिया से जोड़कर शिक्षण करना।
- अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी को स्वतंत्र एवं मौलिक अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान करना।
- विद्यार्थी के अधिगम अन्तराल और अधिगम में आ रही समस्याओं की शीघ्र पहचान व अपेक्षित अकादमिक/उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करना ।
- आकलन प्रक्रिया– सतत एवं व्यापक आकलन के माध्यम से विद्यार्थी की क्षमताओं, विशेष अधिगम आवश्यकताओं, रुचियों और प्राथमिकताओं की पहचान कर सीखने में आवश्यक मदद करना, दो तरह की मूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाया जाएगा

1. स्कूल आधारित आकलन (SBA) : स्कूल में तनावमुक्त, अनुभव आधारित सतत और व्यापक आकलन करना।
2. वृहत मानकीकृत मूल्यांकन (LSA) : राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर अधिगम प्रक्रिया में सुधार के क्षेत्र चिह्नित करना एवं तंत्र की जवाबदेही हेतु मानकीकृत मूल्यांकन प्रक्रिया में सहयोग करना।

7. अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता– निपुण भारत की कार्ययोजना के क्रियान्वयन और निगरानी में सामुदायिक भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका तय की गई है। अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता बढ़ाने के कुछ महत्त्वपूर्ण तरीके इस प्रकार किये जायेंगे

- बुनियादी दक्षताओं को सीखने वाले बच्चों की माताओं के मौहल्लेवार समूह का गठन।
- आँगनवाड़ियों/प्री-स्कूल से कक्षा एक में नवप्रवेशी विद्यार्थियों का सुचारू कक्षा-अन्तरण सुनिश्चित करने के लिए आँगनवाड़ी शिक्षा और कक्षा एक के शिक्षक का आपस में संवाद करना।
- समुदाय में बुनियादी दक्षताएं सीखने के लिए जागरूकता प्रसार हेतु पंचायतीराज संस्थाओं (PRI) का सहयोग लेना।
- बुनियादी साक्षरता और गणितीय संख्या ज्ञान संबंधी सामुदायिक जागरूकता मेलों का आयोजन करना।
- SMC/PTM के माध्यम से अभिभावकों को शैक्षिक कार्यों से जोड़ना और बच्चों की प्रगति शेयर करना।

8. FLN मिशन संचालन एवं क्रियान्वयन तंत्र

FLN कार्यक्रम के क्रियान्वयन से जुड़े हितधारक और उनकी प्रमुख जिम्मेदारियाँ-

हितधारक (Stakeholders)	मुख्य जिम्मेदारियाँ
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद एवं समग्र शिक्षा अभियान (RCSE)	● FLN कार्यक्रम संचालन हेतु प्रशिक्षण एवं कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना।
	● 2026-27 तक मिशन मोड में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य प्राप्त करने के लिए योजना निर्माण और क्रियान्वयन करना।
	● FLN अन्तर्गत गतिविधियों की प्रभावी मॉनिटरिंग करना।
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (RSCERT)	● स्थानीय भाषा को शामिल करते हुए शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्माण।
	● डाइट के नेतृत्व में जिला अकादमिक समूह की नियमित बैठकों का आयोजन।
	● शिक्षक प्रशिक्षक व जिला अधिकारियों सहित शैक्षणिक संबलन पूल बनाना।
	● साक्षरता एवं संख्या ज्ञान आधारित उच्च गुणवत्तायुक्त डिजिटल सामग्री निर्माण।
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी और मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी(CDEOs/ CBEOs)	● शिक्षण अधिगम सामग्री और अन्य संसाधनों का वितरण।
	● प्रशिक्षण कार्यक्रमों और FLN गतिविधियों के क्रियान्वयन एवं मॉनीटरिंग करना।
	● जिला कोर ग्रुप एवं जिला, ब्लॉक अकादमिक समूह का गठन।
	● जिला एवं ब्लॉक अकादमिक समूह की नियमित बैठकें आयोजित करना।
ब्लॉक सन्दर्भ केंद्र, PEEOs/UCEEOs	● क्लस्टर कार्यशालाओं के आयोजन में सहयोग करना।
	● ब्लॉक और क्लस्टर स्तर पर निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों एवं क्रियाकलापों की प्रगति की मॉनीटरिंग करना।
	● गुणवत्ता सुधार की योजना तैयार कर क्रियान्वयन करना।
हैड टीचर और शिक्षक	● विद्यार्थियों का सीखना सुनिश्चित करने हेतु अध्यापक योजना डायरी, आधार रेखा संधारण, सतत रचनात्मक आकलन करना।
	● कक्षा-कक्ष में प्रिंट समृद्ध माहौल बनाना।
	● सभी बच्चों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए लक्ष्य प्राप्ति हेतु काम करना।
	● एसएमसी बैठकों में अभिभावकों की सीखने में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कराएं और बच्चों की शैक्षिक प्रगति साझा करें।
गैर सरकारी संगठन (एनजीओ)/सिविल सोसायटी संगठन	● निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए राज्य/विभाग के साथ कार्य करना।
	● शिक्षक क्षमता संवर्द्धन और संसाधनों के विकास, सतत गतिशीलता और जागरूकता, सामुदायिक भागीदारी आदि क्षेत्रों में सहयोग करना।
	● शिक्षण अधिगम हेतु सामग्री निर्माण में सहयोग करना।
स्कूल प्रबंधन समितियां, समुदाय और अभिभावक	● बच्चों की स्कूल में नियमित उपस्थिति और घर पर विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों के सीखने में प्रगति के अवसर प्रदान करना।
	● शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना।
	● बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर शिक्षकों के साथ निरन्तर संवाद करना।
	● विद्यालय की सहशैक्षिक गतिविधियों में अपना योगदान देना।
स्वयंसेवक	● कक्षा 3 तक के सभी विद्यार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु स्थानीय स्वयंसेवकों को चिह्नित कर उनके सहयोग से पीयर ग्रुप में सीखना सुनिश्चित करना।
निजी विद्यालय	● निजी विद्यालयों को बुनियादी अधिगम के महत्त्व पर जागरूकता बढ़ाने और सभी बच्चों के अधिगम परिणाम सुधारने हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान करना।

सहायक निदेशक
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर (राज.)
मो: 9694993045

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

भाषा शिक्षण - सिन्धी भाषा

❐ हिना सामनानी

राजस्थान शिक्षा विभाग में तृतीय भाषा के रूप में प्रचलित भाषाओं में से एक भाषा सिन्धी भाषा भी है। सिन्धी भाषा का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ा हुआ है तथा काफी विस्तृत है। हम यहाँ सिन्धी भाषा के इतिहास की बात न करते हुए सिन्धी भाषा के शिक्षण की बात करेंगे। सिन्धी भाषा के शिक्षण को हम मुख्य रूप से निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं:-

1. लिपि ज्ञान (लिपीअ जी जाण)
2. वर्णमाला ज्ञान (आईवेटा जी जाण)
3. व्याकरण ज्ञान (व्याकरण जी जाण)
4. वाक्य रचना (जुमिलनि जी रचिना)
5. मुहावरे और कहावतें/लोकोक्तियाँ (इस्तिलाह ऐं पहाका/चविणियूं)
6. रचनात्मक लेखन

1. लिपि ज्ञान (लिपीअ जी जाण):- सिन्धी भाषा को संविधान की 80वीं अनुसूची में दिनांक 10 अप्रैल, 1967 को मान्यता मिली थी। सिन्धी भाषा को दो लिपियों-देवनागरी और अरबी में लिखे जाने की मान्यता मिली थी। देवनागरी लिपि में अक्षर बाएं से दाएं तथा अरबी लिपि में दाएं से बाएं की ओर लिखे जाते हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो देवनागरी लिपि हिंदी की तरह और अरबी लिपि अरबी/फारसी/उर्दू की तरह लिखी जाती है। बिंदू संख्या 1 के शीर्षक में 'लिपीअ जी जाण' सिन्धी देवनागरी में लिखा हुआ है, जिसका अर्थ होता है लिपि की जानकारी। सिन्धी भाषा के सरल शिक्षण हेतु हम यहाँ केवल सिन्धी देवनागरी के शिक्षण की ही चर्चा करेंगे।

बहुत साधारण वाक्य हैं-

हिन्दी-राम/सीता जयपुर जाता/जाती है।

अंग्रेजी- Ram/Sita goes to Jaipur.

सिन्धी देवनागरी-राम/सीता जयपुर वञे थो/थी।

उपर्युक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि साधारण वाक्य में संज्ञा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। कर्म में जयपुर को जयपुर ही लिखा जाता है। क्रियापद 'जाना' अर्थात 'वञणु' के रूप 'जाता' को 'वञे' लिखा गया है। सहायक क्रिया 'है' का सिन्धी रूप 'थो/थी' शब्दों द्वारा संज्ञा के लिंग का निर्धारण होता है। सहायक क्रिया 'थो' 'पुल्लिंग' के तथा 'थी' 'स्त्रीलिंग' के लिए प्रयुक्त हुई है।

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि सिन्धी भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी भाषा की भाँति जैसी उच्चारण में होती है, वैसी ही लिखी जाती है।

2. वर्णमाला ज्ञान (आईवेटा जी जाण)- प्रत्येक भाषा की अपनी एक वर्णमाला होती है। इसी प्रकार सिन्धी भाषा की भी वर्णमाला होता है। जिसे सिन्धी में आइवेटा कहा जाता है। सिन्धी भाषा की अरबी लिपि की आइवेटा में 52 अक्षर होते हैं, देवनागरी लिपि में हिन्दी वर्णमाल के व्यंजनों के अतिरिक्त सिन्धी भाषा में निम्नांकित चार व्यंजन, जो सिन्धी भाषा के स्वयं की पहचान के व्यंजन हैं, जो कि सिन्धी भाषा के उच्चारण को अन्य भाषा के उच्चारण से अलग करते हैं। ये चार अंतस्थ या प्रस्फुटित ध्वनियाँ कहलाती हैं, जो निम्नांकित हैं-

- ब - ब
- द या ड - ड
- ग - ग
- ज - ज

वर्ण के नीचे लगी रेखा वर्ण का ही हिस्सा है, कई लोग इसे रेखांकित (Underline) समझने की भूल करते हैं।

जिस प्रकार हिन्दी में बारहखड़ी होती है। उसी प्रकार सिन्धी में 'डह अखिरी ककि' होती है। जिसे आम बोलचाल में 'ककि' कहते हैं। मात्राएँ उसी प्रकार लगती/उच्चारित की जाती है- क का की कु कू के कै को कौ कं कः

डह का हिन्दी अर्थ दस होता है। सिन्धी भाषा अं तथा अः को मात्रा का दर्जा न दिया जाकर चिह्न माना गया है। इस कारण 'बारहखड़ी' के स्थान पर 'डह अखिरी ककि' कहा गया है।

3. व्याकरण ज्ञान (व्याकरण जी जाण)- सिन्धी भाषा की व्याकरण लगभग हिन्दी भाषा की व्याकरण जैसी ही है। जिस प्रकार हिन्दी व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि होते हैं उसी प्रकार सिन्धी भाषा में क्रमशः इस्मु, जमीरु और सिफति होते हैं।

जिस प्रकार संज्ञा की परिभाषा है- किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

उसी प्रकार इस्म की परिभाषा है-कंहिं शइ, जगहि, माण्हअू या ख्याल जे नाले खे इस्मु चइबो आहे।

उक्त दोनों परिभाषाओं में प्रत्येक शब्द अनुवाद ही है। जैसे-किसी-कंहिं, शइ-वस्तु.. चइबो-कहते तथा आहे-हैं।

4. वाक्य रचना (जुमिलनि जी रचिना)- सिन्धी व्याकरण हिन्दी व्याकरण जैसी ही है, इस कारण वाक्य रचना भी हिंदी के समान ही होगी। हिन्दी वाक्यों में कर्त्ता, क्रिया तथा कर्म आदि होते हैं इसी प्रकार सिन्धी जुमिलों में फाइलु, फइलु ऐं मफउल होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले 'विराम चिह्नों' को 'बीहक जूं निशानियूं' कहा जाता है।

सिन्धी भाषा में विराम चिह्न (बीहक जूं निशानियूं) निम्नानुसार है-

- थोरो दमु : अल्प विराम (,)
- अधु दमु : अर्द्ध विराम (;)
- दम : विसर्ग (:)
- पूदो दमु : खड़ी पाई (।)
- सुवाल जी निशानी : प्रश्नवाचक चिह्न (?)
- हर्फ निदा जी निशनी : विस्यम बोधक चिह्न (!)
- वाक जूं निशनियूं : उद्धरण चिह्न (“ ”)
- डिंगियूं : कोष्ठक ( )

5. मुहावरे और कहावतें/लोकोक्तियाँ (इस्तिलाह ऐंपहाका/चविणियूं)- जिस प्रकार प्रत्येक सभ्यता में कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ हिन्दी घटनाओं, अनुभवों, प्रचलित रीतियों अथवा प्रतिदिन के कार्यकलापों से मिलकर बनती हैं। उसी प्रकार सिन्धी भाषा में मुहावरे और लोकोक्तियाँ प्रचलन में हैं, जिन्हें इस्तिलाह तथा पहाका/चविणियूं कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर 5-5 इस्तिलाह तथा पहाके यहाँ दिए जा रहे हैं-

इस्तिलाह

1. आसमान सां गाल्हियूं करणु- आसमान से बातें करना
2. दालि न गरणु- दाल नहीं गलना
3. अखियुनि में धूड़ि विझणु- आँखों में धूल झोंकना
4. पेट में कूआ डोडणु- पेट में चूहे दौड़ना
5. पौ बारहं थियणु- पौ बारह होना

पहाका

1. जंहिंजी लठि तंहिंजी मेंहिं–
   जिसकी लाठी उसकी भैंस
2. वडा दुकान फिका पकवान–
   ऊँची दुकान फीके पकवान
3. पुटु कुपुटु पींघें में पधिरो–
   पुत्र–कुपुत्र पालने में साफ दिखे।
4. चुगिली झेड़े जी माउ आहे–
   चुगली झगड़े की माँ है।
5. बाहि लगण ते खूहु खोटणु–
   आग लगने पर कुआँ खोदना

6. रचनात्मक लेखन– भाषा को सीखने के बाद उसका उपयोग रचनात्मक लेखन में किया जाता है। सिन्धी भाषा में भी प्रार्थना पत्र, पत्र–लेखन, निबंध लेखन जैसे रचनात्मक लेखन किए जाते हैं।

इनके सिन्धी अर्थ निम्न प्रकार हैं–

- प्रार्थना–पत्र–अर्जी या दरख़्वास्त
- पत्र– ख़तु
- निबंध–मजमूनु

प्रार्थना–पत्र लेखन (अर्जी या दरख्वास्त लिखणु)

दरख्वास्त में सबसे पहले पाने वाले का परिचय लिखा जाता है। जिसमें उस व्यक्ति का पदनाम अथवा नाम लिखा जाता है, जिसे दरख्वास्त प्रस्तुत की जानी है। जैसे–

सेवा में,

मानवारा हैडमास्टर साहिब

उसके बाद विषय लिखा जाता है। जिसमें दरख्वास्त का संक्षित विवरण होता है कि दरख्वास्त किस बारे में लिखी जा रही है। विषय के पश्चात अपना संक्षिप्त परिचय जो कि उस व्यक्ति, जिसे दरख्वास्त प्रस्तुत की जा रही है, उससे किस प्रकार सम्बन्धित है, लिखा जाता है। जैसे–

मां तव्हां जे स्कूल जे डहें दर्जे जो शागिर्दु आहियां। (मैं आपके विद्यालय की कक्षा दस का छात्र हूँ।)

परिचय के पश्चात अपनी समस्या बताते हुए समस्या के निस्तारण हेतु प्रस्ताव रखा जाता है और उससे सम्बन्धित मांग की जाती है।

अंत में अपना परिचय दिया जाता है। जैसे– तव्हांजो आज्ञाकारी शागिर्दु।

इसी प्रकार खतु (पत्र) के निम्नांकित भाग होते हैं–

1. खतु लिखण बारे जे रहण जो स्थानु/पतो (पत्र लिखने वाले का स्थान/पता)
2. खतु लिखण जी तारीख (पत्र लिखने की दिनांक)
3. आदर–सत्कारं जा शब्द (आदर–सत्कार सूचक शब्द)
4. अहिवालु (पूर्ण जानकारी)
5. खतु जी पछाड़ी (पत्र का अंतिम भाग)
6. खतु हासिल करण/लिखण वारे जो नालो पतो (पत्र प्राप्त करने वाले/लिखने वाले का नाम और पता)

वरिष्ठ अध्यापिका (सिन्धी)
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
जवाहर नगर, जयपुर
मो: 9460725909

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल

'मीरा' एवं 'एकलव्य' पुरस्कार विजेताओं को शैक्षिक हवाई भ्रमण की सौगात

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के मार्च–मई 2021 में आयोजित कक्षा 10 एवं 12 के परीक्षा परिणामों की घोषणा शिक्षा संकुल में माननीय शिक्षामंत्री श्री बी.डी. कल्ला एवं माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती जाहिदा खान के द्वारा कम्प्यूटर से की गई।

परीक्षा परिणामों में कक्षा 10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा पूजा चौधरी पुत्री श्री मदन लाल चौधरी, मोदी–सतलाना, जोधपुर एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली भावना यादव पुत्री श्री गजानन्द यादव, किशनगढ़–अजमेर 'मीरा पुरस्कार' प्राप्त विजेता रही तथा छात्र वर्ग में मुकेश कुमार पुत्र श्री रावता राम, शिवगंज सिरोही एवं विनोद मालव पुत्र श्री ओम प्रकाश मालव–तालेड़ा, बूंदी दोनों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर एकलव्य पुरस्कार विजेता रहे। इसी प्रकार मीरा पुरस्कार में कक्षा 12 में हर्षा पुत्री श्री हुकमा राम, सतलाना, लूणी, जोधपुर प्रथम रही एवं लक्ष्मी पुत्री श्री भाकर राम, लोहावट, जोधपुर द्वितीय रही।

'एकलव्य पुरस्कार' में जोशी उदय पुत्र श्री योगेश कुमार निवासी नावा नारोडा प्रथम एवं अनमोल जोशी पुत्र श्री दिनेशचन्द जोशी निवासी मांडल, भीलवाड़ा द्वितीय स्थान पर रहे। समारोह में माननीय शिक्षामंत्री श्री बी.डी. कल्ला ने उक्त चार प्रथम पुरस्कार विजेता (दो छात्र, उनके अभिभावक तथा दो छात्राएँ तथा उनके अभिभावक) के साथ हवाई स्वैच्छिक भ्रमण कराए जाने के निर्णय की घोषणा की गई।

इसी प्रकार जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त प्रत्येक छात्र एवं छात्राओं को भी 3 दिन व 2 दिन के लिए लक्जरी बस द्वारा (होटल व्यय सहित) शैक्षिक भ्रमण करवाए जाने की घोषणा माननीय शिक्षामंत्री महोदय द्वारा की गई। इसके अतिरिक्त सभी परीक्षाओं में राज्य, जिला एवं ब्लॉक स्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं की पुरस्कार राशि में भी क्रमशः प्रथम स्थान प्राप्त को 21,000/– रुपये व द्वितीय स्थान प्राप्त को 11,000/– रुपये देने की घोषणा की गई तथा जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार विजेता को 11,000/– व द्वितीय पुरस्कार विजेता को 5,100/– तथा ब्लॉक स्तर पर प्रथम पुरस्कार विजेता को 5,100/– व द्वितीय पुरस्कार विजेता को 3,100/– दिए जाने की घोषणा की गई जिससे परीक्षार्थियों में मनोबल एवं प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि हो तथा स्टेट ओपन की परीक्षाओं का प्रचार–प्रसार व्यापक स्तर पर हो सके।

समारोह के प्रारंभ में स्टेट ओपन स्कूल के निदेशक श्री प्रवीण कुमार लेखरा द्वारा माननीय द्वारा शिक्षा मंत्री श्री बी.डी. कल्ला, माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती जाहिदा खान, अतिरिक्त मुख्य सचिव–शिक्षा श्री पी.के. गोयल, माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री कानाराम, समसा परियोजना निदेशक डॉ. भंवर लाल का पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत किया गया। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के सचिव श्री रतनसिंह यादव ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

(मोहन गुप्ता मितवा) मितवा स्टूडियो
नाहरगढ़ रोड, जयपुर
मो: 9414265628

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

मैं चाहूँ तो मुस्करा सकता हूँ

कविः कुमार अजय; **प्रकाशक** : एकता प्रकाशन, गांधी नगर, चूरू-331001; **संस्करण** : 2020; **मूल्य** : ₹ 250; **पृष्ठ** : 96

ऐसे समय में जब कहानी-कविता जैसी विधाओं के मुकाबले डायरी बहुत कम लिखी जा रही है, डॉ जितेंद्र सोनी की 'यादावरी' के बाद साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार से सम्मानित राजस्थानी-हिंदी के युवा हस्ताक्षर कुमार अजय की एकता प्रकाशन, चूरू से प्रकाशित नई डायरी पुस्तक 'मैं चाहूँ तो मुस्करा सकता हूँ' का आना इस विधा के लिए एक अच्छी खबर की तरह है। सालभर के कालखंड पर संपूर्ण डायरी पुस्तक का प्रयोग भी संभवतः नया ही है लेकिन इस डायरी को तारीख की सीमाओं में बांधना एक तरह से ठीक नहीं क्योंकि इन घटनाओं का दोलन एक तरफ लेखक के बचपन को साध रहा है, वहीं भविष्य की आशंकाओं और आशाओं को भी डायरी समेट रही है। इस एक वर्ष में लेखक नौकरी के लिए घर से दूर और निरंतर यात्राओं में रहा है, जिसका प्रभाव भी कहीं न कहीं डायरी में परिलक्षित होता ही है।

कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, आलोचना का प्रभाव अपने भीतर समेटे कुमार अजय की यह डायरी संभवतः पहली डायरी है जिसमें प्रत्येक तिथि के लिखे को शीर्षक दिया गया है। अरूण प्रकाश कहते हैं कि डायरी सी विधा है कि जिस बर्तन में डालो, उसी का आकार ले लेगी। इसे अजय की यह किताब पूरी तरह चरितार्थ करती नजर आती है। अपने आप को बचाने वाली तिथियों को पुस्तक समर्पित करने वाले अजय स्मृतियों से संघर्ष की स्याह रातों में उम्मीद का दीपक जलाए रखते हैं, जो झंझावतों, दुरूहताओं, विद्रूपताओं के आगे बुझता नहीं है, लौ जलाए रखता है। डायरी में घटनाओं का जो तारतम्य, कथाओं का गुंफन, आत्मनिष्ठता का फैलाव उभरकर सामने आया है, वह काबिले-तारीफ है। डायरी विधा में आत्मनिष्ठता व वस्तुनिष्ठता में एक सूक्ष्म द्वंद्व होता है, जिसमें लेखक को काफी स्वतंत्रता रहती है और अजय ने उस स्वतंत्रता का भरपूर उपयोग किया है।

मूल रूप से कवि कुमार अजय का लेखन तीव्र छटपटाहट का लेखन रहा है। उनकी रचनाओं में यह छटपटाहट कभी समय के पहिये में घूमती नजर आती है तो कभी गहरे अन्तर्द्वंद्व से बाहर निकलने के प्रयास में अपनी छाप छोड़ती नजर आती है। उनके कथन 'उदास आदमी के पास अपना एक मोहक सपना होता है' या फिर 'मैं अपनी उदासी की तह में जाना चाहता हूँ' में हम इसे महसूस कर सकते हैं। लेखक का लिखना अनायास हो सकता है लेकिन इसके पीछे की प्रक्रिया की जटिलता का विषय वह स्वयं नीलकंठ बनकर तो पीता ही है, पाठक को अमृतपान कराने की जिम्मेदारी भी शिद्दत से निभा रहा है।

डायरी की शुरुआत लेखक ने अपने साथ 26 जनवरी 2018 को हुई मोबाइल चोरी की घटना से की है। सामान्य सी घटना को असामान्य ऊँचाई देकर 'साथियों सावचेत रहिए, डरते रहिए, जीते रहिए' के उद्घोष वाक्य से आरंभ कर लेखक यह साफ संकेत दे देता है कि इस डायरी में वह केवल 'मैं' को ही प्रतिष्ठित नहीं करेगा, व्यवस्था के हर कोने में जाकर उसका लूप होल सबके समक्ष उघाड़कर रख देगा क्योंकि दोस्तो 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। लाल किले की दीवार में यह संकेत द्रष्टव्य है कि आंकड़ों के जाल में उलझी यह व्यवस्था लाइन में खड़े अंतिम व्यक्ति को नारों में कब तक उलझाए रखेगी जबकि 'इधर पटवार भवन से लाल किले तक की दीवारें भीगी पड़ी हैं।'

प्रेम अजय की डायरी का अधिष्ठान बिंदु है, जिसमें शब्द पेड़ की टहनी से नव प्रस्फुटित होकर सुखद उम्मीद का अहसास कराते हैं। वे लिखते हैं, 'उनका रोना प्रेम के खिलाफ है। जाने वो कौन लोग हैं, जो नैतिकता से भरी इस दुनिया में प्रेम करते हैं।' अजय पता नहीं क्यों यह सवाल अनुत्तरित छोड़ जाते हैं कि प्रेम और नैतिकता विरोधाभासी क्यों है। वैसे इस बात का और किसी के पास भी क्या जवाब है। 'वह सफर था कि मुकाम था' में वे पुस्तक चर्चा के बहाने राजेन्द्र यादव और मैत्रेयी पुष्पा से जुड़े उन किस्सों को उजागर करते हैं, जिनसे सामान्य पाठक आमतौर पर अनजान ही है। हम लोग बॉलीवुड गॉसिप तक तो अक्सर पहुँच जाते हैं लेकिन सच है कि साहित्य भी इससे अछूता नहीं क्योंकि हर आदमी के भीतर कहीं न कहीं तो एक ही जैसी नदी बहती है। खुद अजय के शब्दों में, 'लोगों की परिस्थितियाँ ही होती हैं, जो उन्हें भिन्न बनाती हैं।'

अपने श्यामजी ताऊजी को याद करते हुए लेखक अपनी स्मृतियों को पाठक के सामने रखता है। पढ़ते हुए संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर फैमिली तक के चरम विघटन का चित्र भी हमारे समक्ष उपस्थित होता है। हम सब भी इसी दौर के गवाह हैं, हम साक्षी हैं इस तथ्य के भी कि हमारे बाद की पीढ़ी के लिए यह सब कुछ एक संग्रहालय में देखने जैसा ही बच पाएगा। एक पीड़ा यह भी लेखक संकेतित करता है कि ताऊजी की भूमिका वाले लोग अब गिनने लायक ही रह जाएंगे या लुप्तप्रायः हो जाएंगे और विडंबना यह कि इस तथ्य को किसी भी रेड डाटा बुक में दर्ज नहीं किया जाएगा। बकौल श्यामलाल ताऊजी, ''समझ्या'क थे?'

सुबह की सैर करते हुए कुमार अजय एक जगह पर उदास सुबह का वह चित्र प्रस्तुत करते हैं, जिसमें हर कोई चिंताग्रस्त, अनमना और दुविधाग्रस्त है। विवशता के कई चित्र लेखक अपने सूक्ष्म अवलोकन से प्रस्तुत कर पाया है मगर यह उम्मीद क्या कम है कि कुछ चिड़िया अनुशासन में हैं। लेखक का मां से बातचीत करते हुए सारी उदासी को छिपाकर 'यहाँ कोई दिक्कत नहीं मां' कहना मुनव्वर राणा की याद दिला जाता है, जब वे कहते हैं - 'मुनव्वर' मां के आगे यूं कभी खुलकर नहीं रोना/ जहाँ बुनियाद हो इतनी नमी अच्छी नहीं होती।' शायद यही पंक्ति पल भर में लेखक के लरजते होंठों और आंखों के नीचे की फड़फड़ाती चमड़ी को संभाल पाती है। यह भावातिरेक ही सच्चे अर्थों में अजय की डायरी को डायरी बनाता है, जहाँ वे डायरी से बात करते हैं, डायरी से तादातम्य स्थापित करते हैं, अपना व्यक्तित्व

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

निचोड़ कर रख देते हैं वरना यह डायरी कागजों में ही अपना दम तोड़ देती, पाठक के मन में अपनी छाप नहीं छोड़ पाती।

लेखक युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है और युवा पीढ़ी की मनगत सोशल मीडिया के माध्यम से खूब समझी जा सकती है। शायद यही कारण है कि कई घटनाओं में सोशल मीडिया, फेसबुक, मोबाइल, स्मार्ट फोन गाहे-बगाहे आ ही गए हैं किंतु काळी-पीळी आंधी पर सोशल मीडिया सनसनी के माध्यम से वे बताते हैं कि सोशल मीडिया का इवेंट मैनेजमेंट हमारे जीवन के कितने अंदर तक घुसपैठ कर चुका है। लेखक इस खतरे को घटना दर घटना महसूस करता है और चरम परिणति को प्राप्त करता है। लेखक ने ग्रामीण एवं किसानी जीवन को शिद्दत से भोगा है, जीया है तभी यह घटना इतनी जीवंत हो उठती है।

कुमार अजय ने अपनी डायरी में विषय वैविध्य का खास ध्यान रखा है। इसमें फिल्म समीक्षा है तो गीत-गजलों पर भी टीप है। इतिहास, धर्म, दर्शन, मनोविज्ञान, हास्य-व्यंग्य की पैनी धार भी आपको मिलेगी। वे घटनाक्रम में विषयों की विविधता को इस प्रकार पिरोते हैं कि कई घटनाएं, किस्से, किंवदंतिया, गॉसिप, सनसनी, रोमांच आपस में गुंफित होकर पाठक की रुचि को उदात्त भाव में लाकर साधारणीकरण कर देती है और ब्रह्मानंद सहोदर की रसदशा में पहुँचा देती हैं। ऐसे ही एक दिन पाली के नाडोल में पुरातात्विक उत्खनन से शुरू हुई बात नारायण सांई के काले कारनामों के सम्मोहन के बहाने वर्तमान राजनीति के गॉसिप तक पहुँच जाती है। लेखक को जिन चीजों की तलाश रहती है, पंकज उधास की गजल संध्या में भी वह एक अनमनी और उदास बैठी युवती के बहाने मिल ही जाती है। 'जीएं तो जीएं कैसे..' जैसे घोर फिल्मी गीतों पर युवती की आंखों से बहती उदासी उसका जीवन साथी नहीं देख पाता लेकिन लेखक चुपके से उसे बरामद कर ही लेता है। सवाल है कि यदि वह युवती यूं उदास नहीं नजर आती तो...? मगर यह लेखक की आत्मनिष्ठता है या कल्पना, जो भी हो, मगर यही डायरी को नया अर्थ देती है।

डायरी में उन्होंने लेखन के पारंपरिक दायरे को तोड़ा है। वे लिखते हैं तो जैसे कोई स्वच्छंद नदी सारे तट, किनारों को अपने साथ लेते हुए कोई नया ही प्रवाह पैदा कर रही है। इस नएपन को पाठक शिद्दत से महसूस कर सकता है। इस दौरान देखी गई फिल्मों 'संजू', 'केदारनाथ' और 'बधाई हो' पर उन्होंने जहाँ एक अलग दृष्टिकोण की फिल्म समीक्षा की है, वहीं इस बहाने जीवन, प्रेम, मृत्यु और दर्शन से जुड़ी महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां भी हमारे सामने आती हैं। तीनों फिल्मों का टेस्ट यूं तो अलग है मगर अजय इन फिल्मों के जरिए अपने मन की बात कहने में कामयाब होते हैं। 'संजू'के बहाने वे मानवीय रिश्तों के बीच की खाई को दिखाते हुए न्यायपालिका, मीडिया, राजनीति और अपराध के अनैतिक गठजोड़ को सामने लाते हैं तो 'बधाई हो' के जरिए नई पीढ़ी के वैचारिक दिवालिएपन और विडंबनाओं पर चर्चा करते हैं। उनका 'लेकिन सच यह भी है कि वर्तमान पीढ़ी का जुड़ाव अपनी पीढ़ी से इतना कमजोर है कि वह इस विषय को किसी नए और अचरज के साथ स्वीकार कर रहा है'कहना एक आईने की तरह है। फिल्म केदारनाथ के बहाने 'इश्क की भी क्या अजीब तासीर हो गई है' कहते हुए वे इस सच से सामना कराने में सफल रहे हैं कि प्रेम जैसे पवित्र विषय में भी हम जाति, धर्म से ऊपर सोचने को तैयार नहीं हैं।

कालजयी कवि जयशंकर प्रसाद के कहे 'आह से उपजा होगा गान'की तर्ज पर उदासी डायरी में जगह-जगह झलक रही है। 'प्यार से जरूरी कई काम है'शीर्षक से उन्होंने जो लिखा है, उसका आगाज ही चिरस्थाई उदासी से होता है, जिसमें उद्धृत पात्र, पाठ, उद्धरण सभी में यह उदासी सघन होती नजर आती है लेकिन बड़ी बात यह है कि लेखक इस उदासी में खोता नहीं है, डूबता नहीं है वरन पाठक को गहरी डुबकी लगवाकर पार करवाने का हुनर रखता है। वे जब कहते हैं कि 'उदास आदमी के पास एक कहानी होती है बहुत खूबसूरत सी' और 'दर्द जब सहने योग्य हो जाता है तो बहुत सुंदर हो जाता है' तो जैसे लगता है जैसे उदासी और दर्द को भी यथोचित सम्मान दिया जा रहा है। आमतौर पर उदासी में डूबे लेखक 'यही सुबह तो कल भी आनी है' में आत्महत्या की प्रवृत्ति पर एक व्यावहारिक विवेचन करते हुए आशावाद का संदेश भी दे जाते हैं कि जिंदगी बहुत खूबसूरत है और सुख-दुःख के सभी रंगों से मिलकर ही यह परफेक्ट है।

डायरी में व्यंग्य चित्र भी लेखक ने भरपूर उकेरे हैं। 'नेमप्लेट'में 'कुत्तों से सावधान' करते हुए उन्होंने आधुनिकता के दिखावे में उलझे उस वर्ग को टारगेट किया है, जो रात-दिन बनावटी जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। बारिश में भीगते हुए पार्क की बैंच पर अकेले बैठे हुए जब वे खुद के शहंशाह होने की परिकल्पना करते हैं तो जैसे हम सभी के भीतर बैठे अहंकार को आईना दिखा रहे होते हैं। स्वाध्याय के कम होने की प्रवृत्ति पर चिंता जताते हुए लेखन कितनी ईमानदारी से कहता है कि, 'एक रचनाकार होने के नाते मुझे जितना पढ़ना चाहिए, उतना नहीं पढ़ पाता'। यह ईमानदारी किसी भी डायरी या आत्मकथ्य की बुनियाद होती है। आधुनिक जीवन की आपाधापी, स्वनिर्मित प्रतिस्पर्धा, आत्मप्रवंचना के कारण हम सभी अब पढ़ने के बजाय देखने और सुनने को तवज्जो अधिक देने लगे हैं। लेखक ने आरंभिक दिनों में सरकारी और निजी क्षेत्र में अध्यापन का काम किया है, तभी दोनों क्षेत्रों के कटु अनुभव 'मुश्किल रातों से सटे दिन' में वे अभिव्यक्त कर पाए हैं। जाति, धर्म से जुड़ी संकीर्णताओं और कट्टरताओं पर, जहाँ भी अवसर मिला है, उन्होंने प्रहार करने की कोशिश की है और कोई भी बात करते-करते कोई अचानक तल्ख और गंभीर प्रतिक्रिया समसामयिक मसलों पर देने की उनकी अपनी कारीगरी है। लेखकीय सरोकार के प्रति यह सजगता लेखक का मूल धर्म है। अगर वह अपने धर्म का पालन नहीं करेगा तो राजधर्म का पालन नहीं करने वालों पर सवाल कैसे किए जा सकेंगे।

इसे सोशल मीडिया इफेक्ट ही कहा जाएगा कि एक साल की इस डायरी में वे बहुत सा हिस्सा छोड़ भी देते हैं, जो अधिक प्रामाणिक और जरूरी भी था। कुछ घटनाएं ज्यादा विस्तार पा रही हैं लेकिन यही अनगढ़ता डायरी का मूल गुण भी है जो उसे कृत्रिम नहीं बनने देता है। मन की गति बहुत तेज है और इस वर्ष लगातार यात्राओं में रहे कुमार अजय ने सच में मन की इस यात्रा को ही अंकित करने का काम किया है, घटनाएं बस एक जरिया हैं। डायरी लिखने का जोखिम लेखक ने उठाया है तो कुछ प्रश्न निजता

Rajasthan Education Department

पर भी स्वाभाविक तौर पर उठते हैं और डायरी पढ़ने के बाद भी अनुत्तरित हैं। ये अनुत्तरित प्रश्न ही इस डायरी की सफलता है। गालिब कहते हैं, 'रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल/ जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है।'

समीक्षक–**मोहन कुमार सोनी**
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जादंवा,
चूरू (राज.)–331001
मो : 8890838380

हरे रंग का मफलर

कवि : मदन गोपाल लढ़ा; **प्रकाशक** : इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा; **पृष्ठ** : 80; **संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹200/-

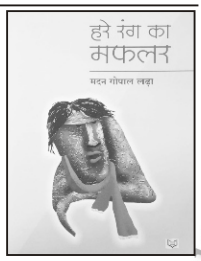

समकालीन कविता, कहानी, आलोचना और अनुवाद के क्षेत्र में युवा लेखक डॉ. मदन गोपाल लढ़ा एक प्रमुख नाम है, जो विगत दो दशकों से राजस्थानी और हिंदी साहित्य में सक्रिय है। सद्य प्रकाशित हिंदी कहानी संग्रह 'हरे रंग का मफलर' उनकी अठारह कहानियों का संकलन है। शीर्षक कहानी में ही नहीं संग्रह की अन्य कहानियों में भी एक युवा मन के विविध भावों और खासकर मूक प्रेम की संयमित अभिव्यक्ति प्रमुखता से देखी जा सकती है। इस कहानी में कथानायक के यहाँ एक मफलर 'गिफ्ट' के रूप में पहुँचता है, जिसे अनुष्का ने भेजा है। 'मैंने मफलर को गले में लपेटा तो ऊन के साथ अनाम रिस्ते की गर्माहट को भी करीब से महसूस किया।' और कहानी फ्लैश–बैक में चलती है। कहानीकार बहुत सयंमित भाषा में परत–दर–परत संबंधों को बहुत ईमानदारी से उजागर करता जाता है कि कब, कहाँ, क्या और कैसे हुआ? और फिर उसके पास दस्तावेजी जन्मदिन पर उसका कोई 'गिफ्ट' पहुँचने लगा। कहानी के अंत में कथानायक की सात साल की बिटिया मफलर को देखकर बोली– 'पापा यह तो मैं लूंगी।' और कथानायक एकबारगी चौंकते हुए सहज होकर मफलर को उसके गले में डाल देता है। यह छोटी सी कहानी जो एक स्मृति के साथ एक बड़ी कहानी को प्रस्तुत करती है का समापन कथानायक के अपनी बेटी को करीब खींचकर मोबाइल से दोनों की सेल्फी लेने और 'थैक्स वैरी मच' के साथ अनुष्का को व्हाट्सएप करने की पंक्ति पर पूरी होती है।

हमारे समाज में स्त्री–पुरुष के संबंधों को एक बंधे–बधाए सांचे के अंतर्गत ही देखते हैं और इन कहानियों में भी सांचों के समानांतर अनेक मनः स्थितियों को अभिव्यक्ति करते हुए संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की मांग मुखरित होती है।

'बुद्धं शरणं गच्छामि', 'रेलवे स्टेशन', 'अधूरी पंक्ति', 'चमेली की महक' और 'सिर्फ अंधेरा' आदि ऐसे ही मूक प्रेम अथवा प्रेम की राहों में पीछे छूट जाने को अभिव्यक्ति देती है, यह ऐसा प्रेम है जिसे संबंध के रूप में पहचाना तो गया है किंतु वह किसी प्रचलित परिभाषा से परिभाषित होने से वंचित रह गया है। कहनीकार मदन गोपाल लढ़ा की इन कहानियों में बहुत कोमलता के साथ आहिस्ता–आहिस्ता एक–एक कर स्थितियों और मनोभावों को प्रस्तुत करना बेहद मार्मिक और प्रभावित करने वाला है कि वे बहुत कम शब्दों में जैसे छोटे कैनवास पर जीवन के बडे प्रसंग को रूपाकार करने में समर्थ–सिद्ध हैं।

कहानी 'एक्सरे' में स्त्री–पुरुष जीवन की मानसिक संरचनात्मक–त्रासदी अभिव्यक्त हुई है कि विवाह पश्चात स्त्री अपनी सहनशीलता को बनाए रखती है किंतु दूसरी तरफ पुरुष अपनी पत्नी के विगत जीवन में किसी संबंध अथवा सामान्य लोक व्यवहार को भी 'एक्सरे' से परखने की प्रवृत्ति रखता है। संबंध कोई भी हो उसमें प्रेम का सूत्र समाहित होता है। 'पारिजात का फूल' कहानी में पारिजात और चमेली के फूल के माध्यम से नखत सिंह जी का मनोरम चरित्र प्रस्तुत किया गया तो कोरोना काल के समय को व्यंजित करती कहानी 'इक मुस्कान जो खिली' में रोज कमाकर खाने वाले परिवारों के संकट कि दिहाड़ी के नाम पर अपने परिवार का खाना मांग कर काम करने की मार्मिक अभिव्यक्ति है।

मानव व्यवहार और संबंधों को परिभाषित करना अथवा मनोभावों को सहज रूप में जान लेना बेहद कठिन होता है। आधुनिक जीवन की दौड़–भाग और यांत्रिकता के बीच भी कुछ लोग ऐसे हैं जिनके कार्यों पर हम गर्व कर सकते हैं। 'स्माइली जैसा कुछ' कहानी ब्लड–डोनर की तलाश में जीवन के सकारात्मक पक्ष की अभिव्यक्ति है। आधुनिक समय और समाज में कैपटाउन में बैठी फाल्गुनी अहमदाबाद के मरीज के लिए तीन हजार रुपये ऑनलाइन देकर जैसे पुन्न कमा रही हो। मदन गोपाल लढ़ा की इन छोटी–छोटी कहानियों में जैसे देश विदेश के अनेक स्थलों को समेटते हुए एक व्यापक और विशद परिदृश्य प्रस्तुत होता है। यहाँ कहानीकार के गुजरात प्रवास से संबंधित कुछ कहानियाँ भी हैं जैसे– 'जमवानु तैयार छे' संभवतः उनके व्यक्तिगत प्रसंग से जुड़ी एक कहानी है। मन कहीं कुछ कह और कर पाता है तो कहीं बस वह मूक रह जाता है। इन कहानियों का केंद्र स्मृति है और कहानी 'किराये का घर' में कथानायक ना चाहते हुए भी अपनी स्मृतियों में खोया स्वतः अपने पुराने किराये के घर के दरवाजे तक पहुँच जाता है।

कहानीकार के अनुसार मन बड़ा चंचल होता है और उसे पग पग पर संभालकर रखना होता है। 'मोड़ से पहले' कहानी सड़क पर सफर करते ड्राइवर और खलासी की कहानी है जिसमें संयमित जीवन का संदेश है वहीं 'नमकीन टेस्ट' के माध्यम से व्यक्ति के चारित्रिक पतन को उजागर किया गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पंजाबी के प्रख्यात साहित्यकार डॉ. जगविंदर जोधा ने इस पुस्तक के फ्लैप पर लिखा है– 'हमारे पंजाबी की कहानी अत्यधिक नवीनता दिखाने की कोशिश में नाना प्रकार के कथा–प्रयोगों को ओढ़ लेती है। इससे कथा–रस क्षीण हो जाता है। इसकी तुलना में मदन गोपाल लढ़ा की कहानियाँ कहीं अधिक सरल एवं कथा–रस से सराबोर है। यह जमीन से उनके जुड़ाव को दर्शाता है।' निसंदेह कहानीकार लढ़ा जमीन से जुड़े कहानीकार है और इन कहानियों की कलात्मकता इनकी सरलता–सहजता और सहज प्रवाह में जीवन की अभिव्यक्ति में निहित है।

समीक्षक–**डॉ. नीरज दइया**
सी–107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी, बीकानेर,
(राज.)–334003
मो: 9461375668

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

मेरे सपनों का भारत

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के लोग एक-दूसरे के साथ सद्भाव से रहते हैं। भारत में पिछले कुछ दशकों में विज्ञान प्रौद्योगिकी, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में बहुत विकास हुआ है। मैं एक पूरी तरह से विकसित देश के रूप में भारत का सपना देखती हूँ जो न केवल उपर्युक्त क्षेत्रों के उत्कृष्टता हासिल करेगा बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी बरकरार रखेगा।

भारत एक बहु सांस्कृतिक, बहुभाषी और बहु-धार्मिक समाज है, जिसने पिछली शताब्दी में विभिन्न क्षेत्रों में स्थिर ख्याति देखी है। मैं ऐसे भारत का सपना देखती हूँ जहाँ हर नागरिक शिक्षित होगा और हर किसी को योग्य रोजगार के मौके मिल सकेंगे। शिक्षित और प्रतिभाशाली व्यक्तियों से भरे देश के विकास को कोई रोक नहीं सकता। 2047 में भारत को आजादी मिले 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। मेरे सपनों का भारत एक ऐसा भारत होगा जहाँ लोगों को उनकी जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। जो राष्ट्र को मजबूत करने में काफी महत्त्वपूर्ण कदम होगा। मेरे सपनों का भारत तकनीकी क्षेत्र के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में तेजी से प्रगति करेगा। मेरे सपनों का भारत में कोई लिंग आधारित भेदभाव नहीं होगा। जहाँ पुरुषों और महिलाओं को बराबर माना जाएगा।

मैं ऐसे भारत का सपना देखती हूँ जहाँ मान-सम्मान मुख्य रूप से नागरिकों के बीच विद्यमान होता है। राष्ट्र की वृद्धि में शिक्षा का अभाव मुख्य बाधाओं में से एक है। सरकार शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता फैलाने के प्रयास कर रही है। हालांकि यह सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाने चाहिए कि देश में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार मिलना जरूरी है। जातिवाद एक और बड़ा मुद्दा है जिस पर काम करने की आवश्यकता है। मेरे सपनों का भारत एक ऐसा स्थान होगा जहाँ लोगों से जाति, पंथ या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता हो। मेरे सपनों का भारत एक स्थान होगा जहाँ महिलाओं को सम्मान दिया जाता है और पुरुषों के बराबर महत्त्व दिया जाता हो। एक ऐसी जगह होगी जहाँ महिलाओं की सुरक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण होगी। मेरे सपनों का भारत और अधिक गति से आगे बढ़ें। मेरे सपनों का भारत सब तरह से फलता-फूलता होगा। गाँवों में किसान अपनी भूमि के मालिक होंगे। हर गाँव में भी प्राथमिक पाठशाला होगी। शिक्षा में औद्योगिक और यांत्रिकी विषयों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाएगा। इस प्रकार मेरे सपनों का भारत एक महान और आदर्श देश होगा।

अनिता कुमारी, कक्षा-11
राजकीय माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, सायला, जालोर (राज.)
मो: 8890986017

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

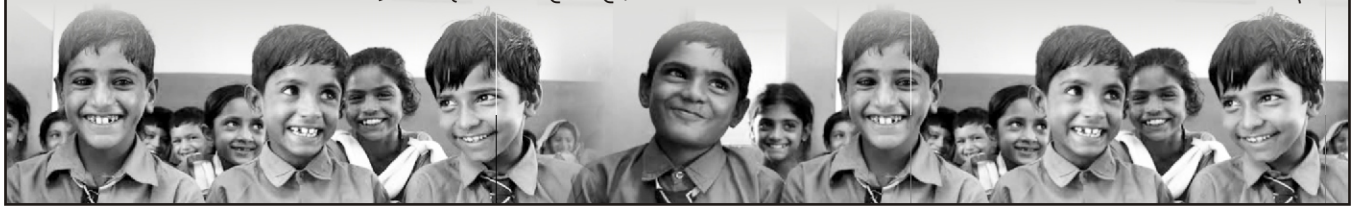

पतंग

सबसे तेज बौछारें गयी भाद्दो गया सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर-जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पंतग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-
दुनिया की सबसे हलकी एवं रंगीन चीज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
और तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया।।

दीपिका कुमारी, कक्षा–9
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डूडवा, सीकर (राज.)
मो: 7877555221

बसंत पंचमी

अलौकिक आनंद अनोखी छटा।
अब बसंत ऋतु आई है।।
कलिया मुस्काती हंस-हंस गाती।
पुरवा पंख डोलाई है।।
महक उड़ी है, चहके चिड़िया।
भंवरे मतवाले मंडरा रहे हैं।।
सोलह श्रृंगार से क्यारी सजी है।
रस पीने को आ रहे हैं।।
लगता है इस चमन बाग में।
फिर से चांदी उग आई है।।
अलौकिक आनंद अनोखी छटा।
अब बसंत ऋतु आई है।।
कलिया मुस्काती हंस-हंस गाती।
पुरवा पंख डोलाई है।।

रोनक रोहलिवाल, कक्षा–12 (वर्ग–बी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डूडवा, सीकर (राज.)

बोध कथा

महात्मा रामानुजाचार्य अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण नदी स्नान करने जाते हुए लोगों का सहारा लेकर जाया करते थे। जाते समय वे ब्राह्मण के कंधे का सहारा लेते और आते समय अन्य जातियों के व्यक्तियों के कंधे पर हाथ रखकर आते। रामानुजाचार्य के इस विचित्र व्यवहार को देखकर लोगों ने आश्चर्यपूर्वक पूछा– 'भगवन्! ऐसा आप क्यों करते है?'

रामानुजाचार्य मुस्कराए और कहा–'सज्जनों! स्नान से मात्र मेरी देह शुद्ध होती है। मन का मैल तो अहंकार है। जब तक मनुष्य में अहंकार शेष है तब तक उसे मन का मलिन ही कहा जाता है। मैं ऐसा करके अपने मन की मलिनता को स्वच्छ करता हूँ। मैं किसी से बड़ा नहीं, सब मुझसे बड़े है। इसी भावना को स्थित करने के लिए मैं सभी का सहारा लिया करता हूँ।' स्वामी रामानुजाचार्य के इस कथन ने पूछने वाले को एक नई जीवन दृष्टि प्रदान की।

तुलसी कुमारी, कक्षा–7
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, जालोर (राज.)

बोध कथा

बौद्ध भिक्षु पूर्ण ने तथागत से समाज में धर्मोपदेश करने हेतु जाने की आज्ञा माँगी। भगवान बुद्ध ने उसकी इस कार्य के योग्य पात्रता को मापना आवश्यक समझा। अतः उन्होंने उससे कहा– वत्स वहाँ के लोग बड़े कठोर है? तुम्हें अपमानित करेंगे। शिष्य पूर्ण ने हाथ जोड़कर शांत भाव से कहा–'भगवान! यह फिर भी अच्छा है कि वे कम से कम मारेंगे तो नहीं।' पात्रता की कसौटी को थोड़ा और कसते हुए बुद्ध ने आगे कहा– पूर्ण और यदि मारने लगे तो? निश्चित अवस्था में खड़े पूर्ण ने उत्तर दिया– 'तो क्या हुआ भगवान। वे मरे प्राण तो न लेंगे।

भगवान बुद्ध ने पूर्ण के विवेक की पराकाष्ठा का परीक्षण करते हुए पुनः प्रश्न किया–'कदाचित ऐसा ही हो गया तो? पूर्णतः निर्द्वंद्व भाव में उसने उत्तर दिया–'भगवान! यह शरीर परोपकार में नष्ट हो जाए तो जीवन सार्थक ही होगा। पूर्ण की विवेक ख्याति को उसकी सहज अवस्था में दिए उत्तरों से सुनकर बुद्ध बहुत प्रसन्न हुए और अपना आशीर्वाद देते हुए बोले–'जाओ वत्स! धर्म तुम्हारी अवश्य रक्षा करेगा। लोकसेवी में ऐसा ही सत्साहस होना चाहिए। 'बुद्ध को साष्टांग प्रणाम कर पूर्ण अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गया।

रीतु कुमारी, कक्षा–8
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़, जालोर (राज.)

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

एक दिवसीय विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निचली सिगरी ब्लॉक फलासिया में एनसीआरटीसी कार्यक्रम के तहत मंगलवार को जिला स्तरीय एक दिवसीय विज्ञान कार्यशाला आयोजित की गई। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली के नेशनल कॉउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन कार्यक्रम के अंतर्गत सृष्टि सेवा समिति उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जिला स्तरीय एक दिवसीय विज्ञान कार्यशाला में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रवि बघेल सृष्टि सेवा समिति, अति विशिष्ट अतिथि श्री सोहनलाल जन्नावत एवं श्री हितेश शर्मा थे। निचली सिगरी संस्थाप्रधान श्री जयदीप कोठारी ने बताया कि जिला स्तरीय एक दिवसीय विज्ञान कार्यशाला से पूर्व कलस्टर त्रिस्तरीय विज्ञान कार्यशालाओं का तथा उससे पूर्व ब्लॉक में विद्यालय स्तरीय विज्ञान कार्यशाला का आयोजन सेवा सृष्टि समिति के तत्वावधान में आयोजित हुई और जिला स्तरीय विज्ञान कार्यशाला में समूह वाद-विवाद, निबंध, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, पोस्टर प्रतियोगिता, मॉडल प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई। इस मौके पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी डॉ. बाल गोपाल शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम इस जनजाति क्षेत्र के बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण पहल है, ताकि भविष्य के वैज्ञानिकों की नींव रखी जा सके। विद्यालय, कलस्टर एवं जिला स्तरीय विज्ञान कार्यशाला में अध्यापक श्री किरोड़ी लाल यादव राजकीय प्राथमिक विद्यालय भगोराफला ने अपनी अहम भूमिका निभाई और बालक-बालिकाओं में विज्ञान के प्रति अपने दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु प्रेरित करने का कार्य किया, जिसके लिए उन्हें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली के नेशनल कॉउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन कार्यक्रम के अंतर्गत सृष्टि सेवा समिति उदयपुर द्वारा बेस्ट परफॉर्मेंस वर्कर के लिए प्रथम पुरस्कार और प्रशंसा पत्र दिया गया। जिला स्तरीय विज्ञान कार्यशाला में बेस्ट परफॉर्मेंस विद्यालय के लिए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निचली सिगरी को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

विद्यालय में सहयोग के लिए पूर्व शिक्षक आगे आए

जालोर– जालोर जिले के जसवंतपुरा पंचायत समिति के राजकीय प्राथमिक विद्यालय इंदिरा कॉलोनी सोमता से प्रधानाध्यापक श्री रणजीत जीनगर के सहयोग से पूर्व में इस विद्यालय में अध्यापक के रूप में पदस्थापित श्री रामगोपाल पुरोहित सोमता द्वारा विद्यालय को प्रिंटर भेंट किया गया। इस मौके पर अध्यापिका ममता मीना व पेराटीचर इन्द्रा देवी मौजूद रहीं।

विराट स्कूल को मिला भामाशाह का विराट सम्बलन

जालोर– राउमावि. विराट (रानीवाड़ा) के नवीन परिसर(माली डूंगर) में अध्ययनरत बच्चों की पेयजल संबंधित समस्या को देखते हुए अपनी संवेदनशीलता प्रकट कर सागवाड़ा नगर के कुवैत में रहने वाले अप्रवासी भारतीय श्री अजीज रज्जब अली पेश और श्री मन्नान शम्स अली सगीर द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री प्रवीण जी जोशी को 60000/- की राशि भेंट की गई। भामाशाहों ने श्री मुकेश/मोहनलाल जी भट्ट गामोठवाडा सागवाड़ा की प्रेरणा से विद्यालय को यह राशि भेंट की। प्रधानाचार्य श्री प्रवीण जोशी और पूरे स्टाफ सहित विद्यालय के बालक बालिकाओं ने इस हेतु दोनों भामाशाहों और मुकेश जी भट्ट का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

सांगरिया विद्यालय में जल मंदिर लोकार्पण

चित्तोड़गढ़। अखिल विश्व गायत्री परिवार हरिद्वार के तत्वावधान में पूज्य

गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम् वंदनीय माताजी भगवती देवी शर्मा के आशीर्वाद एवम प्रेरणा स्वरूप गाँव सांगरिया (बड़ी सादड़ी) में श्री गोपाल सोनावा द्वारा 'हीरा-सूरज जल मंदिर' बना कर स्कूल के छात्रों को लोकार्पण किया। उक्त जल मंदिर स्वर्गीय श्री हीरालाल जी सोनावा ओर उनके अनुज श्री सूरजमल जी सोनावा की पुण्य स्मृति में बना कर जिसमें उपस्थित राष्ट्रीय प्रवक्ता साहू महासभा श्री जगनाथ सोलंकी एवं निम्बाहेडा पार्षद श्री बन्सीलाल राइवल, सांगरिया सरपंच श्री अंबालाल गुर्जर, प्रधान श्री नंदलाल मेनारिया, सांगरिया विद्यालय प्रधानाचार्य श्री सवाई लाल मीणा एवं सम्पूर्ण विद्यालय स्टॉफ, गोपाल सत्संग आश्रम के पीठाधीश श्री श्री 1008 स्वामी सुदर्शनाचार्य जी एवं सोनावा परिवार से उनकी दाई माँ भागवंती देवी बाई एवं माताजी हीरा बाई एवं समस्त सोनावा परिवार की उपस्थिति में संरक्षण में शुभारंभ किया एवं सामाजिक एवं प्रेरणात्मक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहे।

स्काउटर शिक्षक नरेन्द्र सिंह रावत 'वाटर हीरोज' पुरस्कार से सम्मानित

अजमेर–केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण सचिव श्री पंकज कुमार ने अपने हस्ताक्षर युक्त प्रशस्ति पत्र सहित 10 हजार रुपये की राशि पुरस्कार स्वरूप स्काउटर शिक्षक श्री नरेन्द्र सिंह रावत को प्रदान की। शिक्षक श्री नरेन्द्र सिंह रावत गत कई वर्षों से कोटड़ा व अलग अलग शिक्षण संस्थाओं एवं सार्वजनिक स्थानों पर समुदाय व स्काउट एवं विद्यार्थियों के साथ मिलकर जल संरक्षण हेतु उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। वर्षा जल संचयन, भूमि जल संरक्षण, संस्थाओं व घरों के बेकार बहते पानी का प्रबंधन सहित जन जागरण द्वारा आम जन को जल प्रबंधन हेतु जागरूक करने का कार्य निरंतर जारी हैं। उनके इन्हीं कार्यों की प्रगति रिपोर्ट के आधार पर उन्हें यह उपलब्धि हासिल हुई हैं। उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर जून 2021 का 'वाटर हीरोज' विजेता घोषित किया गया हैं। इस शानदार उपलब्धि पर कोटड़ा विद्यालय परिवार व विद्यालय प्रबंधन समिति ने हर्ष व्यक्त करते हुए शिक्षक रावत को बधाइयाँ दी। उल्लेखनीय हैं कि कोटड़ा विद्यालय को शिक्षक श्री नरेन्द्र सिंह रावत के निर्देशन में अभी तक पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन, कचरा प्रबंधन व जैव विविधता के क्षेत्र में कई राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं।

ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया

जयपुर– महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मानसरोवर द्वारा स्वामी विवेकानन्द की 159वीं जयंती के अवसर पर ऑनलाइन वेबीनार आयोजित की गई, जिसमें सभी छात्र-छात्राओं ने वर्चुअल उपस्थिति दी। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी द्वारा छात्र-छात्राओं को कॅरियर गाइडेंस प्रदान की गई। विद्यालय के शिक्षकों श्रीमती पद्मश्री शर्मा, श्री जीतेन्द्र टेलर, श्रीमती सीता कँवर, डॉ. सन्तोष कुमार जाखड़ एवं डॉ. सुरेश कुमार यादव द्वारा विवेकानन्द के जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई। विद्यालय में इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी द्वारा कॅरियर बुलेटिन बोर्ड का भी उद्घाटन किया गया जिसके द्वारा छात्र-छात्रा अपने कॅरियर सम्बन्धी जानकारियाँ ऑनलाइन प्राप्त कर सकेंगे।

पुण्यतिथि पर विद्यालय को किया वाटर कूलर सप्रेम भेंट

सीकर: राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भिराणा (लोसल) में भामाशाह ठाकुर मानसिंह ने अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती गुमानकंवर की प्रथम पुण्यतिथि पर गर्मी में बालकों को शीतल जल उपलब्ध हो इस हेतु वाटर कूलर भेंट किया। इस अवसर पर सर्वश्री नादान सिंह, शायर सिंह, राजेन्द्र सिंह भिराना, व्याख्याता बृजेश चौहान, सुमन बुरड़क, श्रवण कुमार टांक, खुमाण सिंह, शिक्षक अर्जुन सिंह, शिंभू कुमार, झाबरमल, सपना चौधरी, भंवर सिंह, बसंती चौधरी, नरपतसिंह, देवेंद्र सिंह, सुरजीत सिंह, अजय सिंह, महेंद्र सिंह, बनवारी सिंह सहित प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर वरिष्ठ अध्यापक श्री सत्यनारायण रोलन ने कहा कि विद्यालय में दिया गया दान आने वाली पीढ़ियों को सुसंस्कृत, आदर्शवादी करने का कार्य करेगा, साथ ही भामाशाह परिवार का अभिनदंन करके धन्यवाद प्रेषित किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

श्रीमती गीता देवी बागड़ी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय नापासर, बीकानेर

(भामाशाह श्री कन्हैया लाल जी मूँधडा अध्यक्ष, श्रीमती सी.एम. मूँधडा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा निर्मित)

❒ मंजू वर्मा

सम्पूर्ण भारतवर्ष में राजस्थान ने अपनी संस्कृति से अलग की पहचान बनाई है, राजस्थान स्थापत्य कला, मूर्तिकला व साहित्य के क्षेत्र में अपने आप में अद्वितीय है। रेगिस्तानी क्षेत्र में रोजगार के अवसर की कमी के कारण यहाँ के निवासी व्यवसाय के लिए सूरत, कलकत्ता, मुम्बई की तरफ रुख करते हैं। राजस्थान के निवासियों ने कार्य के प्रति समर्पण, लगन व निष्ठा, कठोर परिश्रम व तीक्ष्ण बौद्धिक क्षमता से व्यवसाय में निरन्तर वृद्धि की है। अन्य राज्य में निवास के बावजूद भी जन्मभूमि के प्रति उनका प्रेम कम नही हुआ है। जननी एवं जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान होती है इसी उक्ति को चरितार्थ करते हुए कई व्यवसायियों ने अपनी जन्म भूमि के कर्ज को चुकाने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में दान देकर अभूतपूर्व अविस्मरणीय कार्य किए हैं।

राजस्थान राज्य की छोटी काशी नाम से विख्यात बीकानेर जिला मुख्यालय से 30 कि.मी. दूर स्थित ग्राम नापासर महाराजा नापाजी सांखला द्वारा स्थापित राज्य की बड़ी ग्राम पंचायतों में से एक है। नापासर की इस पावन धरा पर जन्मे भामाशाह श्री कन्हैयालाल मूँधड़ा व श्रीमती गीतादेवी बागड़ी ने बालिका शिक्षा हेतु भवन निर्माण करवाकर सरकार को सुपूर्द करने का अतुलनीय कार्य किया है। इन महान विभूतियों, भामाशाहों का नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

भामाशाह परिचयः–

पूर्व भामाशाह–श्रीमती गीता देवी बागड़ी
जन्म स्थान– नापासर
पति– श्री मांगीलाल बागड़ी, निवासी–नोखा
पुत्र– श्री जगदीश बागड़ी
वर्तमान भामाशाह– श्री कन्हैयालाल जी मूँधड़ा
पुत्र श्री मन्नालाल जी मूँधड़ा
जन्म स्थान– नापासर
अध्यक्ष–श्रीमती सी. एम. मूँधड़ा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट
भ्राता– श्री देवकिशन जी, श्री किशन जी, श्री द्वारका प्रसाद जी, श्री संतोष कुमार जी

श्रीमती गीता देवी बागड़ी नापासर में जन्मी थी, जन्मभूमि के प्रति उनके अगाध प्रेम के कारण उनकी इच्छा थी कि नापासर में बालिकाओं की शिक्षा हेतु विद्यालय भवन बनवाकर सरकार को सुपुर्द करें। श्रीमती गीता देवी ने पति श्री मांगीलाल बागड़ी से विद्यालय भवन निर्माण की इच्छा प्रकट की। पत्नी की भावना का सम्मान करते हुए भामाशाह श्री मांगीलाल बागड़ी ने विद्यालय भवन निर्माण कर विभाग को सुपूर्द कर दिया। जिससे सन् 1972 में विद्यालय का नामकरण श्रीमती गीता देवी बागड़ी राबामावि. के नाम से संचालित हुआ। सन् 2001 में माध्यमिक से उच्च माध्यमिक स्तर में क्रमोन्नत हुआ।

सन् 2016 में अत्यधिक वर्षा के कारण एवं भवन की नींव कमजोर होने कारण विद्यालय का भवन जर्जर स्थिति में आ गया। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से श्रीमती सी.एम. मूँधड़ा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट के मुखिया भामाशाह श्री कन्हैयालाल जी मूँधड़ा ने विभाग एवं संस्थाप्रधान से नवीन भवन निर्माण कर देने की इच्छा प्रकट की। सर्वप्रथम संस्था प्रधान ने पूर्व भामाशाह श्रीमती गीता देवी बागड़ी के सुपत्र श्री जगदीश प्रसाद बागड़ी से इस संबंध में वार्ता की। श्री जगदीश बागड़ी से वार्ता के

दौरान यह निर्णय किया हुआ कि जर्जर भवन को धवस्त करके कोई भी भामाशाह नवीन भवन निर्माण करवा सकते हैं परन्तु विद्यालय का नाम पूर्ववत् ही रहेगा। संस्थाप्रधान के द्वारा श्री जगदीश बागड़ी के इस निर्णय से भामाशाह श्री कन्हैयालाल जी को अवगत करवाया गया। श्री कन्हैयालाल जी ने इस निर्णय को सहर्ष स्वीकार करते हुए कहा कि 'मुझे नाम, यश, प्रसिद्धि व प्रशंसा की कोई अपेक्षा नहीं है, नाम किसी का भी हो मैं बालिका शिक्षा हेतु सहयोग का कार्य करना चाहता हूँ' भामाशाह श्री कन्हैयालाल जी मूँधड़ा के निष्काम कर्म की प्रवृत्ति के कारण नवीन भवन निर्माण का सपना साकार हुआ।

जर्जर भवन को धराशायी करने के उपरान्त नए भवन के निर्माण हेतु 10 मई 2018 को नींव पूजन का कार्यक्रम रखा गया एवं 01 वर्ष पूर्ण होने के उपरान्त 20 जून 2019 को विधिवत 03 मंजिला नवीन आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवन का लोकार्पण किया गया। जिसकी लागत 05.30 करोड़ रही है, उक्त भवन 35000 वर्ग मीटर क्षैत्रफल में बनकर तैयार हुआ है। भवन में कुल 39 कमरे हैं जिसमें 26 कक्षा-कक्ष, प्रधानाचार्य कक्ष, स्टाफ कक्ष, कार्यालय कक्ष, गृह विज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्यूटर प्रयोगशाला, ब्यूटी एण्ड वेलनेस प्रयोगशाला, तीन विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय कक्ष, परीक्षा कक्ष एवं दो स्टोर रूम बनाए गए हैं। तीन मंजिला भवन में प्रत्येक मंजिल पर पृथक-पृथक सुविधाएँ, शीतल जल की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त 1000 छात्राओं हेतु फर्नीचर, कार्यालय एवं प्रधानाचार्य हेतु फर्नीचर, प्रयोगशाला सामग्री, सी.सी.टी.वी. इत्यादि का सहयोग भी भामाशाह श्री मूँधड़ा द्वारा किया गया है। भामाशाह द्वारा जुलाई 2019 से बालिकाओं के शिक्षण हेतु विभाग को सुपुर्द कर दिया गया।

भामाशाह श्री मूँधड़ा द्वारा कहा गया कि 'इस तीन मंजिला भवन की सार्थकता तभी है जब यहाँ अध्ययनरत बालिकाएँ अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो।' सत्र 2019-20 में तीनों सत्रों का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा है।

श्रीमती सी.एम. मूँधड़ा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय को तीन वर्ष हेतु गोद भी लिया गया है। जिसमें भामाशाह द्वारा प्रतिवर्ष 5.52 लाख रुपये का व्यय वहन किया जाएगा।

विभागीय सहयोग- भामाशाह द्वारा बालिका विद्यालय के नवीन भवन के निर्माण को पूर्व भामाशाह की शर्त पर करने को स्वीकार करते हुए, विभागीय अनुमति चाही गई। जिस हेतु श्रीमती सी.एम. मूँधड़ा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से ज्ञान संकल्प पोर्टल पर नवीन विद्यालय भवन निर्माण हेतु प्रोजेक्ट संख्या 0154 तैयार कर Upload किया गया। जिसकी निर्माण स्वीकृति, राज्य स्तरीय संवीक्षा समिति द्वारा 10 दिवस में दिनांक 19.04.2018 को जारी कर दी गई। यह त्वरित कार्य ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से ही संभव हो सका।

आभार:- धन्य है यह पावन धरा जिस पर भामाशाह श्री कन्हैयालाल मूँधडा का जन्म हुआ। जिसका लाभ स्थानीय क्षेत्र के सभी ग्रामवासियों को मिल रहा है। नापासर ग्राम के वासी एवं बीकानेर जिले के निवासी इन दानवीर भामाशाहों के प्रति सदा कृतज्ञ रहेंगे, बीकानेर एवं नापासर जनमानस में इनकी उदार, महामानव, दानदाता, पुण्यात्मा की छवि बसती है। युगों-युगों तक इनके दान की चर्चा जनमानस के जुबां पर रहेगी।

शिक्षा जगत के साथ ही स्वास्थ्य विभाग भी श्रीमती सी.एम. मूँधडा मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट का ऋणी रहेगा। श्री मूँधड़ा द्वारा बीकानेर जिले के पी.बी.एम हॉस्पिटल हेतु भी नवीन आधुनिक भवन का निर्माण करवाया जा रहा है।

सम्पर्ण शिक्षा जगत एवं स्वास्थ्य विभाग इनकी दीर्घायु होने की कामना करते हैं। राजस्थान की इस पावन धरा पर बार-बार ऐसी महान विभूतियों का आविर्भाव होता रहे ताकि जन कल्याण की भावना फलीभूत होती रहे।

प्रधानाचार्य
श्रीमती गीता देवी बागड़ी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय नापासर, बीकानेर (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-दिसम्बर 2021 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	RAVI ABUSARIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ABUSAR (211577)	JHUNJHUNU	900000
2	SATYA HEALTHCARE PVT LTD	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHIGARLA (215200)	CHURU	320000
3	BHAWANI SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RANSISAR (215351)	CHURU	280000
4	SHARMA VIJAY RAMGOPAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	200000
5	SHARWAN SINGH RAJPUROHIT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL VARKANA (221409)	PALI	170000
6	SHISH RAM SAHARAN	SHAHEED CHIMNA RAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL LOHASANA BARA (215417)	CHURU	162000
7	MANOJ LADHA	SON DEVI BANGUR GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL DIDWANA (219829)	NAGAUR	151000
8	RAKESH KASWAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	139000
9	OM PRAKASH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAGHELA (215199)	CHURU	115000
10	JAISHREE VERMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KALYANPURA PUROHITON (215315)	CHURU	110000

Rajasthan Education Department

11	DINESH KUMAR BAGRODIA	SHRI MANDI KAMETI GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DUNDLOD MANDI (216096)	JHUNJHUNU	100000
12	BHANWAR SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	100000
13	NAND KISHORE KHANDELWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KARANA (216365)	ALWAR	100000
14	OM PRAKASH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SABALPUR (220091)	NAGAUR	100000
15	ROOP DAN CHARAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KALYANPURA PUROHITON (215315)	CHURU	92000
16	RANJEET SINGH	GOVT. GIRLS UPPER PRIMARY SCHOOL REDI (474556)	CHURU	80000
17	ANIL KUMAR KALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHARNI SHRIMADHOPUR (219336)	SIKAR	78000
18	SHIVRAJ JAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TANKAWAS (221821)	AJMER	75500
19	SHIVAM MOTOR BODY BUILDERS	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	71000
20	SULTAN SINGH KHATI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL REDI BHURAWAS (211546)	CHURU	65000
21	YAKUB KHAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ANJUMAN SARDARSHAHAR (215356)	CHURU	62000
22	SURESH KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	61000
23	MALA RAM SHAHWAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HEERAWATI (213468)	NAGAUR	60000
24	MANILAL YADAV	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOTDA (214958)	BANSWARA	56100
25	HAR LAL GAINA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSUMDESAR (215570)	CHURU	55000
26	LAXMI MAURYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHEDI (222855)	RAJSAMAND	55000
27	PREMRAJ MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KESHARIYAWAD (224762)	PRATAPGARH	54710
28	SHISH RAM	GOVT. SECONDARY SCHOOL BADHAKI (412838)	CHURU	52500
29	LOKENDRA KUMAR GARG	GOVT. SECONDARY SCHOOL DHORALA (212782)	SAWAI MADHOPUR	51100
30	RITA BHATIA	SHAHID SHREE AMRARAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JAWLA (219563)	NAGAUR	51000
31	RATAN LAL	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL LALAS (473695)	NAGAUR	51000
32	MAHESH CHANDRA AMETA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL JHALLARA (223564)	UDAIPUR	51000
33	MEGHA RAM GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHADANG (211540)	CHURU	51000
34	JASWANT SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAJGARH (215272)	CHURU	51000
35	DINESH GODARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TOLIYASAR (215443)	CHURU	51000
36	RAMNARAYAN MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ITAWA (224446)	KOTA	51000
37	RAJESH KUMAR SHARMA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL SHERPUR (487494)	DHAULPUR	51000
38	SMT PREM POONIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL URIKA (215874)	JHUNJHUNU	51000
39	PRALAD RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NUWA (219802)	NAGAUR	51000
40	CHHANGA RAM SAINI	SMT. DURGA DEVI SETH HEERALAL GUPTA GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GYANPURA (216376)	ALWAR	51000
41	RANDHIR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
42	SANGEETA YADAV	GOVT. SECONDARY SCHOOL THEGDA (216800)	KOTA	50000
43	TILOK CHAND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	CHURU	50000
44	RADHEYSHYAM	GOVT. SECONDARY SCHOOL BALAL (474681)	CHURU	50000
45	RAY SINGH MAHALA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEWA KI DHANI (224964)	JHUNJHUNU	50000
46	KAVITA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MARJEEVI (224331)	CHITTAUR GARH	50000

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-दिसम्बर 2021 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	116	1774008
2	NAGAUR	113	986681
3	BANSWARA	120	300413
4	PALI	93	252462
5	JHUNJHUNU	76	225103
6	KOTA	231	178305
7	RAJSAMAND	86	148325
8	DHAULPUR	57	129012
9	CHITTAURGARH	54	119886
10	JAIPUR	84	113565
11	PRATAPGARH	77	109373
12	BUNDI	196	101238
13	KARAULI	10	85130
14	JHALAWAR	24	83911
15	SAWAIMADHOPUR	44	81101
16	ALWAR	79	80050
17	GANGANAGAR	17	78310
18	BARAN	27	74300
19	UDAIPUR	58	70854
20	BHILWARA	77	63138
21	SIKAR	76	62910
22	BARMER	103	53928
23	AJMER	101	47652
24	DUNGARPUR	30	43013
25	JAISALMER	10	40350
26	BIKANER	19	35702
27	JALOR	179	34754
28	BHARATPUR	71	29312
29	DAUSA	37	22430
30	JODHPUR	57	22250
31	TONK	24	18778
32	HANUMANGARH	13	15070
33	SIROHI	13	700
	Total	**2372**	**5482014**

जोधपुर

शहीद पेमाराम रा.उ.मा.वि. नानण, तह. पीपाड़ शहर को श्री भरत कुमार द्वारा विद्यार्थियों को कुल 351 स्वेटर भेंट जिसकी लागत 77,000 रुपये, श्री भंवर लाल सुथार द्वारा विद्यार्थियों को कुल 101 स्वेटर भेंट जिसकी लागत 22,000 रुपये।

श्री डूँगरगढ़

रा.मा.वि. नोसरिया में डॉ. सुरेन्द्र बेनीवाल वरिष्ठ कैंसर रोग विशेषज्ञ बीकानेर द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से डिजिटल कक्षा कक्ष निर्माण करवाया गया साथ में डिजिटल बोर्ड एवं कम्प्यूटर विद्यालय को भेंट किया, श्री किशन लाल प्रजापत से कक्षा 1 व 2 को खेल-खेल में एवं गतिविधि आधारित शिक्षण के द्वारा पढ़ाने के उद्देश्य से आधुनिक साज-सज्जायुक्त, दीवारों पर शिक्षण सामग्री अंकन एवं खिलौने इत्यादि के लिए 1,00,000 रुपये का आर्थिक सहयोग, श्री किशनाराम सारण ने बालिका टॉयलेट की मरम्मत एवं दरवाजे के निर्माण के लिए 21,000 रुपये का सहयोग दिया, श्री हजारी मल बाना (प्रधानाध्यापक) शाला कार्यालय की सुसज्जा व ग्रीन मैट शाला को उपलब्ध करवाई जिसकी लागत 21,000 रुपये, श्री किशन लाल सोनी द्वारा जूता स्टैण्ड का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 11,500 रुपये, श्री बजरंग सिंह राठौड़ द्वारा कार्यालय में आगन्तुकों एवं स्टाफ के बैठने के लिए सौफा फर्नीचर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री हनुमान राम प्रजापत द्वारा विद्यालय में रंग-पुट्टी एवं दरवाजों तथा खिड़कियों के लिए पर्दे क्रय किया गया

हमारे भामाशाह

जिसकी कुल लागत 11,000 रुपये, श्री कुंभाराम प्रजापत द्वारा पेयजल समस्या के निवारण के लिए 1 HP की पानी की मोटर एवं पेयजल की सुचारू व्यवस्था की जिसकी लागत 6,600 रुपये, श्री मनोज कुमार (शा.शि.) से टॉयलेट के गेट का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री रामरतन झाझड़िया से 3 छत पंखे प्राप्त हुए जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री कालूराम ज्याणी द्वारा शिक्षण कार्य हेतु लैक्चर स्टैण्ड का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्री कुंभाराम गोदारा द्वारा भौतिक संसाधन विकास हेतु 5,100 रुपये प्राप्त हुए, ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से विद्यालय स्टाफ द्वारा किया गया योगदान। श्री बाबूलाल से 11,000 रुपये, जीवनराम मेघवाल से 11,000 रुपये, श्री दलीप कुमार से 5,100 रुपये, श्री करणाराम से 5,100 रुपये, श्री ओम प्रकाश गोदारा से 5,100 रुपये, चेतन राम गोदारा से 11,000 रुपये, श्री सुरेश कुमार से 5,100 रुपये, श्री हजारीमल से 21,000 रुपये, श्री रामरतन झाझड़िया से 5,100 रुपये प्राप्त, श्री मनोज कुमार रंगा से 5,100 रुपये, अन्य स्टाफ से 15,000 रुपये प्राप्त हुए। उपर्युक्त सूची के अनुसार उक्त राशि का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक बेल, इन्वर्टर, कार्यालय एवं स्टाफ रूम के लिए मैट, छात्राओं के लिए टॉयलेट गेट का निर्माण, छत पंखे, छत पर टाइल्स, पेयजल के लिए 15 नल एवं पानी की टंकी, बालिका टॉयलेट्स में फव्वारे इत्यादि के लिए किया गया।

संकलन : प्रकाशन सहायक

Rajasthan Education Department

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2021

गणतंत्र दिवस-2022 निदेशालय परिसर

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2022 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

शिक्षा विभागीय (राज्य स्तरीय) मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2021

आयोजन दिनांक- 02 जनवरी, 2022

आयोजन स्थल- वेटेरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर (राज.)

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय डॉ. बी.डी.कल्ला एवं माननीय निदेशक महोदय श्री काना राम के कर कमलों से सम्मानित कर्मचारीवृंद

श्री वरेश भारद्वाज अजमेर, श्री रविशंकर आचार्य बीकानेर, श्री नारायण धोबी बीकानेर, श्री दिनेश कुमार रावत बीकानेर, श्री शिवराज आचार्य भीलवाड़ा, श्री विजय कुमार ओझा बीकानेर, श्री मुरारी लाल शर्मा जयपुर, श्री दीपक कुमार शर्मा जयपुर, श्री संजय कुमार शर्मा टोंक, श्री आशु सिंह, राजसमंद, श्रीमती गीता हनुमानगढ़, श्री महेश कुमार सोनी अलवर, श्री राकेश सुखवाल चित्तौड़गढ़, श्री निरंजन शर्मा हनुमानगढ़, श्री नोपाराम मीणा सिरोही, श्री गोवर्धन लाल हरिजन चित्तौड़गढ़, श्री मुकेश कुमार गुप्ता भरतपुर, श्री ईश्वर चन्द्र पंचोली अजमेर, श्री श्रीधर गोपाल पाली, श्री महेन्द्र सिंह हनुमानगढ़, श्री विजेश राव मराठा चित्तौड़गढ़, श्री कोमल सिंह मथुरिया भरतपुर, श्री संजय गुप्ता चूरू, श्री मनीष कुमार शर्मा कोटा, श्रीमती जयवन्ती देवी हनुमानगढ़, श्री रोशन लाल सैनी अलवर, श्री अशोक कुमार दाधीच कोटा, श्री रामचरण परिहार जोधपुर, श्री पीराराम शर्मा बाड़मेर, श्री महेश कुमार सैन, सिरोही, श्री मुन्नालाल वर्मा बूंदी, श्री रणवीर सिंह निमड़ चूरू, श्री कमल नयन मीणा बूंदी, श्री खेमचन्द कश्यप करौली, श्री रघुवीर स्वामी चूरू, श्री दुर्गा शंकर गणेश्वर चूरू, श्री ओम प्रकाश सारड़ा जोधपुर, श्री अविनाश कुमार सवाई माधोपुर, श्री बाबूलाल रेगर बाड़मेर एवं श्री जीवन सिंह पाली।